॥ श्रीः ॥

निम्बार्क प्रभा।

बरसाना निवासी श्रीहंसदासजी

द्वारा विरचित

जिसको

भागवत भूषण पं० श्रीकेशवदेवजी

की प्रेरणासे बरसाना निबासी

श्री रणछोडदासजी के शिष्य परम

भागवत गंगाबक्स डाक्टर

की इच्छा और द्रव्य की

सहायता से छपा

बाबू किशनलाल के बम्बईभूषण प्रेस मथुरा में छापी

संवत. १९७९

श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः।

श्रीनिम्बार्क प्रभा लिख्यते।

जय श्रीराधे

❋ दोहा ❋

श्री हंस चरण शिर धारके, पुनि सनकादक चार।
नारद पद बन्दन करौं, अभिमत फल दातार॥
श्रीनिम्बार्क भगवान पुनि, श्रीनिवास भगवान।
तिन पद रज बन्दन करौं; कर आदर सन्मान॥
श्रीराधा निज स्वामिनी, कृष्ण स्वामि सुख मूल।
तिन पद पंकज बन्दिहौं, मिटैं सकल भवशूल॥
श्रीगुरु गोपालके दासकी, पद पराग उरधार।
अभिप्राय निज चित्तको; कहौं शास्त्र अनुसार॥
श्रीराधा हरिके पद कमल, भजन योग्य अति सार।
तिनते प्रगटी सम्पदा, भव दुख नाशक चार॥
रमा रुद्र परमेष्ठी, और सनकादिक चार।
इनके आश्रित जे नहीं, ते पृथ्वी के भार॥
जन्म कर्म हरिके प्रगट; नवधा भक्ति प्रधान।

फल रूपी प्रेमा परा, धर्म भागवत जान ॥
यह आशय सम्प्रदायको, भगवत पदकी प्रीत।
तापर चढ उतरे केतेक, भव जलनिधि को स्रोत ॥
हरिने चारों को दिये, औत्पत्तिक अधिकार।
न्यारी न्यारी शक्ति से, जान लेव निर्धार ॥
हरि मुख में जो सरस्वती; शक्ति परम सुखसार।
सृष्टि हेत विधि को दई, रच्यो सकल संसार ॥
शक्ति योग मायाकी जो, हरि नेत्रन के माहिं।
नाश हेत सब जग तके, शिवको दीनी ताहि ॥
हृदय कमल हरिमें बसे, कृपा शक्ति सुखधाम।
लक्ष्मीजी को सो दई; विश्व के पालन काम ॥
भक्ति शक्ति हरि चरण में; बसै निरन्तर जोय।
जीवनके भव मोक्षको, सनकादिक लई सोय ॥
पुनि ये चारों जीवको, हरि चरणन में प्रीति।
दे निस्तारे जगत से, परम कृपाल विनीति ॥
श्रीरामानुज श्रीजी पद्धति, विष्णु स्वामि त्रिपुरार।
निम्बार्क सनकादिके; माध्व के गुरू मुख चार ॥
इनके शिष्य प्रशिष्य सब, जग उद्धारण हेत।
लीला वपु प्रगट करें, भक्ति सबहि को देत ॥

१ विष्णु को पालन श्रीलक्ष्मी के द्वारा है।

संत महंत अरु भक्त जन इनके अमित अपार।
तिन सब पद बन्दन करौं, मो जीवन आधार॥
श्री नाभाजी जो कही, भक्तन की रस माल।
सो मो प्राण संजीवनी, बन्दनीय तिहुँकाल॥
भये होंयगे अब जोहैं, जे जे हरिके दास।
तिन पद त्राणकी धूर सो, मेरी पुजवें आस॥
भक्तन की कछु प्रेरणा, कुछ मनमें भयो हुलास।
हंस वंश प्रणालिका, मैं हूं कियो विकास।
वृक्षके पल्लव छुये ते, सबको होय स्पर्श।
थोड़े हू यश वरणते, सकल करो परामर्श॥
सन्तन महिमा उदधिको, शेष न पायो पार।
मैं पिपीलका तुच्छ सो, का विधि उतरौं पार॥
भाषा सरल पुन वार्तिक, सबको होय सुगम्य।
निम्बार्क प्रभा हंस दास कृत, सज्जन कर्ण सुरम्य॥

श्री निम्बार्क सम्प्रदायके आद्याचार्य चतुर्व्यूह चार हैं; श्रीकृष्ण भगवान, श्रीहंस भगवान, श्रीअनिरुद्ध भगवान, श्रीनिम्बार्क भगवान तिनके प्रमाण श्रीमद्भागवत के ११ एकादश स्कंद में श्री उद्धवजीसे भगवान कृष्ण ने कह्यो—

श्लोकः—एतावानयोगादिष्टोमच्छिष्यैःसनकादिभिः
सर्वतःमन आकृष्य मय्यद्धा वेशते यथा॥

अर्थ—इतनों हीं योग मैंने अपने शिष्य सनकादिकन को सिखायो कि चारों ओर से मन खेंचके साक्षात मोमें प्रवेश करै, यह श्रीकृष्णकी आचार्यता । तहांही हंस भगवान ने सनकादिकन से कही—

श्लोक—जानीत मागतं यज्ञं युष्मद्धर्म विवक्षया ॥

अर्थ—हे ब्राह्मणों यह सांख्य योगको गुह्य तुमसे कह्यो साक्षात यज्ञ भगवान मोको आयो जानो तुम्हारे धर्म कहवे के लिये, अनिरुद्धचतुर्व्यूह में श्रीनिम्बार्क भगवान को स्वरूप है उनकी आचार्यता को प्रमाण विदुरउद्धव के सम्वाद तृतीय स्कन्द में—

श्लोकः—कच्चिदास्ते भगवान सुखं वायः ।
सात्वतां कामदुघोनिरुद्धः ॥

अर्थ—विदुरजी बोले हे उद्धव ! भगवान अनिरुद्ध तो सुखी है जो सात्वत नाम भक्तन को काम दुहवे वारे अर्थात् तुम कुमार सांख्यायन वृहस्पति उद्धवादिकनको परम्परा पर्याय करके काम, नाम, मन्त्रके दाता । निंबार्क भगवान की आद्याचार्यता श्रीव्यासजीने कही—

श्लोकः-सर्वाण्यौदयिकी ग्राह्या कुले तिथिरुपोषणे।
निंबार्को भगवान् येषां वाञ्छितार्थ फलप्रदः॥

अर्थ—उपवास की तिथि में उनके कुलमें उदयव्यापिनी तिथि ग्रहण करवे योग्य है जिनके निंबार्क भगवान वाञ्छितार्थ फलके दाता हैं—

श्रीहंस भगवानके नाम से यह संप्रदाय प्रसिद्ध भयी ताको वृत्तान्त लिखे हैं जब श्रीकृष्णने उद्धव जीसे कही कि मैंने अपने चेला सनकादिकनको इतनो योग सिखायो तब उद्धवजी बोले कि सनकादिक प्राचीन कालके सब देवता ऋषि मुनियोंके पहले भये आपको अब वसुदेवजीके घरमें प्रागट्य है कौन रूप से उनको उपदेश कियो तब भगवान बोले कि हिरण्य गर्भ जो ब्रह्मा तिनके मनसे उत्पन्न भये साक्षात तपो मूर्ति सनकादिक योगकी सूक्ष्म एकान्त गति अपने बाप से पूंछते भये कि विषय चित्तमें प्रवेश होयहै और चित्त विषयमें प्रवेश होय है इनको परस्पर त्याग कैसे होय यह जब पूछी तब ब्रह्मा महादेव भी स्वयंभूसब भूतनके पालन करने वाले भी ध्यान भी कियो पर प्रश्न के बीज को नहीं जानते भये काहे से कि सृष्टि आदि कर्ममें बुद्धि लगी तब प्रश्न को पारलगवेकी इच्छासे मोको चिन्तवन करते भये,

तब मैं हंस रूप से उनके लिये प्रगट भयो सोई सनत्कुमार आगममें लिखो है ॥ ऊर्ज्जेसितेनवम्यांवै हंसोजातोस्वयं हरिः ॥ अर्थ । कार्तिक महीनाकी शुक्ल नवमीको हंस भगवान स्वयं हरि प्रगट भये ॥ शुद्ध दिव्यस्फटिक मणि तैसी श्रीअंग की कान्ति भूषण वस्त्र धारण किये चार भुजा पक्षोंसे अलंकृत तत्व अतत्वसोई दूध और जलताके विवेचन मेंबड़े चतुर कृपा समुद्रमाधो शोभा देते भये तब सनकादिक मेरे पास आय के चरणोंमें दण्डवत करी फिर ब्रह्माजी को आगे करके पूछते भयेकि तुम कौन हो तब उनको प्रश्न खन्डन करत उनको उत्तर मैं देतो भयो कि तुम कौन हो यह तुमने कौन से पूछो मैं कौन पक्षको आश्रय लेके तुमको उत्तर देव जो तुम आत्माके विषय पूछो तौ आत्मा सच्चिदानन्द सब शरीर में एक रस एक प्रकारको है नाना प्रकार को नहीं तामें यह प्रश्न घटै नहीं पंचभूतात्मक शरीर में यह प्रश्न बने नहीं कि सब शरीर एक द्रव्य नाश मानके है यद्यपि हंसभगवानको श्रीअंगपंच भौतिक मायक नहीं है दिव्य अप्राकृत है तथापि लोकव्योहारसे बोले ईश्वर पक्षमें यह पूछनो असंभव है एक ही ईश्वर तदात्मक सब जगत है हे प्रजा विषय

चित्तमें प्रवेश होय चित्त विषय में प्रवेश होय जीव की दो देह चित्त विषय सब मायक हैं वारम्वार सेवन करवे से चित्त विषय में जाय विषय चित्तसे उत्पन्न होय है जीव मेरो स्वरूप चैतन्य है चित्त विषय दोनोंको त्याग करै जाग्रत स्वप्नसुषुप्तियेसत्वादिक गुण से बुद्धिकी वृत्ति हैं जीव विलक्षण इन को साक्षी है हे विप्रो मैंने सांख्य योग को गुह्य अभिप्राय तुम से कह्यो साक्षात हंसभगवानमोको आये जानौ धर्म जो भक्ति कहिवेको तुम्हारे पास में आयो ऐसे सनकादिनको उपदेश करके उनकी प्रार्थना से ज्ञान भक्ति रहस्य विज्ञान शरणागति अष्टादशाक्षर मन्त्र तिनको उपदेश करके ब्रह्माजी ने बहुत सत्कार कियो आप अन्तर्ध्यान होते भये सोई विष्णुयामलमें लिखो है ॥

॥ श्लोक ॥

विष्णुयामले नारायण मुखा भोजान्मंत्र स्त्वष्टादशाक्षरः आविर्भूतंकुमारै स्तु गृहीत्वा नारदायवै ॥ उपदिष्टः स्वशिष्याय निम्बा र्कायच्चतेनतु ॥

अर्थ-श्रीनारायणके मुख कमलसे अठारह अक्षर मन्त्र प्रगट भयो सनकादिकननें ग्रहण कियो तिन ने नारदजी को उपदेश कियो उनसे निम्बार्क भग-

नोंने पायो ऐसे परंपरा से यह मंत्र प्राप्त भयो नारदजी के अवतार से भी श्रीमद्भागवत में प्रमाण है।

❀ श्लोक ❀

तृतीयं ऋषिसर्गत्वदेव ऋषित्वमुपेत्यसः।
तंत्रसात्वतं माचष्टनैष्कर्म्यं कर्मणांयतः ॥

अर्थ—तीसरे अवतारमें ऋषि सर्गमें प्राप्त होके देव ऋषि अर्थात नारद होते भये सात्वततंत्र नाम नारद पंच रात्र कहते भये जासें कर्मोंका निष्कर्मता होजाय अगहन महीनाकी शुक्ल द्वादशीमें ब्रह्माजी की गोदसे नारदजी प्रगट भये कातिक महीनाकी शुक्ल अष्टमी नौमीको आसनकादिक भगवान प्रगटे सोई श्रीमद्भागवत में प्रमाण है॥

❀ श्लोक ❀

सएव प्रथमंदेवकोमारं सर्गमास्थितः ॥
चचारदुश्चरं ब्रह्म ब्रह्मचर्य मखण्डितं ॥

अर्थ—सो जो नारायण भगवान देवको मार सर्ग में स्थित भये वे ब्राह्मण अखण्डित जो कोई पै न होय दुश्चर ब्रह्मचर्य आचरण करते भये। तिनसे नारदजीने प्रार्थना करी तब जो हंसभगवान से सुन्यो जो मन्त्रराज गोपाल विषय के जो मन्त्र

तिन तें तिस पहिले मंत्रों में उत्तम मंत्र उपदेश कर-ते भये यह सनातन ब्रह्म विद्या है और भी भूमि विद्या, आत्म विद्या, उपदेश करके कृतकृत्य कर देते भये इति यह २ आचार्य हंस सनक नारद को चरित्र भयो अब श्री निम्बार्क भगवान को चरित्र लिखे हैं जब जब धर्म की हानि अर्थात् भगवद्भक्ति की न्यूनता जाते होय सो कारण फैले काहे से कि धर्म नाम भक्ति ही को है एकादशस्कन्द में भगवान नें कह्यो कि धर्मोमद्भक्तिं कृतप्रोक्तः अर्थ धर्म मेरी भक्ति करनो कह्यो है और अधर्म करवे वाले असुर दुष्ट अर्थात् भक्ति के बाधक जगतमें फैल जावैं तब भगवत अवतार होय है और जो भगवत अवतार को समय न होय तौ भक्ति प्रवर्तक आचार्य प्रगट होके कार्य को समाधान करैं हैं श्रीसुदर्शन भगवान जो श्रीनारायण भगवान के हस्त कमलमें विराजें चक्र रूपसे वेई साक्षात् श्रीनिम्बार्क रूपसे प्रगट होके श्रीसनक नारद संतति में आचार्य सम्प्रदाय के होते भये यद्यपि सुदर्शन भगवान को सर्वदा आज्ञा है कि जब कोई दुष्ट मेरे भक्त को दुख देवै तब आप रक्षा करौ अम्बरीष की दुर्वासा से रक्षा करी यह प्रसिद्ध हैं तासे सदा जगतमें व्यापक

होके विराजै हैं और जब भगवान अवतार लेके आवैं तब उनके साथ लीलामें सहायता करवेको अवश्यही प्रगट होयें अपनी इच्छासे अनेक रूप धारण करके ऐश्वर्य माधुर्य सब लीलाको अनुभव करैं और अपनी योग्यता से सहायता देवैं भगवत अंगमें भूषण आयुध रूप होके विराजे सच्चिदानन्द विग्रहकी माधुरी अनुभव करैं गोचारण में सखा रूप महलों में सखी रूप ऐसे सब लीलाओं को अनुभव करके सुख लूटैं और कल्प कल्प में अवतार लेय एक समय शौनकादिक अठासी हजार मुनियों को चिन्ता भयी कि हम कहां बैठ के भजन करैं वे ब्रह्मा जी से प्रार्थना करते भये कि हमको महाराज स्थान बतावो ब्रह्मा जीने श्रीकृष्ण महाराज से विनय करी तब भगवानने ब्रह्मा के हृदय में चक्र महाराज को प्रेरणा करी सो ब्रह्मा जी के मनोमयी चक्र की नेमि नैमिषारण्य में गड जाती भयी ताही स्थलमें वे ऋषि भजन करते भये तहां चक्र तीर्थ है श्रीनिम्बार्क भगवान सर्वदा विराजे हैं जब श्रीद्वारिका में लीला को प्रगट प्रकाश रह्यो तब काशीराजाके बेटाने अपने मरे भये बापके बदलो चुकायवेको श्री शिव

जी को प्रसन्न करके द्वारिका भस्म करदेवेको सुद-
लिए अग्नि श्री कृष्ण पर चलाई महाराज कृष्ण
सभामें चौपड खेल रहे पास में सुदर्शन भगवान
विराजे तिनको आज्ञा करी कि द्वारिका वासी मनु-
ष्य पशु पक्षी काहे से व्याकुल हैं और अग्नि
प्रज्वलित वृक्षलता को भस्म करती चली आवैहै
यहांका उपद्रव है आप देखो तौ सही तब सुदर्शन
भगवान अग्नि को आचमन कर काशी मात्रको
भस्म कर देते भये ऐसी प्रतीति भयी कि श्री शि-
वजी के लोटवेको भस्मि थोडी रहगई सो विशेष
कर देते भये अवतारी सुदर्शन भगवान अवतार
श्रीनिम्बार्क भगवान चक्र ताप प्रतिबिम्ब श्रीरंग-
देवी जी आकृति श्रीनारायण के कर कमल में
चक्र रूप से विराजै सखावों में तोक कृष्ण कृष्ण
के हाथ में लकुटी सखियों में रंगदेवी श्रीराधाके
अंग की कान्ति गायनमें धूसर गौ चतुर्व्यूहमें अनि-
रुद्ध इतने आपके रूप हैं या कल्पमें तैलंग देश में
श्रीअरुण ऋषि भृगु वंशी महाराज के घरमें जयः-
न्ती माता से प्रगट होते भये पहिले कल्प में इनको
नाम हविर्द्धानरह्यो कोई कल्प में श्रीगिरराजमहारा-
ज के निकट निम्ब ग्राम में प्रगट भये अवजन्म

को नाम नियमानन्द है पांच वर्षकी अवस्था में ब्रह्मा जी परीक्षालेवैको आये सन्यासी रूप ग्रहण करके जयन्ती माता से मिले माता ने भोजन को आग्रह कियो संध्या होगयी सन्यास मत के अनुसार ब्रह्मा जीने भोजन अंगीकार नहीं कियो तब सुदर्शन भगवानने निम्बपर सूर्य दिखाय दिये ब्रह्मा जीने भोजन किये ता पीछे चार घडी प्रायः रात व्यतीत भयी तब ब्रह्माजीने श्रीनिम्बार्क नाम धरो नर्वदा नदी में आप स्नान करने गये एक बडे शरीर को कछुवा चरण स्पर्श करके ऋषि हो निर्वाण पद को प्राप्त भयो एक शैव वादी आपसे शास्त्रार्थ करवेको आयो कोइ पातिकसे दूषित जानके तासे आपको संभाषण करवेकी इच्छा न भई तब गूलरके फल को चरण की ठोकरमें से ऋषि बनाय दियो तिन औदम्बर ऋषि ने वादी जीत्यो इनको प्रणीत औदम्बर संहिता है ॥ यह निम्बार्कको अवतार केवल भगवत प्रेम प्रवृत करवेको निवृत्त मार्ग को सूधा रस्ता जीवोंको दिखायवेको अज्ञान रूपी अंधेरे में जो पडोसिन को सूर्य की तरह ज्ञान को उजेराकरवेको वेदशास्त्र श्रुतिस्मृति में जो अविरुद्धमत ताके प्रकाश करवे को संसार

वासना स्वर्ग वासना काम कर्म वासना मोक्ष वासना इन सबको हृदय से निकार के श्री राधा कृष्ण के चरण कमल की भक्ति में अनन्य चित्त होके सोई उपाय सोई उपेय सोई साधन सोई साध्य सब पुरुषार्थ को शिरोमणि जानके अखंड दन्डायमान चित्तकी वृत्ति तुमी रहै यही वासना हृदयमें धरवेको प्रगट भयो है ताहीके लिये दशश्लोकी वेदराधान्तमें पांच अर्थ निर्णय किये उपासिक अर्थात् जीवको स्वरूप उपास्य श्रीराधाकृष्णको स्वरूप कृपाको फल भक्तिको रस उनकी प्राप्तिमें विरोधी तिनको स्वरूप भजन करवे वाले को इत्नी बातें जाननी चाहिये दशश्लोकी पर वेदान्त कामधेनु मंजूषा रत्नांजलि अनेक टीका हैं श्री निम्बार्क भगवान के मतमें शान्त दास्य सख्य वात्सल्य शृंङ्गार पांचों रसकी उपासना है जो जैसो अधिकारी ताको तैसोही उपदेश है श्रवण कीर्त्तनादिक नवधा साधन भक्ति प्रेम विशेष फलरूप यह पुरुषार्थ है ताको साधन भागवत भगवत कृपा है सो कृपा दैन्यादि गुणन से युक्त पुरुष पर होयहै शान्तदिक पांचों रस पहिले सनकादिकनके हृदय में आये फिरशिष्यों के द्वारा प्रगट भये ताको प्रमाण लिखै है श्री भाग

वर्त्ते तृतीय स्कन्दे तस्यारविन्दनयनस्य पदारविन्द किञ्जल्क मिश्र तुलसी मकरन्दवायुः ॥ अन्तर्गतः स्व विवरेण चकार तेषां संक्षोभमक्षर जुषामपि चित्त तन्वोः ॥ व्याख्या ॥ कृष्णस्य दक्षिणे पादे ऽङ्गुष्ठ-मूल तलेऽङ्किते ॥ रेखात्मकाऽरविन्द स्था तुलसी हरिवद्रसः ॥ २ ॥ दैन्येन स्तन रागाभ्यां लालयन्ती स्वरं प्रति ॥ सापत्न्येन सपत्नीश्चो जहर्ष कमलालय । कुङ्कुम कञ्ज संश्लिष्ट किञ्जल्कत्वेन संस्थितम् ॥ पत्स्तनराग सापत्न्ये मिश्रं यत्तुलसीमधू ॥ ३ ॥ तद्वायुपञ्चमस्तत्र गन्धवद्दूरसे संग्रहः ॥ ४ ॥ तत्र ज्ञानैकगम्य त्वात्पदः संसर्गतोरसः ॥ ५ ॥ ज्ञानैक गम्य विज्ञानं भिन्न बच्छान्त्वमन्व भूत ॥ ५ ॥ दैन्या नुवर्तित्वेन कृष्णस्य पादजोषणे ॥ संसर्गेण र-सोयश्च दैन्यैकसाध्य दास्यता ॥ ६ ॥ किञ्जल्कत्वो त्माक्षितस्य कुंकुमस्य पदाब्जके ॥ संलालन स्वरूप त्वात् कृपानुभावतास्य च ॥ ७ ॥ संसर्गस्य रसस्येतो रंगस्य लाल नात्मनः ॥ कृपैकसाध्य वात्सल्यस्य तथा स्वादो विभिद्यते ॥ ८ ॥ हरेर्वृन्दा प्रियास्तोत्याश्च सजन्यतयास्य च ॥ सापत्न्यस्य समेऽङ्गित्वात् संसर्गोत्थरसस्य तु ॥ विश्वास साध्य सख्यत्वेना स्वादोऽभिद्यताङ्गवत्तु ॥ तुलसी गन्ध हारित्वात्

कामातस्य नमस्वँतः । संसर्गेण रसस्यात्र कामे ऽग्युञ्जलता पृथक् ॥ १० ॥ इत्यङ्घ्रि कुचकुकुमसापत्न्य वायवः क्रमात् ॥ शान्तादिकरसानांते निदानं पञ्चकस्यहं ॥ ११ ॥ तुलसी भक्ति रेवात्र अँत्युक्त रसरूपिणी ॥ वृन्दाभक्ति प्रिया शक्ति सर्व जंतु प्रकाशिनी इतिश्रुतेः १२

॥ व्याख्या भाषा ॥

श्रीमद्भागवत तृतीयस्कन्द में जब सनकादिक वैकुन्ठ में गये श्री नारायण कमल नयन के चरण कमल के पराग की मिली तुलसी मकरन्द की वायु अपने विवर अर्थात् नासिका द्वारा सनकादिकन के हृदय में आई अक्षर सेवी नाम निर्गुण नैष्ठा वारिन के चित्त में शरीर में क्षोभ करती भयी प्रेमके आठों सात्विक उदय होते भये ॥ १ ॥ व्याख्या श्री कृष्ण के दहिने चरण के अँगूठा के मूल में कमल की रेखा, तामें चढी तुलसी हरि की तरह रस रूप है २ दैन्य से लक्ष्मी जी ने चरण स्तन पर धरे और फिर कुच कुंकम से चरण को लालन कियो वाही कमल स्थान में सपत्नी लक्ष्मी के साथ तुलसी सख्य से रहे ॥ ३ ॥ कुंकुम कमल से मिल्यो सो किन्जल्क है चरण स्तन राग (कुंकुम) इनसे मिली तुलसी ताकी वायु पांच

रस की भरी है ॥ ४ ॥ तामें चरणज्ञान : से जानी जाय है सो चरण की सुगन्धि जो तुलसी जी में मिलके सनकादिकन के हृदय में पहुँची सो शान्त रस अनुभव करावती भयी ॥ ५ ॥ लक्ष्मी जी ने दास्यता के दैन्य से चरण स्तन पर धरे सो स्तन की सुगन्धि नें दास्य रस अनुभव करायो ॥ ६ ॥ कुच कुंकुम से चरण लालन कियो कुंकुम की सुगन्धि सोई किञ्जल्क लालन रूप कृपा ताके ससग सें वात्सल्य रसको स्वाद भेद पावतो भयो ८ वृन्दा हरि की प्यारी ताके आश्वास से और सपत्नी लक्ष्मी ताके संग विराजवे से बिश्वास करके साध्य सख्य रस अनुभव होतो भयो ॥ ६ ॥ तुलसी की सुगन्धि ताकी उडावन वारी काम भरी वायु सो सनकादिकन के हृदय में पहुँची तो उज्ज्व ल रस अनुभव करावती भयी ॥ १० ॥ या प्रकार चरण कुच कुंकुम सापत्न्य वायु इनसे क्रम करके शान्तादिक पांच रसों का बीज सनकादिकन के हृदय में आपके शिष्यों के द्वारा प्रगट भयो । ११ ॥ श्रुति की उक्ति से तुलसी हरि स्वरूपिणी है वृन्दा भक्ति प्यारी शक्ति सब जीव जन्तु की प्रकाश करन बारी है यह श्रुति है ॥ १२ ॥ इन पांचों रस

में प्रमाण रत्नाञ्जलि की भाषा में बहुत दिखाये हैं दिशामात्र यामें भी देखो तृतीयस्कन्द में कपिल देवजी ने अपनी माता देवहूति जी से कही। येषा महम प्रियात्मा सुतश्च सखा गुरु सुहृदो दैवमिष्टं।

अर्थ-हे माता जिनको में प्यारो कान्त शृंगार रस वारेनको आत्मा शान्त रस वारेन को बेटा वात्सल्य रस वारेन को सखा सुहृदसख्य रस वारेन को गुरू देव इष्ट दास्य वारिन को।

श्री निम्बार्क भगवान कौन रूप से कौन लीला करें हैं सो लिखें हैं सुदर्शन रूप से श्रीकृष्ण महाराज के कर कमल में बिराजमान होके पार्षदों की तरह सेवा करें चक्र रूप होके जो भक्तों से बैर करें उनको दन्ड देके रक्षा करें सोई अंबरीष चरित्र में प्रसिद्ध है जब दुर्वासाजी चक्रकी तापसे बहुत पीडित भये और ब्रह्मा महादेव नारायण पर्यन्त उनका दुख दूर न कर सके और निरासता को उत्तर देदेते भये तब अम्बरीष की ही शरण जानो पडो अम्बरीषजी ने दुर्वासाजी के बचायवे को चक्र महाराज की बड़ी स्तुति करी परतापकी किरणठंढी न भयी तब अंबरीषजी ने सुकृत दान पुन्य यज्ञ तप वृतादिक सब लगाय दिये तब भी

ठंढे न भये फिर अंबरीषजी ने सोगन्द दिवाई कि जो हमारो कुल ब्रह्मण्य देव होय तो आप सीतल होजाके तब भी न माने जब यह सोगन्द दिवाई कि हमारो कुल हरिभक्त व वैष्णव सेवी होयतो आप सीतल होजावो तब किरण ठंढी भयी तासे आपको वैष्णव अति प्यारे है सोई लघुस्तव राजमें लिख्यो है॥

श्लोक-वैश्मवैश्लाघनीयश्च वैष्णवानांप्रियंकरः।
वैष्णव प्रियसर्वार्थो वैष्णवैक परायणः॥

अर्थ—वैष्णवों करके बडाई करवे योग्य वैष्णवों के प्यार करवे वारे सब आपको अर्थ वैष्णवों के प्यार लिये है वैष्णवही परम आश्रय रूप जिनके अथवा वैष्णवों के परम आश्रय रूप आप हैं भूमांपुरुष के रस्ता में गहन अन्धकार के कारण से श्रीकृष्ण महाराज के रथ के घोडों की दृष्टि कम होगयी तब कोटि सूर्य समान प्रकाश वारे चक्र महाराज ने उजेरा किया आचार्य रूप से वेद उपनिषदको निर्णय सिद्धान्त प्रगट करते भये कोई अभेद की श्रुतियों को खन्डन करके केवल भेद प्रत्पादन करैं कोई अभेद की श्रुतियों को प्रबल बताय के भेद की श्रुतियों को निर्बल बतावैं स्वामी का मत दोनों

भेदा भेद को प्रतपादन करबे बारो है स्वरूप से जीव ईश्वर में भेद है पर जीव ईश्वर के आधीन है नियम्य है ईश्वरात्मकहै भगवदंश चिदानन्द हैं तासे अभेद है और यह जीव को हरि आधीन होनो सब काल वद्ध मुक्त अवस्था में है जो जाके आधीन होय तदात्मक होय सो तासे न्यारो नहीं होय प्राण विना इन्द्री कुछ नहीं कर सकैं जीव विन देह चेतन नहीं होयतो उनको अभेद ही है श्रीनिम्बार्क भगवान के मतकी श्री वेद व्यासजी प्रशंसा करै हैं और उनको भगवत्ताको शद्वादियो आप नैष्ठिक ब्रह्मचारी मथुरा मन्डल द्वारावती नैमिषारण्य सुदर्शनतीर्थ इन चार धाम में विशेष वास करते भये श्रीराधा कृष्णही साकार परब्रह्म इनसे परे कुछ नहीं है निराकार ब्रह्म सो भी आपके अंगको तेज है यह आपको मत है या मतके प्रतपादक अनेक वेदान्त के ग्रन्थ सम्प्रदायी आचार्यों के मन्जूषा जान्हवी सूत्रों पर भाष्य विद्वत कामधेनु आदिक हैं अध्यास्य गिरिवज्र एक ऐसा ग्रन्थ है कि महा विद्वानों की सभा में कौतूहल को दाता है सब प्रमाणों की भी प्रमाण श्रीमद्गीताजी में श्री मुखसे आपने ही कही ॥

श्लोक-मत्तः परतरं किंचित् नान्यदस्ति धनंजयः ॥
मयिसर्व मिदं प्रोतं सूत्रेमणि गणाइव ॥

अर्थ—मेरे से परतर हे धनंजय अर्जुन और कुछ नहीं है सूत्रमें जैसे मणियां पोय होये तैसे यह सब विश्वमोमे पोयो भयो है वैष्णव धर्म ही आपको सर्वस्व है हरिभक्ति ही परम पुरुषार्थ है हरि भक्त वैष्णवही आपको परम प्यारे हैं। सखा रूप से आप श्रीकृष्ण महाराज के संग गैया चरायवे जावैं और नाना प्रकार की हास विलास की लीला करैं फूल पल्लव तवकादिकनको शृंगार वनायके पहिरावैं फूल फल लायके भोग लगावें कदम के नीचे फूलन की शय्या विछाय श्री कृष्ण महाराज को शयन कराय के पाद सेवन करैं लकुटी रूप से श्री कृष्ण महाराज के हाथ में विराजमान होके सब गैय्या घेर लावैं जब महाराज वंशी बजायवे को त्रिभंग ललित वायें ओर झुके कटि की भार लकुट पर धरके ठाडे होयतो उनको अंग को सहारो लगावै धूसर गैया होके जब श्री कृष्ण के पास ठाडे होय तब आप पीताम्बर और हाथ से अंग की धूर झारे पीठ पोंछे तव आंसू भरे नेत्रन से दर्शन कर अंगको चाटे श्री रंगदेवी सखी रूप होके श्रीराधा

कृष्ण के वस्त्र भूषण कोशकी रक्षा करै समय समय पर अंग में धारण करावै अपने यूथ की जो दासी सखी तिनको प्रेम की सिद्ध कोटिके जो भाव जिनको रूढ महा भावादिक कहैं सो उपदेश करैं वसंत होरी में श्रीराधिकाजी की ओरी से अवीर गुलाल की झोरी लेके ठाडी होंय श्रावण में हिंडोला की रेशम डोरी पकड के श्रीराधाजी की ओरी ठाडी होके मलार राग गावैं ऐसे सब उत्सव समय में अनुकूलता की सेवा करैं प्यारीजी की अंग की कान्ति होके अंगकी शोभा बढावैं श्यामसुन्दर को प्रतिबिंब अंग में धारण करैं। एक दिग्विजयी पण्डित ने आप से संवाद कियो सो लिखे हैं, एक विद्यानिधि पंडित श्रीनिम्बार्क भगवान से वर्णाश्रय के निर्णय में पूछतो भयो कि महाराज तुम्हारे आचार में हमको बडो सन्देह है सो आपसे पूछूं हूं कुछ असूया नहीं करौ आपके अनुयायी द्विजभी हैं और इतर जाति के भी हैं वे श्राद्धादिक कर्म छोड के भजन करते भये वर्णाश्रम आचार जो छोडे हैं वे दोष से क्लेशी दिखाई पडे हैं सोई स्मृति में लिख्यो है:—

श्लोकः—वर्णाश्रम आचर्णानां भिन्न मर्यादीये नराः। नरक भागिनो ज्ञेया किंकरा वर्णशंकरा

अथ—वर्ण आश्रम आचार वारेन में जो भिन्न मर्यादा मनुष्य हैं वे किंकर वर्णसंकर नरक में पड़ें हैं, अपनी इच्छा पर चलवे वारेनको दोष होय है सो सब तुम्हारी संगति में दिखाई पड़ें हैं, यामें का आपने निश्चय कियो है ऐसे दिगविजयी नें जब पूंछी तब सत्य व्यवस्था स्थापन करवे के लिये और परमधर्म निर्णय करवे के लिये श्री निम्बार्क भगवान बोले कि हम तुम्हारी तर्क को माने हैं, प्रथम वेदको महातम सुनो-वर्णाश्रम वारे वेई निश्चय किये जो निरहंकार शंका छोड के राधाकृष्ण के चरण कमल को भजन करै, अन्य जो हरिसे विमुख वे वर्णआश्रम से हीन हैं सोई भगवान ने कह्योः—

श्लोकः—जनार्दनं जगत् योनिं यथा भजन्तिमांजना ज्ञेयावर्णाश्रमणस्ते इतरे वहिर्गामिनः ॥

अर्थ—मां जनार्दन जगत के कारण को जो भजन करैं हैं वेई वर्णआश्रम वारे हैं इतर वहिर्गामी हैं सोई श्रीमद्भागवत में निमि महाराज से नव योगेश्वरों ने कह्योः—

श्लोकः—मुख बाहूरुपादेभ्यो पुरुषस्याश्रमै सह ।
चत्वारो जिज्ञरे वर्णागुणै विप्रादयः पृथक् ॥
ययेषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं ।
नभजंत्यवजानन्तिस्थानाद्भ्रष्टाःपतत्यंधः ॥

अर्थ—पुरुष भगवानके मुख बाहु उरू चरणनते आश्रमसहित चार वर्ण प्रगट भये गुणन करके ब्राह्मणादिक न्यारे२ हैं, इनके मध्य में जाकी आत्मा से उत्पन्न भये वा ईश्वर प्रभूको जो नहीं भजन करैं और अविज्ञा करै स्थान से भ्रष्ट होके नरक में पडे सोई पद्मपुराण में कह्यो—

श्लोकः—पाद्मे॥नशूद्राभगवद्भक्तास्तेतुभागवतास्मृत
सर्व वर्णेषुतेशूद्रा ये अभक्ताजनार्दने ॥

अर्थ—भगवान के भक्त शूद्र नहीं है वे परम भागवत हैं, सब वर्णन में वेई शूद्र हैं जो जनार्दन के अभक्त हैं:—

काशीखण्डे ध्रू चरित्रे ।

श्लोक—ब्राह्मणः क्षतियोवैश्यः शूद्रोवा यदिवेतरः
विष्णु भक्ति समायु क्तोज्ञेयःसर्वोत्तमोत्तमाः ॥

अर्थ—चाहै ब्राह्मण होय क्षत्री होय वैश्य शूद्र अथवा इतर जाति होय, जो विष्णुभक्ति करतो होय सो सब से उत्तमोत्तम है—

रुक्मांगद प्रति वासुदेव वचन ।

श्लोक—श्वपचोपिमहीपालविश्नुभक्त द्विजाधिकः ।
विष्णु भक्ति विहीनस्तुयतिश्चश्वपचाधमः ॥

अर्थ—हे महीपाल विष्णु भक्त श्वपच भी ब्राह्मण से अधिक है, विष्णु भक्ति जाके नहीं ऐसो यति भी श्वपच से भी नीच है । इत्यादिक प्रमाणों करके हरि भक्त ही वर्णाश्रमी हैं, जो हरि के अभक्त वेही अंत्यज शूद्र श्वपच से भी गये बीते हैं; यह सिद्धांत भयो याते कृष्ण भक्त को जो वर्णाश्रमिन में शिरोमणि हैं तिनको जाति बुद्धि से देखनवारो नरक पडै है सोई पद्मपुराण में कह्यौ है

श्लोक—श्वपाकमिवनेक्षेतलोकेविप्रमवैष्णवो ।
वर्ण वाह्योपि वैष्णव पुनातिभुवन त्रयं ॥

तथोक्तं प्रह्लाद ने दैत्य बालकन से कह्यौ ।

विप्राद्द्विषड्गुणयुतादारविन्दनाभ पादारविन्द विमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठं ॥ मन्येतदर्पितमनोवचने-हितार्थ प्राणं पुनीति सकुलंनतुभूरिमानः ॥

भगवद्वाक्य नमे प्रियश्चतुर्वेदीमद्भक्तश्वपचाप्रियः
तस्मैदेयंततोग्राह्यंसचपूज्यो यथा अहं ।

अर्थ—सो कह्यो पद्मपुराण में लोक में जो अवैष्णव ब्राह्मण भी होय ताको श्वपच बराबर

भी न देखे और वैष्णव वर्ण बाहिर भी होय सो तीन भुवन को पवित्र करै है सो प्रह्लादजी ने दैत्य बालकन से कही बारह गुण से युक्त ब्राह्मण है पर कमल नामके चरण कमल से विमुख है तासे श्वपच जाने हरि में मन वाणी चेष्टा अर्पण करी ताकूं श्रेष्ट मानूं हूं सो कुल सहित प्राणन को पवित्र करलेय सो अभिमानी ब्राह्मण अपनपे को ही नहीं पवित्र कर सके कुल कहां से पवित्र कर लेय ॥ भगवान के वाक्य ॥ चार वेद को वक्ता है पर मेरो भक्त नहीं सो मोको प्यारो नहीं मेरो भक्त श्वपच भी मोको प्यारो है ताको दैनो ताही से लेनो सो मेरी बराबर पूज्य है ॥ यह व्यवस्था वर्ण आश्रम की स्मृति से है शास्त्र परोक्षवादी है ताके अभिप्राय को नहीं जानके झूठे अभिमानी संसार में पडे हैं कृष्ण भक्त सब से उत्तम है अभक्त सब से अधम है यह वेद को परोक्ष अभिप्राय खल अभिमानी नहीं जानै हम सब से उत्तम हैं ऐसे बकैं हैं गंगा जमुनाजी को जल जैसे सबको पवित्र करै तैसे संत सबको शोधन करैं ॥

यथोक्तं शुकेनराजानंप्रति ।

श्लोक—किरातहूणान्ध्र पुलिन्दपुल्कसा आभीरकंका

यवनाखसादयः ये अन्ये च पापायदुपाश्रश्रय
शुद्ध्यं तितस्मैप्रभविस्णवेनमः ॥
तथोक्तं आदि पुराणे भगवता अर्जुनंप्रति ।
वैष्णवान् भजकौन्तेयमा भजस्वान्य देवता ॥
पुनन्ति वैष्णवासर्वे सर्वं वेदमयंजगत् ॥

अर्थ—श्रीमद्भागवत में शुकदेवजी ने कह्यो परीक्षतजी से कि रात जो भील अंध्र पुल्कस नाम चान्डाल अहीर यवन और खसादिक अन्य जो और पापी जिन भगवान के आश्रय लेवे वारे संत तिनको आश्रय लेके पवित्र होजाय ऐसे सामर्थ्यवान भगवान को दन्डवत है २ आदि पुराण में भगवान ने अर्जुन से कही है कुन्ती के बेटा वैष्णवों को भज और देवताओं को मत भज सब वेद मय जगत को वैष्णव पवित्र करे है ॥ इन प्रमाणों को सुन के दिगविजयी तर्क करवे लगे जो हरि भक्ति ही सबसे उत्तम है तो सूत्र दन्डादिक बर्णाश्रमको लक्षण क्यों कह्यो श्रीनिम्बार्क भगवान बोले कि शास्त्र के तात्पर्य बारो जो वैष्णव धर्म सो अपरोक्ष है चारो ओरते खैंचके कृष्ण में जो बुद्धि सो सूत्र है मन बाणी शरीरके तीन दन्ड हैं सब साधारण नैष्टिक ब्रह्म चारी हैं

तथोक्तं भगवता उद्धवं प्रति ।

सर्वाश्रम प्रयुक्तोयं नियमः कुल नन्दनः ।
मद्भावः सर्व भूतेषुमनोवाक्कायसंयमः ॥
मौनानी हानिलायामादन्डावाग्देहचेतसां ।
नह्येतेयस्यसंत्यंगवेणुभिर्नभवेद्यतिः ॥
ज्ञान वैराग्य रहितस्त्रिदण्डमुप जीविति ।
मनोवाग्वपुषादन्डा वैष्णवानांत्रयस्मृताः

अर्थ--सोई कह्यो भगवान ने उद्धवजी से श्री भागवत में, हे कुल नन्दन सब आश्रम को कह्यो भयो यह नियम है, मन, वाणी, शरीर को संयम करके सब भूतनमें मेरो भाव देखनो मौन रहनो, चेष्टा न करनो, प्राणायाम वाणी देह चित्त के यह दण्ड हैं. जाके यह दण्ड नहीं है सो केवल बांस पकडवे से यति न हो जायगो ज्ञान वैराग्य तो है नहीं सो केवल त्रदण्ड से जीविका करे है मन वाणी देहके ये तीन दण्ड वैष्णवों को कहे हैं।

तथोक्तं नारदेन युधिष्ठरं प्रति श्री भागवते ।

नैतादृशो परोधर्मो नृणां सद्धर्म मिच्छतां ।
न्यासो दन्डस्यभूतेषु मनोवाक्काययजस्यथः ॥

अर्थ--सो कह्यो नारदजीने युधिष्ठिरजी से श्रीमद्भागवत में । सत्य धर्म चाहन वारे मनुष्यों

को याते परे कोई धर्म नहीं है कि मन, वाणी, शरीर से उत्पन्न भये जो दण्ड तिनको त्याग करनो फिर दिग्विजयी निम्बार्क भगवान से बोल्यो जो हरिभक्ती तुम्हारे मत में त्रिदन्डी सूत्री हैं तौ तिनके पक्षमें तीर्थयात्रा वेद अध्ययन आदि वर्णाश्रम के असाधारण धर्म का निश्चय किये हैं तब आचार्य उत्तर देते भये कि श्रवणादि क भक्ति करवे वारे को सब धर्म आनुषंगिक हो जाय है।

तथोक्तं श्री कपिलदेवेन मातरं प्रति श्रीभागवते

अहो वतश्वपचातोगरीयान यज्जिव्हाग्रे वर्तते नामतुभ्यं। तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्याब्रह्मानू चुर्नामगृणन्तियेते ॥

तथैवोक्तं स्कान्दे रेवाखन्डे ब्रह्मणा मुरारिं प्रति।

सकर्ता सर्वधर्माणांभक्तोयस्तवकेशव।

सकर्ता सर्व पापानां योन भक्तास्तवाच्युत ॥

अर्थ—सोई कह्यो कपिलदेवजी से अपनी माता ने श्री भागवत में। अहो आश्चर्य की बात है कि है तो श्वपच पर याते श्रेष्ठ है, कि याकी जिह्वा के अग्रभाग में तुम्हारो नाम वर्ते है जो आपको नाम उच्चारण करैं हैं ते सब तप कर लेते भये

सब होम कर लेते भये, बडों की सेवा करलीनी वेद पढलिये सोई कह्यौ ब्रह्माजी ने मुरारि भगवान से रेवाखण्ड स्कन्द पुराण में, हे केशव ! जो तुम्हारो भक्त है सो सब धर्म कर लेतो भयौ और जो तुम्हारो अभक्त है सो सब पाप को करवे वारो है, फेर विद्यानिधि बोले कि जो भक्त वर्ण आश्रम के शिखामणि हैं तो आप वर्ण आश्रमको अभिमान काहे को राखौ हो तब श्री आचार्य बोले कि हम वैष्णव शरणागत अभिमानी है वर्ण आश्रम को अभिमान त्याग करके भगवत आज्ञा पालन करैं हैं।

तथोक्तं भगवता उद्धवं प्रति श्री भागवते

आज्ञायैवं गुणान्दोषान्मयादिष्टानपिस्वकान्।
धर्मान्संत्यज्ययःसर्वान्मांभजेत ससत्तमः ॥
अपि च तस्मात्त्व मुद्धवोत्सृज्यचोदनां प्रति चोदनां । प्रवृतिं च निवृतिं च श्रोतव्यं श्रुत मेवच ॥ मामेकमेव शरणमात्मानं सर्व देहिनां । याहि सर्वात्मभावेन मयास्याह्यकुतोभयः ॥

अर्थ—सोई भगवान ने उद्धव से श्री भागवत में कह्यो, मेरे उपदेश किये भये भी सब गुण दोषों को जानके सब धर्मों को छोडके जो मेरो

भजन करै सो अति उत्तम है, तासे उद्धव तुम विधि निषेध प्रवृति निवृति सुनवे योग्य सुनो भयो सबको छोड़के सब देह धारिन को आत्मा जो मैं सो मेरी शरण होजावो मैं तुमको सबसे अभय कर देउंगो; सोई गीताजी में भगवाम ने अन्त में सब उपदेशों को निचोड अर्जुन से कही—

श्लोक—सर्व धर्मान् परित्यज्यमामेकंशरणांव्रज ।
अहंत्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयस्यामिमाशुच ॥

अर्थ—सब धर्मों कों छोडके तू मेरे एक के शरण होजा, मैं तोकूं सब पापों से छुटाय दूंगो तू मत सोच करै, ताते शरणागत वैष्णव परमहंस समान होंय है इन वैष्णवों को धर्म छोडे को पाप भी नहीं लगै सोई श्रीमद्भागवत में करभाजनजी ने निमि महाराज से कही—

श्लोक—देवर्षि भूतांनृणांपितृणां न किंकरो नाय मृणीच राजन । सर्वात्मनायः शरणं शरण्यंगतो मुकुन्दं परिहृत्यकृत्यं ॥

अर्थ—जो सब कृत्य छोडके सर्वात्मा करके शरण के दाता हरिके शरण गयो, हे राजन परीक्षत सो कोई देवता ऋषि पितरनको भूतमात्र को ऋाणि नहीं है न किंकर है सोई ब्रह्मांड पुराण में कह्यो ।

श्लोक-त्यक्तसर्वकुलाचारोमहापातिकवानपि ॥
विष्णुभक्तिं समाश्रित्यपुमान्नार्हतियातनामिति

अर्थ—जाने सब कुलके आचार भी त्यागे होंय और महा पातकी भी होय पर विष्णु भक्ति के आश्रय होजाय तौ नरक पडवे योग्य नहीं यह सिद्धान्त सुनके दिग्विजयीने पूछीकि तुम वैष्णवोंकी परम्पराका है श्री निम्बार्क भगवान बोले कि हमारे विष्णु भगवान अवधि रूप हैं जिनकी विष्नु की दीक्षा नहीं उनकी सब परम्परा वृथा है सोई नारद पञ्चरात्र में लिखो है ।

श्लोक—अवैष्नवो पदिष्टेन मंत्रेण निरयं व्रजेत् ।
पुनश्च विधना सम्यग्वैष्नवाद्गृह्येद्गुरोः ॥
महाकुल प्रसूतोपि सर्व यज्ञेषु दीक्षितः ।
सहस्र शाखाध्यायी चनगुरुः स्यादवैष्नवः ।

अर्थ—विना वैष्नव के उपदेश किये मंत्र से नरक में पडे तासे विधि पूर्वक फेर वैष्नव गुरू से मंत्र लेय ॥ २ ॥ वडे कुल में जन्म भी होय सब यज्ञों में दीक्षा भी पाई होय वेद की हजारन शाखा पाठ भी करतो होय पर अवैष्नव होय तो गुरू नहीं होय । बिना व्याकरण के जैसे बाणी शुद्ध नहीं लक्षण बिना जैसे व्यंजन अच्छे नहीं

तैसे बैष्नव विना दीक्षा सफल नहीं होये यह सिद्धान्त सुनके दिग्विजयी अपने मनमें निश्चय करतो भयो और सुदर्शन भगवान को दंडवत् करता भयो इति दशश्लोकी में आप दृढ करके लिखते भये कि—

श्लोक—नान्या गतिर्कृष्ण पदारविन्दात्
संदृश्यते ब्रह्म शिवादि वंदितात् ।
भक्तेच्छया पात्त सुचिंत्य विग्रहा ।
दचिंत्य शक्तेरविचिंत्य साशयात् ॥

अर्थ—भक्तों की इच्छा से जिन श्रीकृष्ण ने प्रगट किये सुन्दर चिंतवन करवे योग्य विग्रह अचिंत्य जिनकी शक्ति नहीं विशेष करके समुझो जाय आशय जिनको ब्रह्मा शिवादि जिनको बन्दना करैं उन श्री कृष्ण के चरण कमल विना अन्य गति दिखाई नहीं पडे या श्लोक की उपपत्ति व प्रमाण में वेद पुराण स्मृति महाभारतादिक हजारन ग्रन्थ है विशेष लिखनो ग्रन्थ बिस्तार करनो है थोडी से वात्त विद्वान महात्मा समुझे कि श्री बेदव्यास जी महाराज ने तत्व में तीन नाम भगवान के धरे ब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीमद्भागवत में जहां तहां सिद्धांत वर्णन भयो उपा सिक

के वृत्ति भेद से एकही तत्व तीन प्रकार को अनु भव भयोतामें ब्रह्म परमात्मा रसहैं रासिक नहीं हैं कृष्न महाराज रसभी रासिकभी है ॥ ब्रह्म मैं हूं सो मैं हूं ऐसे ब्रह्मा कार वृत्ति वारो अखन्ड धारणा करके अद्वैतवादिनके सिद्धान्त अनुसार घटाकाश जैसे घटउपाधि दूर भयेते महा आकाश होजावे ऐसे देह उपाधि दूर होवे से ब्रह्म होजाय पर जो छय वर्गमन इन्द्रानखाजावें सोई श्रीपृथु महाराज से कह्यो सनकादिकने कृच्छ्रो महानिह भवार्णव मप्लु वे षांपड वर्ग नक्रन सुखे न तितीर्षन्ति

अर्थ—या संसार समुद्र तरवेको जिनने ईशके चरण रूपी नौका नहीं अंगीकारकरी तिनको ज्ञान योगमें बडो कष्ट है इन्द्री जो नक्र नाम मगर खा जाय है श्रीगीताजी में श्री मुख से कह्यौ।

क्लेशोधिकरस्तरस्तेषाम व्यक्तासक्तचेतसां।

अर्थ—निराकार में जिनके चित्त आसक्त उनको अधिकतर क्लेश है ऐसे बहुत प्रमाण हैं पर जैसे कृष्ण महाराज कहैं।

कितेषामहं समुद्धर्ता भवामि न चिरातपार्थ।

अर्थ—तिनको मैं जल्दी उद्धार करवे वारो होउं ॥

श्लोक-ये यथामां प्रपद्यं तेतांस्तथै व भजाम्यहं ।

अर्थ-जो मोको जैसे भजन करै ताको तैसे में भजन करौ। ऐसे ब्रम्ह परमात्मान कहैंगे कोई बाप वेटा नदिया पार जाते होंय तो वेटा बाप को पकड लेय और बाप न पकडे रस्ता में सिंह दहाडै भय से घबराय बाप को छोड देय नदिया में डूब जाय और जो बाप भी वेटा को दृढ कर पकड लेय तो भले वेटा छोड देय बाप तो न छोडे ऐसे जीव भी श्रीकृष्ण को पकडे और श्रीकृष्ण भी जीवको पकडें तो काम क्रोधादिक के भय से जीव से छूट जावें पर श्रीकृष्ण महाराज तौ न छोडें संसार समुद्र में न डूबे इतिदिक श्रीनिम्बार्क भगवान सखी रूप श्रीरंगदेवी रूप से नायका नायक श्री राधाकृष्ण की हर समय सेवा करै शृंगार रसकी परिपाटी तौ आप की वटकी है शृंगार रसकी पुष्टि जब होय जब नायका की प्रधानता होय दश श्लोकी में श्रीराधाकृष्ण युगुल स्वरूप को रूपरंग वैभव समान वर्णन कियो श्री बृन्दावन की निकुंज में श्री श्यामां श्याम विहार करैं प्रात काल शयन

से उठे वा समय प्रात स्मरण के ध्यान के दश श्लोक आपने वर्णन किये सब श्लोक में बराबर युग्म स्वरूप को वैभव वर्णन करते आये एक श्लोक नायिका की प्रधानता को वर्णन कियो।

श्लोक–प्रातर्नमामि वृषभानसुता पदाब्जन्नेत्रालिभिः
परिणुतंब्रजसुन्दरीणां ।
प्रेमातुरेण हरिणाऽश्रु विशारदेन श्रीमद्व्रजे
शतनयेन सदाभिवन्द्यं ॥

अर्थ–प्रात काल वृषभानु की बेटी के चरण कमल को मैं दन्डवत करौहूं ब्रज सुन्दरी जो ललिता विशाखा तिनके नेत्ररूपी भौंरा जिनकी स्तुति करैं श्रीमद्व्रजेश जो नन्दराय तिनके बेटा श्री हरि बडे निपुण प्रेम से आतुर होयके जिन चरणों को सदा अभिवन्दन करैं यह रस की परिपाटीपुष्टभई चारव्यूह वासदेव संकर्षण प्रद्युमन अनिरुद्ध में मनके अधिष्टाता श्री अनिरुद्ध निम्बार्क भगवान हैं निम्बा र्क रूपसे नारदजी के शिष्यहैं पर सुदर्शन रूपसे उनके भी आद्य हैं चार आद्याचार्य श्रीकृष्ण हंस सुदर्शन अनिरुद्धये पहिले कहि आये तामें सुदर्शन भगवान में प्रमाण ॥

श्लोक-सुदर्शन महावाहु कोटि सूर्यसमः प्रभः ।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णुमार्ग प्रदर्शकः ॥

अर्थ—हे सुदर्शन बडी भुजा वारे कोट सूर्य समान आपकी कान्ति अज्ञान रूपी अंधेरे में जो अन्धे भये। तिनको विष्नु मार्ग तुम दिखावो हो सोई सुदर्शन भगवान साक्षात् निम्बार्क भगवान हैं श्री निम्बार्क द्वापर के अन्त में बद्रिकाश्रम में जायके तप में आरुढ होते भये उद्धवजी को जव श्रीकृष्णचन्द्रने वद्रिका श्रम में भेजे तव उद्धवजी ने निम्बार्क भगवान को गोवर्द्धन जी में भेजे तव फिर वहुत काल निम्ब ग्राम मे वास करते भये सदानन्द आदिक विप्र भागवत उत्तम परम उत्कंठासे स्तुति करते भये कातिक पूरन्माशी में आपको प्रागटहै वादिन व्रत करनो चाहिये या प्रकार कुछ थोडो चरित्र लिखो ८०००० अस्सीहजार श्लोक आपके चरित्र को तैलंग देशमें है पर वहां की भाषा में है याते या देश में प्रचलित नहीं भयो श्रीनिम्बार्क भगवान के असंख्यात शिष्य हैं तिनमें पांच प्रधान मुख्य मुख्य, श्री भट्ट भास्कर भगवान १ चक्रनाथ भगवान २ औदंबर ऋषि ३ श्री गौर मुख ४

श्री निवास आचार्य ५ यद्यपि श्रीनिवास आचार्य सबसे छोटे हैं पर शंख के अवतार है और स्वामी को अति वात्सल्य तासे उन्हीं को सम्प्रदाय की आचार्यता की गद्दी भयी ॥

श्री सुदर्शन ही निम्बार्क रूपसे प्रगट भये तामें प्रमाण कांची खन्ड में ॥

श्लोक-वीणापाणेर्गुरोर्लब्ध्वा मोक्षोपायं सुदर्शनः
वेदान्तवेद्य सद्धर्मं समगृहीच्चवर्गशः ॥

अर्थ—वीणावारे श्री नारदजी को गुरू पायके सुदर्शन भगवान वेदान्त कर के जान्यो जाय जो सद्धर्मताको गृहण करते भये ॥

सम्मोनहनतंत्रमे ॥

श्लोक हविर्द्धानाभिधानस्तु चक्रमासीन्महामुनिः
सोतप्यततपस्तीव्रं निंबक्वाथैक भोजनः ।

अर्थ-हविर्द्धान नाम के मुनि चक्र महाराज होते भये सो नीमको क्वाथ खायके तीव्र तप करते भये

भविष्य पुराण में ।

पुरुषार्थ प्रवर्षित्वात्सेवांगीकृतया स्वयं ।
कर्मणा मोक्ष रूपेण निम्बार्क इति विश्रुतः ॥

अर्थ-सब पुरुषार्थ की बर्षा करवे से सेवा स्वयं अंगीकार करवेते कर्म मोक्ष रूपी करवेते निम्बार्क

नाम विख्यात भयो।

कृष्ण उप निषदमें ॥

श्लोक—गोप्योगाव ऋचस्तस्ययष्टिका देह संज्ञिनी॥
मित्र भावेस्तो कक्रृष्णसखीत्वे रंग देविका॥
गोषुधूसरकाचै व वंशी नृत्ये सुदर्शनः।
कांतिरूपेण राधायां चक्र रूपेण केशवे॥
कलौ निम्बार्क रूपेण संप्रदाय प्रवर्त्तकः।
हविर्द्धाना विधानस्य चरितं परमाद्भुतं॥

अर्थ—गोपी गैया ऋचछणी मित्र भाव में सखा तोकक्रृष्ण सखीन में रंग देवी गैय्यान में धूसर नृत्य समय में वंशी श्रीराधा के अंग की कान्ति केशव के हाथमें चक्र रूप इतने हविर्द्धान नाम के परम अद्भुत चरित्र हैं कलियुग में निम्बार्क रूप से सोई सम्प्रदाय प्रवंतक होते भये।

श्लोक नैमिषखन्डे कल्पत्रयादपिप्राक्च विष्णुक्षेत्रे
द्विजाहरिं॥
त्रेतायु गेगतेप्राये यजंता सुर कुंठिता॥
मेरो मूर्धन्यपर्यंते ब्रह्माणं शरणंययुः
तेनध्यातो हरिश्चक्रं पर्य्यं यन्मुनिरक्षणे॥
तदाविरासीत्स्वंतस्थं मुनिरूपंदधार तत्
हविर्द्धानेति विख्यातो नियमानन्द इत्यपि

अर्थ—तीन कल्प से पहिले विष्णु क्षेत्र में ब्राह्मण हरिकी शरण गये त्रेतो युग प्राय वीतें गयो असुर करके दुखी पहिले मेरू पर्वत की मस्तक पर ब्रह्मा की शरण गये ब्रह्माजी ने हरि के चक्र को ध्यान कियो तव चक्र महाराज मुनि रूप धारण करके प्रगट होते भये हविंष भोजन करवे से हविर्द्धान नाम पड़्यो वेदन को आनन्द देवे से नियमानन्द नाम पडो ॥

औदम्बर संहिता में ।

श्लोक-गोवर्धन समीपेतु निम्बग्राम द्विजोत्तम ।
जगन्नाथस्य पत्न्यांवै जयन्त्यां प्रथमे युगे ॥
वैशाखे शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ पुनः ।
साक्षात्सुदर्शनो लोके नियमा नन्दोवभूवह ॥

अर्थ-गोवर्द्धन के निकट द्विजोत्तम जगन्नाथ की पत्नी में प्रथम युग अर्थात सत्य युग बैशाख शुक्ल पक्ष अक्षय तृतीयामें साक्षात सुदर्शन लोक में नियमानन्द होते भये ।

नैमिष खन्ड में ।

श्लोक—आम्नायरस मुद्धृत्य विप्रपालं सुदर्शनं ।
स्वया भाषा ग्रहासन्नं ग्राहया मास नारदः ॥

अर्थ-वेद रस उद्धार करके ब्राह्मणों के पालन

करने वाले सदर्शनजी को अपनी भाषा को तात्पर्य नारद जी ग्रहण करावते भये ।

वामन पुण में ।

श्लोक- कर्णक स्यशुभे क्षेत्रे बदर्य्याश्रम मन्डले ।
ऐरावर्त्यां क्वचिज्जातः प्राकल्प इतिमेश्रुतं ॥

अर्थ—कर्ण प्रयाग शुभक्षेत्र बद्रिकाश्रम के मन्डल में ऐरावती माता से कवहू पहिले कल्प में निम्बार्क भगवान प्रगट होते भये हय सुनों है ।

नारद पंचरात्रे ।

शंखः साक्षात् वासुदेवो गदा संकर्षण स्वयं ।
बभूव पद्मं प्रद्युम्नोऽनिरुद्धस्तु सुदर्शनः ॥

अर्थ-शंख साक्षात वासुदेव है गदा संकर्षण है पद्म सोई प्रद्युम्न अनिरुद्ध सोई सुदर्शन है ।

श्लोक-संसार रोगशमने खलुनिम्बनद्योहार्दान्धकार
हरणेकवदेवयश्च श्री कृष्ण पादपरिचारण
तुष्ट चेतो निम्बार्क आर्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ।

श्री निवास आचार्य का चरित्र

श्रीनिवास आचार्य को प्राघट को शास्त्र से एसो भी बृतान्त पायो गयो कि कोई विद्वान ब्राह्मण स्मार्त धर्म मेरत सब शास्त्र पुराण के ज्ञाता आचार्य पाद जिनको नाम वे दिग विजय करते

भये निम्ब ग्राम में आये शिष्य बहुत संग ग्रंथों को बड़ो संग्रह श्रीनिम्बार्क भगवान से बोले मैं स्त्री और शिष्यों सहित आपके आश्रम में प्राप्त भयो हूं आजकी रात्रि निवास की आज्ञा देव प्रात काल कहूं चलो जांवगो भगवान सुनके बोले कि आप परवारसहित हमारी आतिथ्य लीजिये विद्वान बोले कि अब सांयकाल प्राप्त भयो भोजन नहीं करैं प्रात काल भोजन करैंगे तब श्री भगवानने उनको भी निम्बपर सूर्य दिखाये और भोजन कराये भोजन कर चुके तब दो घडी रात गयी यह आशचर्य देखके विद्वान ने लघुस्त वराज अर्थात जयजयइंगित ज्ञाता यासे स्तुति करी निम्बार्क भगवान बोले किवडे मंगल की बात है कि आप यहां आये यहां ही विराजो दिव्य रहस्य कथा में तुमसे कहूं सुनो जा बात को जानके तुम मुक्ति भाग होउगे तुह्मारी स्त्री जो गर्भवती है ताके वासुदेव के अंश से शंख अवतार प्रगट होंयगे तुम उनके पिता होवे से सब मनुष्यों के पूजित होवोगे ऐसे आज्ञा सुनके आचार्य पाद कुटुम्ब सहित तहां वसे जब विप्र पत्नी को महा उदय काल आयो तब पांचजन्य भगवान प्रगट

भये उनको ही आचार्य चरित्र में लिख्यो है।

श्लोक-शंखावतारः पुरुषोत्तमस्ययस्यध्वानि शास्त्र
 मचिन्त्य शक्ति।
 योस्पर्श मात्रा दधुवाप्त कामतं श्रीनिवासं
 शरणं प्रपद्ये ॥

अर्थ—पुरुषोत्तम के शंख के अवतार अचिन्त्य जिनकी शक्ति सब शास्त्र जिनकी ध्वनि से निरे जो भूजी स्पर्श मात्र से ही पूर्ण काम अर्थात सब विद्या में प्रवीन होगये तिन श्री निवासके मैं शरण प्राप्त होउं ॥ श्री निम्बार्क भगवान के कुल में श्री वासदेव भगवान के अंश शंख अव-तार कुन्द इन्दु समान श्री अंग श्री निवास आचार्य माघ महीना की शुक्ल वसंत पंचमी में प्रगट होते भये सब शुभ नक्षत्र को उदय दिनके उदय अर्थात प्रात्त काल अवतार लेते भये जब पांच वर्ष की अवस्था भयी सब ग्रह संपदा त्याग के अपने नाथ श्री निम्बार्क भगवान को हृदय में चिंतवन करके दिगविजय को गये इनके प्रागट पीछे इनके पिता आचार्य पाद इनको लेके निम्ब ग्राम से अपने देश में चले आये ऐसे संगति बैठे है दिगविजय में शैवशाक्त नास्तिक बोधमतवारे

इन सबको जीतके मथुरा मन्डल निम्ब ग्राम में प्रवेश भये निम्बार्क भगवान ने भिक्षा को आग्रह कियो सांय काल समुझ इनने भिक्षा न करी तब इनको भी सूर्य निम्ब पर दिखा के भोजन करावते भये भोजन करे पांच घडी रात गयी यह आश्चर्य देखके स्तुति करते भये श्री निम्बार्क भगवान ने जाने किये वासु देव अंश पांच जन्य अब तार है संप्रदाय प्रव्रत करेंगे पंच संस्सकार कर के श्री नारद उपदेश मार्ग की पंचपदी ब्रह्म विद्या देते भये जब श्री निवास आचार्य ने सब अविद्या को नाश कर वे वारी पंच पदी ब्रह्म विद्या पाई तब नैष्टिक व्रत ब्रह्मचर्यमें स्थित होके आत्मा आत्मी य श्री निम्बार्क भगवान को निवेदन करते भये तब श्री आचार्य पांच काल की सेवा पंचयज्ञ पंच अर्थ पंच आश्रम वेदान्त पार जात सौरभ यह सब देते भये जामे वाक्य अर्थ रूप करके सब वेद अर्थ को संग्रह है और शास्त्र अर्थ की काम धेनु दस श्लोकी देते भये श्री राधाकुन्ड में निवास करवे की आज्ञा भयी काहे

से कि जैसे राधा विष्नु भगवान की अति प्या-
री तैसे कुन्ड भी उनको अति प्यारो है
(यथा राधा प्रिया विष्णो कुन्डस्तस्या तथा प्रिय)
सोई श्री निवास आचार्य श्री राधाकुन्ड
में निवास करते भये श्री राधाकृष्ण के स्तोत्र
जो आचार्य ने दिये तिनके पाठ से श्रीराधा
कृष्ण के दर्शन पावते भये वेदान्त पार जात
की भाष्य वेदान्त कौस्त भकरी गीता उपनिष-
द की व्याख्या करी श्रुतिस्मृतिसे अविरुद्ध
भिन्ना भिन्न मत प्रकाश करते भये अष्टादशा
क्षर मंत्रपर १८ श्लोक श्री निम्बार्क भगवान
के तापर वृहत व्याख्या गुह्यरहस्य वस्तु
की प्रकाश करवे वारी रहस्य षोड षी जामे
आत्मा आत्मीय निवेदन की विधि सो नि-
वास आचार्य करते भये अनाधिकारी से महा
न गोप्य है
लघुस्तव निम्बार्क भगवान की अर्थात जयजयई
गित ज्ञाता इनकी ही करी प्रसिद्ध हैं राधा
कुन्डमें श्री निवास आचार्य की बेठक प्रसिद्ध
है ललित विहारी ठाकुर विराज मन हैं सेवा
होय है दिगि विजय मैं शिष्य भी अनन्त भये

तिनमें श्रीविश्वाचार्य मुख्य भये श्रीविश्वाचार्य सद्गुरू फाल्गुण महीनाकी शुक्ल चतुर्थि को अवतार लेते भये उनके शिष्य श्रीपुरुषोत्तमाचार्य चैत्रमहीनाकी शुक्ल ६ को प्रगट भये ये अपने आचार्य के किये भये अनेक ग्रन्थ समुद्र समानों के अल्प बुद्धि वारिनके तरवे को सेतु प्रबन्धरूप ग्रन्थ कर देते भये तिनके श्रीविलास आचार्य शिष्य वैशाख महीनाकी शुक्ल अष्टमी में प्रगट भये तिनके शिष्य श्रीस्वरूप आचार्य विद्वानों में शिरोमणि ज्येष्ठ महीनाकी शुक्ल सप्तमी में प्रगट भये और आषाढ शुक्ल दशमी में अंधकार दूर करवे वारे श्रीमाधवाचार्य प्रगट भये और श्रावण महीना की शुक्ल तृतीया में श्रीबलभद्र आचार्य प्रगट भये और भादों महीना की शुक्ल द्वादशी में पद्मसदृश श्रीपद्माचार्य प्रगट भये और कुवार महीना की शुक्ल त्रयोदशी में गुणों के समुद्र श्याम आचार्य प्रगट भये; भादों महीना की शुक्ल एकादशी में हरिके प्यारे गोपाल आचार्य प्रगटे अगहन महीना की पूर्णमासी को कृपाआचार्य प्रगट भये तिनके शिष्य श्रीदेवाचार्य साक्षात भगवानके हाथ के पद्म को अवतार जिनकी

सुगन्धी मात्र से परतत्वको बोध होजाय जिनके चरण आश्रय मात्रसे ही विश्नुपद की प्राप्ति होय तिन देशाचार्य को दण्डवत करौं माघ महीना की शुक्ल पंचमी में प्रगट भये तिनके शिष्य सुन्दर भट्टजी अगहन महीनाकी द्वितीया को प्रगट भये दूसरे उनके शिष्य ब्रजभूषण प्रगट भये तामें पहिले ब्रजभूषण महाराजकी शिष्य प्रशिष्य की प्रणाली वर्णन करै हैं।

ब्रजभूषणदेवजी के ब्रजजीवनदेवजी तिनके जनार्द्दनदेवजी तिनके वंशीधर देवजी तिनके भूधरदेवजी, तिनके हरिवल्लभदेवजी, तिनके मुकुन्ददेवजी, तिनके ललित भान तिनके कन्हर देवजी तिनके श्रीवासुदेवजी, तिनके सुरतभान, तिनके श्री पीताम्बरदेवजी तिनके चिंतामणिदेवजी तिनके युगल किशोर तिनके श्री दामोदरदेवजी तिनके श्री स्वामी कमलनयनजी, तिनके गोवर्द्धन देवजी तिनके श्यामदेवजी तिनके ऋषीकेषदेवजी तिनके मधुसूद देवजी, तिनके गोपदेवजी तिनके श्री रूपनिधानदेवजी, तिनके जनहरियादेवजी, तिनके मथुरानाथजी; तिनके प्रेम नारायणजू, तिनके अनन्यदेवजी; तिनके श्रीश्यामसखाजी

तिनके लघुबीठल तिनके मोहनदेवजी, तिनके त्रभंगदेवजी तिनके हरिबिलासदेवजी, तिनके, यशोदानन्दनजी तिनके जयदेवजी,

श्री जयदेवजीका चरित्र।

ये श्री जयदेवजी कविराज राज किन्दु-बिल्व ग्राम वंग देशमें प्रगट भये इनकी छप्पय श्री नाभा गोस्वामीजीने भक्त मालमें लिखी है इन को ही बनायो गीतगोविन्द है।

छप्पय—श्रीजयदेव सुकविनृप चक्कवै खन्डमन्डलेश्वर आनकविप्रचुरभयो तिहुलोक गीत गोविन्द उजागर। कोक काव्य नव रस सरस शृंगार को आगर अष्ठपदी अभ्यास करे तेहि बुद्धि बढावै॥ राधा रमण प्रसन्न सुनन तहां निश्चय आवै॥ संत शिखन्डी खन्डको पद्मावति पति जनक रवि॥ ये पहिले एक गूदरी कर वामात्र से जगन्नाथ क्षेत्रके उपवन में विचरते एक एक पेडके नीचे एक एक दिन व्यतीत करते रहे कोई ब्राह्मणके सन्तान नहीं जगन्नाथ जीसे मानता मांगी कि जो मेरे पुत्र या पुत्री पहिले होय सो तुम्हारी।यह बात हियमें ठानी भगवत इच्छा से लडकी भयी सयानी भयी मन्दिर में लायो है प्रभू वस्तु आपकी है ऐसे वचन सुनायो स्वप्नमें आज्ञा

क्योंकि जयदेव भक्त भूप मेरो स्वरूप है उनको नि-
ाह देव जगत में जन्म पाये को यश लेव।

सो ब्राह्मण जयदेवजीके पास लायो इनने कान
ून्दके माथो चढायोमैं विरक्त ऐसो भार कब उठा
ा सकौ यह भारी लादी कैसे लाद सको सो ब्राह्मण
बालकी को इनके पास बैठाय के चलो गयो इनने
जगन्नाथकी ज़ोरावरी जानके एक झोंपडीको उद्यम
कियो वा ईश्वरके करे भयेको कोई तप विद्या चतु-
राई बल से मेट नहीं सकै ऐसे विचार कर पद्मावती
को संग ले रहिवे लगे पर कपिलदेवजी ने कहो
है कि—

॥ श्लोक ॥

प्रसंगमजरंपाशमात्मनः कवयोविदुः ।
सएवसाधुषुकृतो मोक्षद्वारमपावृतं ॥

अर्थ-संग करनो या आत्मा जीवकी अजर फांसी
है ऐसे कवि सब जाने हैं सोई संग जो साधूसे संग
हो जाय तो मोक्ष द्वार खुले हैं ॥ आप पद्मा
वतीजी से बोले कि मैं एक पोथी बनाऊं तुम लिखो
तब गीतगोविन्द प्रगट कियो पन्डितों को समाज
रसिकोंकी मण्डली ताको हृदयकी हारावली बना-
वते भये क्षेत्रके राजाने भी एक गीतगोविन्द बना-

थो सब पण्डितोंसे कही कि याको लोक में प्रसिद्ध करो उनने जयदेव कृत गीतगोबिन्द दिखायो सो अपने राज हटपर मडरायो तब न्याय श्रीजगदीश को सौंपो कौन अंगीकार होके जगतमें प्रचार पावै दोनों पोथी मन्दिर में रात्रिको धरीं सवेरा भयो दु-निया दर्शनको उमड परी राजाकी पोथी तो महा-राज की फेंकी सुहरी पर पडी और श्रीजयदेवजी के पत्रा सब अंग में लिपटे पाये यह देखके भक्त वत्सलता हृदय में गडी राजा ग्लानि मान समुद्र में डूबवे को आयो तव भगवान ने समझायो वैसी पोथी त्रिलोकी में नहीं क्यों वृथा मरे बारह स्वर्ग में बारह श्लोक क्यों न धरै तेरो भी नाम चलै।

श्लोक-यदि हरिस्मरणे सरसंमनोयदिविलासकला
सुकुतूहलं । मधुरकोमलकान्तपदावलींशृण
तदाजयदेव सरस्वतीं ॥

अर्थ—जो हरि के स्मरण में तुम्हारो मन सरस है और जो केलिकलाके विषय तुम्हारे मनको कुतूहल है तो मधुर कोमल मनोहर पदवारी जयदेवकी सरस्वती सुनो। जब पोथी बनायवे लगे श्रीराधाजी के मान मनायवे की अष्टपदी।

त्वदसियदि किंचिदपिदन्तरुचकोमदी हरतिदरति-
भरमतिघोरं । स्फुरदधरशीधवे तव वदनचन्द्रमां
रोचयति लोचन चकोरं ॥

इत्यादि जब यह प्रसंग आयो कि श्रीकृष्ण ने
कही कि अपनो चरण मेरे शीश के भूषण को
देव तब लोक में विश्वास के लिये और विख्यात
करायवे के लिये आपन लिखके गंगा स्नान को
जो गांव से अठारह कोस चले गये नित्यही यह
नियम रह्यो गंगा स्नान कर आवै तब प्रसाद पावैं
ताके पीछे पद्मावतीजी पावैं जगन्नाथजी आप अपने
हाथ सेवा अष्टपदी में लिख गये (स्मरगरल
खण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहिपदपल्लव मुदारं ॥
फिर जयदेवजी के स्वरूप से पद्मावती से प्रसाद
पायके चले गये पद्मावती के भोजन करे पीछे
जयदेवजी आये पद्मावतीसे प्रसाद मांगो पद्मावती
जी बोलीं कि तुम्हारे बिना मैं कैसे पाय लेती यह
आश्चर्य सुनके फिर पोथी देखी भगवत के हस्ता-
क्षर देखके बड़े प्रसन्न भये और पोथी को महात्म
कि एक माली की कुमारी बैंगन की बारी में फल
तोडती फिरै और गीत गोविन्दकी अष्टपदी ॥

रतिसुखसारेगीतमभिसारे मदन मनोहर वेषं ।

नकुरु नितम्बिनि गवन विलम्बनम तुसरतं हृदयेशं।
धीर समीरे यमुना तीरे वसति बने वनमाली
इत्यादि गावै रसिक श्रोता जगन्नाथजी ताके पीछे
पीछे डोलैं जामा कंटक झारसे तार तार होगयो
पुजारी ने जामे की कुगत देखके बात पूछी तब
बोले कि गीत गोविन्द मोको अति प्यारो बिना
सुने चित्त दुखारो होय ऐसे ही एक मुगल घोडा
पर चलतो जाय और गावै श्रोता जगदीश को
अपने सामने उलटो चलावै ऐसे यह बात ओडी
ज्ञान के राजा ने ड्योढी पिटवाई कि जो कोई
गावै पवित्र जगह में आसन देके गावै एक धनिक
कुछ देह निर्वाह के लिये अपने घर लेगयो पांच
मुहरें दीं रस्ता में ठग मिले आपने सब द्रव्य उन
को देदी तौभी अपनी दुष्टताई से हाथ न उठाये
हाथ पव काट रस्ता के गढहा में पधराय गये
अकस्मात कोई राजा दर्शन कर प्रसन्न हो घरमें
लायो व्यवस्था पूछी आपने कही कि ऐसो ही
शरीर पायो वाने वे हाथ पांव के ठूंठ अच्छे कराये
राजा को आपने हरि साधुन की सेवा बताईभजन
भावना की रीति चलाई अनन्त संत आवैं राज
भोग लगै आदि अंत में स्वामी को दर्शन देके

जावै कुछ काल पीछे वे ठगभी माला तिलक सदाचार बनाये स्वामीजी के पास आये महाराज ने राजा को समुझायो कि सब वैष्णवों की सेवा को फल आज तुमने पायो अच्छी सेवा करौ जो मांगै सो आगे धरो उनके हृदय में धुक धुकी विदा होवे की जक लगी स्वामी ने इनको वहुत धन दियो राजा ने छकडा लदवायो वहुत मनुष्य पहुचायवे को संग कर दिये रस्ता में पूछी कि आप कीसी सेवा काहू की न भयी स्वामीजी से कुछ नातो सगाई है दुष्ट बोले कि हम ये एक राज में काज करते रहे इनसे कुछ भारी अपराध भयो हमको इनकी जान मारवे को हुकुम भयो हमने केवल हाथ पांव काट के छोड दियो ताके वदले इनने हमको धन दियो इतनी सुनते धरती में दरार भयी माल धन सहित वे ठग समा गये ये समाचार राजाने पाये राजा ने स्वामी को सुनाये महाराज ने जो ठूंठ से ठूंठ मिलाय के राधा नाम गायो नये अंकुर की तरह शरीर सव सुधर आयो हाथ पांव सब अच्छे होगये यह अद्भुत बात देख राजा को अचंभो आयो गुह्य कथा सुनवे को मन लल- चायो तव स्वामीजी ने सब कथा सुनायीं नाम

ग्राम सुनके अपनो बडो भाग मनायो पद्मवतीजी को लाये या कथा को फल कि जैसे दुष्ट अपनी दुष्टताई नहीं छोडै तैसे साधु अपनी साधुताई नहीं छोडै, बहुत दिन रहे फिर कुछ रानी की कुटिलताई से अपने ग्राम में आये वृद्ध भये पर भी गंगा स्नान को नियम न छोडो यह काष्टा देख श्रीगंगाजी से सह्यो न गयो बोली कि मैंही तुम्हारे गामसरोवरमें आऊं तुम्हारे सरोवरमें कमल खिल जांयगे यही मेरे आयवे की पहिचान है, सोई आनन्द प्रगटायो, ऐसे चरित्र जाने सो गाये

श्रीजयदेव के जनगोपाल, तिनके श्रीमाधोजू; तिनके श्रीविष्णुदेवजू, तिनके बालगोविन्ददेवजी, तिनके रामकृष्णदेवजी, तिनके परमानन्ददेवजी, तिनके श्रीभागवतदेवजी, तिनके श्रीजनभगवान देवजी; तिनके श्रीकृष्णदेवजी, तिनके श्रीपुरुषोत्तम देवजी, तिनके श्रीनन्दलालजी, तिनके श्री-हरिदेवजी।

स्वामी हरिदास को चरित्र।

तिनके आसधीरजी तिनके स्वामी हरिदासजी भादों शुक्ल अष्टमी में प्रगट भये, महा विरक्त रस

रास रसिक जिनकी छाप ललिताजीकी अवतारहैं; रसिकों के प्राण आधार श्रीविहारी विहारनको नित्य विहार सब जगमें प्रकाश करते भये; श्री-वृन्दाबन निधवन में बांके विहारीकी सेवा विराज-मान करी, गानविद्या में ऐसे प्रवीण गन्धर्वों की कला आपके आगे क्षीण,सब राग रागनी आपके आगे हाथ जोडे खडी रहैं, तानसेन के पिता ने अपने बेटा को बडे परिश्रम से गान विद्या सिखाई पर इनको न आई बापभी बडे दुखित भये और इन तानसेनको बडी ग्लानि आई चित्त में बडी हानि मान घर छोड वस्ती से मुंह मोड जंगल में एक शिवजी के स्थान पर जापडे सात दिन विन अन्न जल पडे रहे तब शिवजी ने आज्ञा दीनी कि वृन्दाबन निधबन जावो स्वामी हरिदासजी से तुम्हारा मनोरथ पूरा होयगो फिर महाराज के पास आये महाराज ने पहिले संकल्प जानके कृपा करी कि सब राग सिद्ध होगये पहिले इनको ताना नाम रह्यौ महाराज ने तानसेन नाम धरयो अर्थात् तान जो राग तिनकी सेना तुम्हारे हृदय में वसी फिर अकबरकी सभामेंदीपकराग गायो दीपक बिना बारे बरगये बादशाहने पूछी इतनी जल्दी थोडी वयस

सें इतनो सामान कहां पायो तब स्वामीजी को यश बखान कियो बादशाह स्वामीजीके दर्शन अभि- लाषा से तानसेनको तमूरा लेके आये उनके मन में अनुराग कि महाराजके मुखारविन्द से कुछ. राग सुनैं पर भय से कहि न सकैं।
तानसेन तंबूरा ले या अभिलाषा से कुछ अशुद्ध गायवे लगे महाराज अंर्तयामी तान सेन के हाथ से तंबूरा ले जो मलार राग गायो खुली भयी जेठ की धूप में बादल उमड घुमड़ के घिरआयो बूंदों की बौछार पडवे लगी बादशाह बडे प्रसन्न भये अपनो सौभाग जान के धन संपत के अभिमान से कुछ सेवा करवे के लिये हट कियो श्रीमहाराज ने दिव्य दृष्टि दे श्री यमुनाजी के घाटको एक कोनों जामें एक विलांद मात्र टूट्यो दिखाय दियो जैसे अप्राकृत हीरा जवाहिरात से जटित सो कोनों देख्यो उतने मात्र में अपनो सारो राज्य लगाय देय तोभी पूरो न पडे ऐसे समुझ के चुप हो रह्यो चक्रवर्ती राज को अभिमान गयो चना वन्दरों को अवभी निधवन में राज्य की तरफ से पडैं हैं कोई पारस बड़ो अच्छो जानके भेट लायो आपने पत्थर बताय के फिकवायो सोई कह्यो

पारस पत्थर पर डरयो सेवक अकबरशाह ॥ श्री स्वामी हरिदास सम और बताऊं काहि ॥ एक दिनकी बात फागुन महीना होरी के दिन श्री वृन्दावनमें वसन्त ऋतु को पाघट विहारी विहारन को दिन रात होरी खेलवे रंग गुलाल उडायवे को काम डफ कर ताल मृदग शहनाई वजवे को आठो पहर हंगाम पिचकारी चलैं कुम कुमा फिकैं आनन्द की बहार आप स्वामीजी यमुना पुलिन में विराजें आपके आगे श्याम श्यामां होरी खेलवे की सामां कर रहे दो दल जुडे एक दल की मालिक श्यामा प्यारी दूसरे दलके श्याम विहारी बडी धूम धामसे अबीर गुलाल की घटा उमड रही पिचकारिन की फुहार वरषै होरी राग के गान होरहे वाजे वज रहे बांके विहारी ने भरके पिचकारी जो मारी तो प्यारी की सारी शराबोर होगयी ताके बदले में प्यारी ने पिचकारी चलानी चाही तो ललिताजी से रंग मांग्यो ताही समय स्वामीजी के पास कोई भक्त अमोल चोवा सुगन्धी को समो।ा लायो स्वामीजी ने प्यारी की पिचकारी में तुरत डार दियो चोवा की पिचकारी विहारीजी के अंग में लगी सब वागे वस्त्र अतर की महक से बस गये

भक्त ने जान्यो कि मेरो चोवा महाराज ने रज में डार दियो भीतर मनमें बहुत दुख पायो मुख पर मलीनता को विकार छायो ताही समय आपने आज्ञा दी कि निधुवन में श्याम सुन्दर के दरशन कर आवो जो विहारी जी के दर्शन किये तौ सो चोवा जामें बहुत वाको मन भोवा, श्रीबिहारीजीके अंग में लसो वसो पायो ऐसे अनेक चरित्र हैं कुछ प्रसिद्ध वात लिखदी, श्रीनाभा गोस्वामीजीने भक्तमाल में लिख्यो—आस धीर उद्योत कर रसिक छाप हरिदासकी युगुलनाम से नेम जपत नित कुंज विहारी। अविलोकतरहैं केल सखी सुखके अधिकारी॥ गान कला गन्धर्प श्यामश्यामा को तोषैं। उत्तम भोग लगाय मोर मरकट तिम पोखैं॥ नृपत द्वार ठाडे रहैं दर्शन आशा जासकी

श्रीविट्ठलविपुल को चरित्र।

इनके १२ शिष्य मे मुख्य परम रसिक श्री-विठ्ठलविपुल गुरु महाराज में भारी नेष्ठा स्वामीजी ने लीला अन्तर्ध्यान करी कि आपने आंखों मे पट्टी वांधी हरिदास बिना कौनको देखे रसिकों ने रास रचायौ तहां इनको बुलायो; पट्टी खोली दर्शन

करो आप बोले कि हरिदास बिना हरि कोहै कहां को, इनके पद बडे रसीले हैं। जैसे-

पद—हमारे माई श्यामाजू को राज ॥ जाके आधीन सदाही सांवरो सब ब्रजको शिरताज। यह जोडी अविचल श्रीवृन्दाबन नाहि और सो काज ॥ बिट्ठल विपुल विनोद विहारनदिन जलधर ज्यों गाज ॥

श्रीविहारनदेवको चरित्र।

इनके शिष्य श्रीबिहारनदेवजी बडो तीव्र वैराग फूटोकरवा फटी गूदरी सोई आपने कह्यौ एक कोपीन गूदरी करवा श्रीविहारनदास इतने में सरवा पहिले छोटे बालकपनमें इनके पिता श्रीस्वामीजी के पास लाये ये घुटुवन चलके स्वामीको करवा पकडलेते भये महाराज ने आशीर्वाद दियो कि तूही करवा को अधिकारी होयगो, फिर बडे राज काज परभये कोई को शरण लेके बांहदीनी बादशाह ने इनकी न मानी बांह कटाय श्रीवृन्दाबन आय स्वामी के अप्रगट होवे से श्रीविठ्ठलविपुल के शिष्य भये हाथभी पहिलो सो होगयो इनके पद साखी सुनतही चित्तमें आवेश आ-

जाय प्रेम वैराग हिये में छाय जाय जैसे गूंगो गुड मुंहमूं देखाय जाने स्वाद वाकी जीभ मिठाय गूंगे की सैन गूंगो ही जानै गूंगे को गूंगो पहिचानै ॥ गूंगो कर डारयो संसार गूंगो गावै नित्य विहार आप श्री बांके विहारी की विग्रह सेवा भी करते एक दिन यमुना पुलिन में या पद की भावना में– विहरत लाल विहारन दोउ श्री यमुनाजी के तीरे तीरे ऐसे लवलीन भये कि विग्रह सेवा की संहार न रही समय अनुकूल सेवा न वनी सेवकों ने अपराध समभ प्रार्थना करी तव आपने मन्दिर के पट खोले सव काल की भोग आर्ती शृंगार सेवा विहारीजी की करी भई दिखाय दीनी फिर समय पाय प्रार्थना करी कि आपतो वाहर भीतर दोनों सेवा करवे को सामर्थ हैं पर हम अल्प बुद्धि वारेन को भ्रम होजाय है तव सेवा गृहस्थ ब्राह्मणों को देदी अवभी विहारी पुरा में श्री विहारीजी महाराज विराजमान है अनोखी वांकी झांकी वांकी चितवन वांकी लीला सव काम बांको है दश ग्यारह बजे सोयके जगैं तरसाय तरसाय के दर्शन देंय रूप अनूप से सवके मन आकर्षण करैं

साल भरमें केवल एक दिन अक्षय तृतीया को चरण दर्शन मिलै वहु तेरे और इष्टके अनन्य भय से मन्दिर में दर्शन को न जांय कि विहारीजी मन को मोहलैंयगे तो हमारो इष्ट छूट जायगो बस वृन्दावन में बांकें विहारी देखके कुछ बाकी नहीं रहै सोई सहचर शरण ने कह्यो ॥ बांकी पागचन्द्र का तापर तुर्रारु रुक रहा है ॥ वर शिर पेच माल उर बांकी पटकी चटक अहा है ॥ बांके नैनं मैन शिर बांके वैन विनोद महा है बांके की बांकी झांकी कर बाकी रही कहा है ॥ श्री विहारन देव के सरस देवजी इन सब महात्मावों के चरित्र निज मतसिद्धांत में विस्तार से लिखे हैं सरसदेवजी के नर हरदेवजी तिनके रसिक देवजी इनने रसिक विहारी की सेवा करी रसिक विहारीजी को वडो मन्दिर है तहां वडे बडे महंत संत महानुभाव भये अबभी विद्यमान है उनके पीताम्वर देवजी तिनके श्री किशोरदासजी इंनने निजमत सिद्धांत रचना कियो चार खन्ड हैं परम रस मय ग्रन्थ और सब सिद्धान्त से सम्पन्न आचार्यों की प्रणालिका श्री विहारीजी के प्रागट और सेवा की विचित्र कथा है श्री पिताम्वर देवजी के गुरु भाइ श्री

ललित किशोरीजी इनने टट्टी स्थान बनायो करवा चीर्पा से निवास कियो उनके ललित मोहनीजी, उनके चतुरदासजी; उनके ठाकुरदासजी, उनके राधिकादासजी, उनके सखीशरण, उनके राधाप्रसादजी उनके पीछे भगवानदास बडे महानुभाव अबभी विद्यमान हैं कनिकसंत गुरूजी के सेवा में लगायो कामिनिन से अपनपो बचायो, पुरानी रसिकों की वाणी शोधके मुद्रित कराई, अपार सुख रसिकों को दियो, घनवारों से दीन न भये, आठ आचार्यों की वाणी प्रेम ज्ञान वैराग्य की भरी वडी ललित हैं और श्री भगवतरसिककी वाणी अति सुन्दर अनोखी ढालकी उनके चेला वल्लभ रसिककी मांझ और सहचर शरण की मांझ वडी मनोहर इश्क की भरी और सीतल दासजी के गुलजार चमन सब देशकी भाषा में हैं और संस्कृतमें भी हैं, टट्टी स्थान में ललितकिशोरीजी मोहनीजी महाराज बडे भजन भावना के सिद्ध जैसे मनोंकी नाजकी ढेरी में से एक मूठी बानगी दिखावै तैसे सब वृन्दावनको प्रभाव वा टट्टी स्थान में दिखाय दियो जैसे—

पद—हमारे वृन्दावन उर और माया काल जहां

नहीं व्यापत रहत रासिक शिर मौर छूटजात सत असत बासना मनकी दौरादौर। भगवतरासिक बताई श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ एकदिन सूर्य गृहण पडरह्यौ आप टट्टी स्थान में साधुनकी बडी पंगत कररहे कोई आपको शिष्य राजा प्राय वहांही रह्यौ मत्सरी ने चुगली करी कि तुम्हारे गुरू बडे अधर्मी हैं गृहण में भोजन करैं हैं सो महाराज के पास आयो भीतर स्थान में बुलायके दिव्य निर्मल सूर्य दिखाय दियो जब बाहिर आवै गृहण भीतर जावै निर्मल ऐसे दो तीन वार देखके चरण पडके बोल्यो कि आप सब सामर्थवान् हो जो चाहो सो करो ये महात्मा नित्य धाम वृन्दावन नित्य बिहारी के उपासिक कहां चन्दा सूर्य कहां गृहण इनको गृहण ही दूसरो।

पद—अपूर्व पडो गृहण को योग। चन्दाभंपट राहु को ग्रस्यौ करत आपनो भोग ॥ जानत नहीं जोतिषी देखत रसिक उपासिक लोग। भगवत रसिक मिथुन के जापक चाहत नहीं वियोग ॥

याटट्टी स्थान के बडे बडे विरक्त संत गान विद्या में निपुण समाजी भये गंगादासजी लाडिलीदास जो आदिके मुखिया कौन संख्या कर सकै दो

चार विरक्तों की रहिनी आगे के साधुवों की शिक्षा के लिये लिखूं हूं ॥

कृष्णदास जी को चरित्र ।

महन्त राधिका प्रसाद के चेला श्री कृष्णदास जी ब्राह्मण शरीर पहिले पचास वर्ष की अवस्था तक तीर्थ अटन कियो फिर बृन्दावन पायके एक पग ब्रज वाहिर न दियो अपने पुरुषार्थ से कुटिया रास मन्डल तुलसी थांवला बनावैं जब लीप पोत के तैयार कर देंय छोडके और जगह जाय रहें ऐसे के तने बनाय डारे बहुत दिन पर्यन्त बरसाने में किशोरी जी के सेवा के लिये बृन्दावन से जमुना जल माथे पर धर पहुंचायो बडे विरक्त सखी रूप मथुरा बृन्दावन में हजारन गोपी आप की चेली पहिले जब शिष्य भये करुवाले के बन में रहवे की गुरू से आज्ञा मांगी गुरू ने स्थान में रहिवे की आज्ञा करी एक दिन तई कढाई वरतन वनिया के घर आये घी गुण चून लाय के गुरू द्वारा साधुवों को मालपुवा खवाये महंतजी भन्डार देखैं तो वरतन नहीं कृश्नदास वर्तन कहां गये बोले कि मालपुवा काहे के घुटे तब गुरू बोले

कि तुम करवाले के वनमें रहो आप बडे खुशी भये एक गोपी बोली कि मेरे गुरू होके भीख मत मांगो हजारन रुपया लेके व्याज पर धरदेव सोई भोजन करौ आपने रुपया लायके तत्काल उत्सव जमायो गुरू की पधरावनी कर साधुन को गाती उढाय लेडुवा खवाय कौडी कौडी वरावर कर फक्कडों का मार्ग दिखायो और चेली से बोले कि कोई बनिया के धरते मारे जाते ऐसी जगह धरे जो मारे न जांय और नित्य व्याज में खायगे सौ वर्ष कुछ विशेष जिये गान विद्या में बडे निपुण आठ पहर विहारी विहारण की भावना में लवलीन कलियुग की कलुष से मन क्षीण न भयो।

स्वामी शरण को चरित्र।

उनके साधक श्री स्वामी शरणजी बहुत दिन पर्यन्त एक करवा कमरी से व्रज में विचरे चार धाम भी किये फिर वरसाने की मोरकुटी पर निवास कियो अन्न छोडके शाक अहार कियौ गीताजी को अठारह अध्याय पाठ बिना भोजन न कियो सरल स्वभाव दीनता में भरे साधू सेवा

की मूर्ति द्रव्य को स्वार्थ में लगादेनो उनके बट-परो बडे सदाचारी एकादशी व्रतको नियम आप करैं औरों से करावैं जागरण करैं काम क्रोध से बचवे की भावनाको रस्ता बहुतन को सिखायो श्री वृन्दावन में बसके लाहो मानुष तनको पायो।

नवेलीदास को चरित्र।

इनके शिष्य श्री नवेलीदासजी विरक्त सखी भाव में परिपूरण बिहारी बिहारन के भावना ध्यान परायण शान्तमूर्ति अबभी विराजमान हैं एकाग्र चित्त सब उपाधि से निर्मुक्त भिक्षा अन्न से देह निर्वाह करैं रसिकों के पद और साखी सुनाय के जीवों को बोध देंय। गिरराज के ग्वाल पोखरा पर मौनीजी श्री स्वामी शरण के शिष्य बडे काष्टाधारी भूंजे चने मात्र के आहारी गिरिराजकी ही भगवतमूर्ति ताकी सेवा में बडी प्रीति नित्य विहार सोई परम आधार दर्शन मात्र से जीवको उद्धार होय अबभी विद्यमान है और भी बहुत शिष्य पंडित अमोलकराम जिनको हर समय हरि सेवा भजन से काम जाति विद्यादि अभिमान से दूर सीधे सच्चे स्वभाव पाखन्ड रहित विद्या में

भरपूर वृन्दावन वास के हुलास में शारीरिक सुख से निरास अबभी विद्यमान हैं और भी साधू सन्त भक्त टट्टी स्थान के असंख्यात हैं पंडित कृष्नदास कथा कीर्तन करैं नम्रतासे वृन्दावन वास कर दिन व्यतीत करैं हैं ।

समुदाय के चरित्र ।

स्वामी शरणजी के सम काल समान वयस वारे तुलसीदासजी विष्नु स्वरूप वैरागमूर्ति एकादश स्कन्ध को हर समय मनन करते वाही रस्ता पर चलते उदर पूर्णमात्रसे प्रयोजन इन्द्री स्वाद को बिवादही नहीं थोडे काल में ही जगत को दर्शन दै नित्य धाम में प्राप्त भये ये मेरे अनेक बातों के शिक्षक रहे और बाई लाडो रज दासी आदिक महात्मा भई श्रीवृन्दावनदास आदिक महात्मा विरक्त भजनानन्द अबभी विद्यमान हैं ।

ललिता शरण मधुकरी वृत्ति संसार में सिंहवत निर्भय रहे बिहारी बिहारन के गुण गान में काल व्यतीति कियो बृन्दाबन में दृढ बास पायो ।
अब सुन्दर भट्ट जी की शिष्य प्रशिष्य की प्रणालिका लिखे हैं श्री सुन्दर भट्ट अगहन महीना

की द्वितीया को प्रगट भये वैशाख महीना की कृष्ण पक्ष तृतीया में इनके शिष्य पद्मनाभ जी प्रगट भये तिनके शिष्य उपेन्द्र भट्ट चैत्र मास की कृष्ण चतुर्थी में प्रगट भये उनके शिष्य श्री राम चन्द्र भट्ट वैशाख महीना की कृष्ण पंचमी को प्रगट भये उनके शिष्य श्री बावन भट्ट जेष्ट मास की षष्टि में प्रगट भये आषाढ महीना की कृष्ण नौमी को श्री कृष्ण भट्ट उनके शिष्य प्रगट भये आषाढ महीना की कृष्ण अष्टमी में पद्माकर भट्ट प्रगट भये कार्तिक महीना की नवमी में भक्त वत्सल श्रवण भट्ट प्रगट भये कुवार की कृष्ण पक्षकी दशमी को श्री भूरि भट्ट अवतार लेते भये उनके शिष्य कातिक की कृष्ण दशमी को माधव नामके भट्ट प्रगट भये चैत्र महीना की कृष्ण द्वादशी को श्री श्यामक भट्ट प्रगट भये उनके शिष्य गोपाल भट्ट पूस महीना की एकादशी को प्रगट भये और माघ महीना की शुक्ल चतुर्दशी को श्री बलभद्र भट्ट उनके शिष्य प्रगट भये श्रावण महीना की शुक्ल पक्ष में श्री गोपीनाथ भट्ट अवतार लेते भये उनके शिष्य श्री केशव भट्ट चैत्र महीना की शुक्ल नवमी को प्रगट भये तिनके शिष्य श्री गांगल

भट्ट चैत्र महीना की कृष्ण द्वितीया को प्रगट भये तिनके शिष्य श्री केशव काश्मीरी ज्येष्ठ मास कृष्ण चतुर्थी में प्रगट भये तिनके शिष्य श्री भट्ट आचार्य कुंवार महीना के शुक्ल पक्ष में प्रगट भये ।

श्री केशव काश्मीरी को चरित्र ।

श्री गांगल भट्ट महाराज के शिष्य श्री केशव काश्मीरी जी महाराज ज्येष्ठ महीना की शुक्ल चौथ को प्रगट भये उनको चरित्र विस्तार से वर्णन करैं हैं ॥

श्लोक–वाणी शायस्य वदनेहृत्कंजेचहरिः स्वयं ।
यस्यादेशकरादेवाः मंत्रराज प्रसादतः ॥

अर्थ—सरस्वती जिनके मुखार विन्द में हृदय कमल में जिनके स्वयं हरि मंत्र राज के प्रसाद से सब देवता जिनके आज्ञानु वर्ती रहैं ते तैलंग देश वैडूर्य पत्तन ग्राम में श्री निम्बार्क भगवान के कुल में वेद वेदान्त के पारांगत आप प्रगट होते भये केशव काश्मीरी नाम इनको कर्म से पड़ो अर्थात् कश्मीर देश में मथुरा देश में आपने यवनों को और उनके राजा को पराजय कियो गुरुदेव से आप अति दुःसह विद्या पायके नैष्ठकब्रह्मचर्य व्रतमें

स्थित भये दूसरे सूर्य समान आप प्रकाश पावते भये तेज जैसे अग्नि विद्या में बृहस्पति गंभीरता में समुद्र समान क्षमामें जैसे पृथ्वी सब सद्गुण सम्पन्न कारुण्यादि गुणोंकी खान जैसे तारावों में नक्षत्रराज चन्द्रमा तैसे शिष्यों सहित सब देश में म्लेच्छों को व्याप्त हो जानो सुनके और हरिभक्ति के सरोवर सूखवे लगे तिनके पूरण करवे को पृथ्वी पर अटन करते भये श्रीरंगवैंकटाद्रितो ताद्रिकांची हेम गोपाल हिमाद्रि कन्या सेतु दर्शन इन सब तीर्थों में गये तहां तहां देशवासियों ने अच्छीतरह सत्कार कियो श्रीमद्भागवतकी तत्व प्रकाशिका टीका उज्जैन पुरी में विराजमान होके करी सो वहांही रही फिर रैवतगिरि कर्दम आश्रम देखते भये द्वारिकाजी में आये तहां शंख चक्रादि चिन्ह कलियुग में नष्ट होगये फिर स्थापन किये कुछ दिन पुष्कर में बिराजे १४ हजार शिष्य लेके तिन संग फिरते वेद मार्ग में प्रवृत जो विप्र तिनको सुख-देते पाखन्ड बुद्धिवारेनको निग्रह करते श्रीकेशव-भगवान केशव अंश केशव को पूजन प्रवृत करते श्रीविष्णुभक्ति देशोंमें पसारते स्यमंतक पंचमें स्नान करके वायूतीर्थ में गये तहां ब्रह्मा ह्रद में स्नान

करके प्राची सरस्वती में गये ऐसे तीर्थ यात्रा के मिष नृसिंहाश्रम देखवे को कश्मीर में गये वहां के सब मनुष्य प्राय महा खल म्लेच्छ मांस आहारी मूर्ख विष्णुभक्ति वर्जित दंभी मानी पापी अनित्य में नित्य बुद्धि तिन सबको अधिपति नाम राजा महा बलवान यवनों को ईश महाराज को पधारवो सुनतो भयो वैष्णवों को शंख घंटा घडियाल की ध्वनि सुनके वडो कोप कियो यंत्र मन्त्र तंत्र शस्त्र के समूह छोडतो भयो आप आसुरी मायासे अपने दासों को दुखित देखके अपने तेज से सब माया नाश करदेते भये यवन राजभी मुखसे लोहू बहा-वतो मूर्छित होके विह्वल होगयो ताको छोटो भाई अति दुर्धष महावीर राष्ट्रपालक वडी सेना लेके श्री आचार्य राय से लडवे को आयो आपने आकाश से सूर्य महाराज को आवाहन कियो उनके निकट आयवे से तेज प्रताप से सब जलवे लगे और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र यवना दिक शरण गये और स्तुति करी जब लोग बहुत व्याकुल देख तब सूर्य महाराज को उनके मन्डल में प्रस्थापन किये फिर वायवन को और सब देश वासियों को आपने निर्दोष और दीन देख के उन

के क्लेश दूर करवेको आप करुणा निधि यह उपदेश करते भये ।

उपदेश

माता पिता सहस्राणि पुत्र दारशतानिच ।संसारे ष्वनु भूतानियान्यास्यन्तियान्तिच ॥ १॥ शोक स्थानि सहस्राणि हर्षस्थानिशतानिच । दिवसे दिवसे मूढाश्रा विशन्तिनपन्डिताः ॥ २ ॥ वन्ध मोक्षमुपायंये विदुस्ते पंडितामताः । पश्य वंतस्त तस्त्वन्ये दारागार धनाश्रयाः ॥ ३ ॥ दांभिकाः मानिनः पापा संसारे संसरंतिते । अनाद्य विद्या याश्लिष्टोस्वात्म पातंनपश्यति ॥ ४ ॥ तस्मात्सर्वा त्मनाध्येयो भगवान भक्तवत्सलः ॥ श्रोतव्यः कीर्त तव्यश्च संसाराब्धितितीर्षुभिः ॥ ५ ॥ संसार सागरे घोरे विषयावर्त संकुले । निमज्योन्मज्जमानस्य हरेश्चरणमास्पदं ॥ ६ ॥ साहानिस्तन्महच्छिद्रं सा चान्धजडमूकता । यन्मुहूर्तंक्षणं वापि वासुदेवं न चिंतयेत् ॥ ७ ॥ तीर्थे वासो गुरौ भक्ति हरौ चात्म निवेदनं । सतां संगंकलौ चेतद्दुर्लभं भुवनत्रिये । ८॥ धिक्तस्य मानुषं जन्मधिगाढ्यं धिक्कुलीनतां । धिग्तस्यदैवंत योवै न करो तिहरौरतिं ॥ ९ ॥

अर्थ-हजारों माता पिता सैकडों स्त्री बेटा संसार

में गये और जांयगे और जांय हैं यह अनुभव किये ॥ १ ॥ हजारों हर्ष के दाता सैकडों शोक के दाता दिन दिन में मूर्ख मोह में पड़े हैं पंडित नहीं पडै ॥ २ ॥ संसार बंधन से मोक्ष को उपाय जानै सो पंडित है और सब स्त्री घर धन चाहना वारे व्यवहारी हैं ॥ ३ ॥ पाखंडी मानी पापी संसार में पडै हैं अनादि अविद्या को आलिंगन करके आत्मा को पात नहीं देखे हैं ॥ ४ ॥ तासे सब ओर से भगवान भक्त वतसल श्रवण करवे योग्य कीर्तन करवे योग्य है संसार तर्वे की इच्छा वारो यही करे ॥ ५ ॥ संसार सागर घोर है सैकडों विषय सोई भंवर तामें जो डूबैं उछरैं अर्थात मरैं जन्मैं तिनको हरिके चरण ही शरण स्थान हैं॥६॥ सोई बड़ी हानि सोई बडो छिद्र सोई अन्धोपनो सोई जडता मूकता जो मुहूर्त अथवा क्षण वासुदेव भगवान को चिंतवन न करै ॥ ७ ॥ तीर्थ में वास गुरूकी भक्ति हरि में आत्म निवेदन संतों का संग यह तीन भुवन में दुर्लभ है ॥ ८ ॥ ताके मनुष्य जन्मको धिक्कार कुलीनता और धनपने को धिक्कार ताके दैवत और यौवन को धिक्कार है जो हरि में भक्ति न करै ॥ ९ ॥

ऐसे उपदेश करते भये देवता की तरह कश्मीर में बसके विष्णुभक्ति प्रवर्त करी वेदान्त सूत्र पर कौस्तुभ नामकी व्याख्या ताकी प्रभा रूप सूक्ष्म वृत्ति करी श्रीमद्भगवद्गीताजीपर ऐसी सुन्दर वैष्णव सिद्धान्त युक्त टीका चारों सम्प्रदाय व भक्त मात्र के शिरोधार वनाई अक्षर मोती सदृश भक्ति के डोरा में पोये भये हरिभक्त पंडित अपने हृदय में हार समान धारण करैं हैं प्रेमकी जग मगाहट प्रकाश पावै है पाण्डित्यकी लावण्यता पंक्ति पंक्ति में झलकैहै क्रमदीपका भगवत अर्चन की विधि का ऐसो ग्रन्थ है कि सब वैष्णवों को जीवन रूप प्रमाणित है फिर कश्मीर से हेमगिरि पर्वत पर गये तहां श्री नारदादिकों की मूर्ति स्थापन करी आप बडे योगाभ्यासी योग मार्ग प्रवर्त करवे वारे आत्म के वलसे समाधि लगावते भये एकसौ दश वर्ष गिरकी गुहा में ध्यान परायण वसते भये जहाँ भगवान निकट रहैं एक समय आप अटन करते करते हरिद्वार पहुंचे तपोबन में नारदादिकन के सेव्य नर नारायण का आश्रम देखते भये कुछ दिन तहां बसे फिर मुक्ति क्षेत्र गये जहां भगवान

कृष्न की हजारों अर्चा मूर्ति है श्रीजनकके आश्रम में होके अयोध्या नगरी गये नैमिषारण्य होके काशीपुरी गये श्री निम्बार्क कुल कमल के सूर्य रूप आचार्य आये सुनके तहां के वासी महाराज के पास आये द्वैत अद्वैत उपाधिक द्वैताद्वैत विशिष्ट द्वैत ये न्यारे न्यारे महात्मा अपने अपने मत प्रतिपादन करवे लगे आत्मख्याति असतख्याति अख्याति अन्यथाख्याति अनिर्वचनीय ख्याति ये पांच ख्याति विज्ञानशून्य मीमांनसा तर्क अद्वैत चारेन के मत में हैं तिन पांच ख्यातियों को निरास करके सतख्याति उपदेश करते भये जो कोई कापिल सांख्य वाद में निरत काणादि नैयायिकी अद्वैत मत अन्धकार में पडे शैव बौधादिक नाना प्रकार के तर्क कुतर्क कर्कश बुद्धि सत शास्त्र के डुबायवे वाले तिनको पराजय करके भगवच्चरण कमल में भक्ति उपदेश करते भये कपिलदेवजी के आश्रम गंगा सागर में गये वंग देशके ब्राह्मण शाक्तगण मत के अनुवृत मत्स्य आहारी घोर कोई कौल मत के अनुवृत तिनको शास्त्र प्रमाणसे जीतके अपने तेजसे हरि भक्ति विस्तार करते भये

फिर नदिया शान्ति पुरमें श्रीनित्यानन्द कृष्ण चैतन्यजी से मिलाप भयो यथा योग प्रेम प्रकास को सत संग भयो गंगा सागर में देव हूती के वेटा के दर्शन करके नीलगिरि होके नैमिषारण्य में आये तहां श्रवण भयो कि मथुरा के विश्रान्त घाट पर म्लेच्छ वडी पीडा दे रहे हैं साधु वाद हैं नहीं आप श्री केशव भट्टजी महाराज चौदह हजार शिष्य लेके मथुरा आये ध्रुव क्षेत्र जहां ध्रुव जी को भगवान ने दर्शन दिये तहां आये मथुरा के द्वारे पर यवनों को वनायो यंत्र देखो ताके नीचे जो हिन्दू जावै सो अंगहीन शिखाहीन प्राय म्लेच्छ होजाय मथुरा वासी भयभीत होके आचार्य के शरण आये आप विश्रान्त स्नान के मिष से यंत्र के स्थान में गये आपके तेज से सब यवन विह्वल होगये सिंह के डर से जैसे मृग भगे तैसे भाग जाते भये यवनों की वडी दुःसह यंत्र रूपा माया नष्ट होगई सूर्य उदय से जैसे अन्धकार दूर होजाय तैसे उनको वल नष्ट होगयो श्री यमुनाजी की आपने स्तुति करी यमुनाजी में स्नान करके आपने यंत्र वनायो ताके दर्शन से ही म्लेच्छ मूर्छित होगये और पुंसत्व छोड के स्त्री होगये तब

यवनों के अधीश असुर भाव छोड के आचार्य के शरण गये उनको बहुत कष्ट देखकर आप श्री यमुनाजी में स्नान कराके आनन्द कर देते भये वे अपने दुष्कर दोष को छोड के हरि भक्त हो जाते भये फिर गोवर्द्धन गिरिराज के दर्शन करके बृषभानुपुर कामवन में गये नन्द ग्राम में जाके नन्दादिक स्थापन करके शेषशायी क्षीरसागर में गये बलभद्र के दर्शन किये ऐसे भूमि परिक्रमा के मिष सब भक्तों को आनंद दियो दुष्टों को दमन कियो ये साक्षात भगवत अवतार इनकी लीला कौन पार पावै कुछ प्रसिद्ध बातें लिखदीं श्री ना भागो स्वामी ने भक्त माल में वर्णन कियो ॥ श्री केशव भट नर मुकट मणि जिनकी प्रभुता विस्तरी ॥ काश्मीर की छाप पापतापक ब्रह्मन्डन । दृढ हरि भक्ति कुठार आन धर्म विटप विहंडन ॥ मथुरा मध्य म्लेच्छ बाद कर बरवट जीते । काजी अजित अनेक देख परचै भय भीते ॥ विदत बात संसार सब संत साखना हिनदुरी । ऐश्वर्य लीला और सम्प्रदाई सिद्धांत भक्तों को तोष देने में बहुत समय खर्च भयो तासे कुछ माधुर्य रस ब्रज राजकुमार मोहन दिलदार और उनके सखा

सखियों के राग अनुराग की बातैं अच्छी तरहसे प्रगट न करसके यद्यपि क्रमदीपिका में सब सखा सखियों की अर्चनविधि वर्णन करी और श्रीमद्भागवत की टीका में ब्रजलीला के सब रस वर्णन किये पर ब्रजलीलाको कोई न्यारो ग्रंथ प्रगट नहीं है अथवा गुप्त होय प्रकाश न पायो अथवा यह चित्तमें आई कि जो ब्रजबासियों के मधुर रस प्रेम समुद्र में बहगये तो फिर उछलनो कठिन होयगो और यह ऐश्वर्य का काम पूरो न होयगो काहे से कि मधुर रस प्रेमके भँवर में पडे भये फिर वहांही उछलै डूबै गोता खावै पर बाहिर न जासकै ऐसो विचारके या लीला प्रगट करवेको एक अपने हृदय रूप अंतरंग शिष्य श्री भट्टजी की प्रेरणा करके उनके द्वारा ब्रजरस उभारो और रस उपासना और भजन की रीति और रसिकों के अनुराग का चलन सब के चित्तमें प्रवेश होजाय सो प्रकाश करायो।

श्रीभट्टजी को चरित्र।

ये श्रीभट्टजी महाराज रसिक मुकटमणि राधा कृष्ण के माधुर्य रूपके उपासी सब जगत के

आनधर्म अन्य वासना से उदासी श्रीनन्दनन्दन वृषभान नन्दनी की प्रेमरासी से हृदय में हुलासी सदा रही इनकी छप्पय में श्रीनाभा गोस्वामीजीने वर्णन कियो । श्रीभट्टसुभट्ट प्रगटे अघट्ट रस रसिकन मन मोद घन ॥ मधुर भाव सम्मिलित ललित लीला सुवलित छवि । हर्षत निरखत प्रेम हृदय आनन्द कलित कवि ॥ भव निस्तारण हेत देत हरि भक्ति सुदृढ नित । जासु सुयश शशि उदय हरत तम भ्रम श्रम चित ॥ आनन्द कन्द श्रीनन्दसुत श्रीवृषभानसुताभजन । ऐश्वर्य माधुर्य्य रसमें और उन दोनों के भजनकी रीति में का भेद है सो या प्रकरण में अवश्य कहनो पडो माधुर्य में श्रीकृष्ण बन्धु समान अपनी जाति पांतिके हैं ऐसो ज्ञान होय है तासें संकोच छोडके एक संग बैठनो उठनो भोजन पान बात चीत होय है ऐश्वर्य ज्ञान में भय विचार दैन्यादि यह सब आजावे है दूर दूर रहनो राजा चाकर की तरह सब काम करनो पडे है फल यह कि माधुर्य में छाती से लगे ऐश्वर्य में दूर होजावे उनके उदाहरण प्रकट हैं—

कंस को मार के जब श्री कृष्ण बल्देव देवकी वसुदेव अपने मात पिता के पास आये तो उनके

कंस चाणरू कुवालिया पीड आदि मारिबे के चरित्र विचार करके श्रीकृष्ण वल्देव को गोद नहीं लियो और वात्सल्यता से प्यार नहीं कियो यद्यपि वे मैय्या वावा कह्यौ किये पर वे सशंक हाथ जोडे अलग खडे रहे श्री कृष्ण महाराज ने विचार कियो कि इनके कैसे भाग फूटे ऐश्वर्य की ओरी जाय टूटे वात्सल्य रस के धन से लूटे वेटा वेटी पने के सुख क्रीडा से छूटे तब सच्चिदानन्द शक्ति वैष्णवी योग माया को आज्ञा दीनी उनने वात्सल्य रस प्रेम को उभारो तव वे सब वात भूल गये गोद में ले रोय वेटा वेटा कहिके छाती से लगाये आंसू वहाये स्तन से दूध वहा उमडो आनन्द महा अब कह्यौ ऐश्वर्य में सुख भयो कि माधुर्य में माधुर्य रसकी जव नदी वढै तो परमेश्वर का वडप्पन और जीव को छोटो पनो दोनों को वहाके समान कर देय है और जिन जिन के हृदय में प्रेम उमडै है ऐश्वर्यको ढांप लेय है प्रीति अल्हादिनी शक्ति है कोई की कान नहीं करै सबको वरावर कर देय है देखो श्री वल्देवजी परम तत्व के वेत्ता जब सुनी कि रुक्मिणी के हरवे को अकेले श्रीकृष्ण जी कुन्दनपुर गये हैं तो छोटे भाई पने को अनु-

राग ऐसो उमडो कि मेरो भैय्या कोट ब्रह्मान्डों को नायक है ऐसे ज्ञाता भी होके मेरे भाई से कोई रस्ता में लड न पडे ताके लिये चतुरंगिनी सेना लेके कुन्दनपुर रातौं रात जाय पहुंचे जो कोई ऐसे कहै कि माया उनके ज्ञान को ढांप लेय है तासे तत्व का विचार नहीं रहै तो उनके अज्ञान पर हंसनो चहिये और दुर्भाग पर रोना चाहिये जिन प्रेम बारों के आगे ब्रह्माकार बृतिवारों का फल सायुज्य मोक्ष तृण समान लगै ब्रह्म ज्ञान जासे माया को अत्यन्त अभाव होजाय सो जिन के प्रेम अल्हाद से नीचे रहे माया पति भगवान जिनके प्रेम प्रवाह में डूबे भये हृदय में लसे बसे रहैं तहां माया कहां पहुंच गयी पर हां भगवानकी माया बडी पक्की है कि जाको वेद शास्त्र पुकार पुकार कर कहैं और बडे बडे महात्मा व्यास शुक सनकादिक चिल्लाय चिल्लाय के रटैं और बडे बडे रसिक भक्तों के सदाचार चले आवैं और अनुमान से भी ठीक जानी जाय है तो भी उनके चित्त में विश्वास नहीं आवै तो भगवान की माया को दण्डवत और उनके दुरदैव को दण्डवत ब्रज में श्री कृष्ण भी सब ऐश्वर्य छोड के बन्धु की तरह

माधुर्य रस अनुभव करते भये और ब्रजबासियेंसो बोले कि (अहंवो वान्धवो जातः) मैं तुम्हारो बान्धव हूं परमेश्वर नहीं पर हमें क्या प्रयोजन हम अपने रस्ता पर चलैं इन श्रीभट्टजी को हृदय ललित लीला के भावसे भरो और भाव मधुर मधुरताभी आनन्दकन्द श्रीनन्द सुत श्रीवृषभानुसुताकी और वे राधाकृष्णभी श्रीबृन्दावन के सोई आपने युगल शतक में कह्यो—

पद—रे मन वृन्दाविपन निहार ॥ विपन राज सीमा के वाहिर हरिहू को न निहार । यद्यपि कोट कोट चिंतामणि मिलैं तदपि न हाथ पसार ॥ श्री भट्ट के प्रभू धूर धूसर तन यह निश्चय उरधार । ब्रजरज जल जंगल डारी पत्ता बन बाग पशुपच्छी कीडा पतंगा सवको रस महाराज को अनुभव भयो तब आप बोले—ब्रजरज मोहनी हम जानी मोहन कुंज मोहन श्रीवृन्दावन मोहन जमुना पानी । मोहन नार सकल गोकुलकी बोलत मधुरे बानी ॥ श्रीभट्टके प्रभू मोहन नागर मोहनी राधा रानी । आप ब्रजलीला के रसमें जो बिखरे तो युगुल किशोरकी कुंजक्रीडा के १०० सौ शतक वनाये उनके गुरू श्रीकेशव काश्मीरी महाराज ने

विचार कियौ कि ये तो प्रेम मदके मतवाले होगये दुनियां के भले बुरे का विवेक नहीं रहा काल कराल कलियुग है ऐसे अधिकारी कहां आपने सब यमुनाजी को सौंपे जो कृपा करके देवैं उनका प्रकाश होय तब श्रीयमुनाजीने सौ पद दिये उनकी युगुल शतक बनी ऐसे कोई न विचार करे सौपद के पत्रा उतराते रहे होयगे कोई ने बीन लिये नहीं उन सौ पद में नित्य नैमित्य की लीला के दोहा के प्रबन्ध से क्रम ठीक बैठजाय याते श्रीयमुनाजी को दत्त जानो जायहै और अपनी वाणीसे भी अनुभव दियो एकदिन बरषाऋतु में श्रीवृन्दावन बिराजे सावन का महीना घुमड घुमड के घटा घनघोर छाई विजली चमकै बादर गरजै हरी भरी हरियाली फूली लता व डाली पेड पल्लव पत्ता पत्ता से जलके मिष प्रेम टपकै मोर की कुहुक दामिनकी चमक बादलकी कडक अपनो रंग दिखावै इन्द्र धनुष को निकरनो मयूरन को नाचनो यमुनाजी की धारा लहरा लहरा के बहै मदसे चकोर चलै बाग बगीचा फरे फूले सूखाके दुख भूले नादियां नारोंको उवटके बहनों गोपिन को मलारराग गानों हिन्डोला झूलवे की आनवान चित्त को आनन्द

देरही वा समय प्रिया प्रीतम के दर्शन की ऐसी आसा उमगी कि मनको पिघलाय दियो विरहकी व्याकुली से यह पद कहा ॥ भीजत कब देखों इन नयना । श्यामांजू की सुरंग चूनरी मोहन को उपरैना ॥ इतनों मुख से निकरो कि भक्त प्रेमाधीन युगुल किशोर वर्षा के जल से सरावोर प्यारी की सूही सारी मोहन को पीताम्बर जल से लथर पथर अंग अंग से जल टपके कुंज की ओर आय ठाढे भये तब बोले ॥ श्यामां श्याम कुंज तर ठाढे यतन कियो कछू मैना उमडी घटा चहुं दिशिते श्रीभट घिर आई जल सेना ॥ दिनरात आपकी हृदयकी वासना व चित्त के भीतर की लालसा एक पदमें प्रगट है दुनिया के सुख दुख से अतीत स्वर्ग नरक अपवर्ग निर्वान पद पर्यंत के राग को खोयके केवल श्री राधा कृष्णकी रूप माधुरी की आरोहणी अव रोहणी यही साधन यही साध्य यही वीज यही फल सब रसिकों को उपदेश करते वोले ॥ बसो मेरे नयनन में दोऊ चन्द । गौर वरण वृषभान नन्दनी श्याम वरण नन्द नन्द ॥ इन भट्टजी की कृपा दृष्टि से अनेक मुमुक्षू जीवों का उद्धार होगयो श्री राधा कृष्ण के चरण कमल को प्राप्त होगये।

श्री हरि व्यासदेव को चरित्र।

अब इनके शिष्य राधा सर्वेश्वर सेवा परायण श्री हरि व्यास देवकी परम अद्भुत चरित्र ज्ञान भक्ति आस्तिक ताको प्रघट करवे वालो वर्णन करैं हैं पहिले इनके बडे गुरु भाई श्री भट्टजी के शिष्य श्री वीरमजी के नाम के रहे उनने सब दुनियाको अपनी चर्या असमंजस दिखायी भृष्ट रहैं मधुरा की बोतल हाथ में रखैं चिता की अग्नि पर रोटी बनावैं तासे श्रीराधा सर्वेश्वर की सेवा श्री हरि व्यास देवजी को सौंपी गई एक समय श्री हरि व्यासदेवजी बडी संत मन्डली संग श्री सर्वेश्वर का डोला अनमोला बडे रंगकी सेवा को साथ लिये एक राजा के नगर में उतरे सो राजा महादुखी सब शरीर में कुष्ट का रोग क्रम पडे कर्मों को भोग भोग रह्यो अनेक यतन वैद्यों ने किये औ- षधियों के समूह भी खर्च किये पर प्रवलपाप की ताप से शरीर को चयनन भयो दुखदायी रोग अंग से न गयो जो दिन सर्वेश्वर भगवान की सेवा सहित श्री हरि व्यासदेव जी ताके नगर में पधारे और संतों की कथा कीर्तन की ध्वनि और

झालर घंटा शंखादि की शब्दावली फैली ता राजा के शरीर में बडो सुख आयो क्रमभी मरगये मनमें परमानन्द छायो सो राजा विचार करै कि आज का अनोखी बात भई कौन सुकृती मेरे नगर में आयो कि मेरो पुण्य उदय भयो अकस्मात मेरे तन मन सुख समूह से भरगयो जहां तहां नगर बाग बगीचा गली कूंचा में हरकारे दौडाये जानो गयो कि अनेक संतनको संग लेके कोई महात्मा आये राजा दर्शन को आयो भगवत भागवतों के दर्शन से हृदय में परमानन्द छायो श्रीआचार्य से अपनो दुख महान रोयके निवेदन कियो आपने कही कि मथुरा ध्रुवघाट पर हमारे वडे गुरु भाई उनके पास जावो तुम सुखी होउगे सो आयो श्री वीरमजी को शिष्य भयो सब दुख गयो भगवद्भक्त कहायो फिर आपनी सो अष्टचर्या वीरमजी ने भी छोडदीनी और भी साधू विरक्त शिष्य भये उनके शिष्यों की प्रणाली के भगवान-दास पूर्व देश दारा नगर में है उनके स्थान के शिष्य संत सेवक शरण बिहारीदास आदिक श्रीवृन्दावनमें अबभी विद्यमान भजन करैहैं पहिले मानदास पंडित भी उनके रहे वा समय बडे समझ

के राधा शरवेश्वर की सेवा भी श्रीहरिव्यासदेव-
जीने उनको सौंपी पर चार पांच दिन सेवा कर
फिर उनको ही देदी. महात्माओं के हृदयको भाव
को समझ सकै तबसे उनको नाम वीरमत्यागी पडो
अब हरि व्यासदेवजी को चरित्र वर्णन करै है.
पहिले जब भट्टजी के शिष्य होवे को आये तब
अनधिकारी जानके श्रीभट्टजीने लौटाये और
आज्ञादी कि बारह वर्ष गिरराज में तप करो तब
गुरू आज्ञा से गिरराज में भजन कियो फिर गये
गुरूजी वृन्दावन की कुंज में लोटे भये दर्शन पाये
दूरसे दण्डवत करी महाराज ने पूछी कि तुमको
का दर्शन होय है श्रीहरिव्यासदेवजी बोले कि
एक गोरी छोरी दूसरो छोरा जाकी सूरत सांवरी
युगल जोरी आपके वक्षस्थल पर क्रीडा कररही
है तब अधिकारी जानके अपने शिष्य किये हरि
आगे व्यास यह नाम धरयौ कातिक बदी द्वादशी
में आपको प्राकट्य है आपके परम आश्चर्य मय
चरित्र हैं जिनके सुनवेमात्र से हरि में भक्ति उत्पन्न
होय जैसे नवयोगेश्वरों के बीचमें विदेह राजाकी
शोभा तैसे संतों के बीचमें आप शोभायमान वेद
पुराण में जो लिखो है कि भगवत जन हरिके आगे

संसारी चालसे निराले जिनके अंग भक्ति भजनसे प्रति पाले उनकी महिमा बडे बडे देवता सिद्ध नहीं जान सकें और उनके शरण लेवे सेजल थल आका श पाताल को रहिवे वालों को भगवत प्राप्ति को मार्ग सूझै है श्री हरि व्यासदेवजी मनुष्य शरीर पर आकाशकी विचारवे वाली देवीको शिष्य करते भये आप जगत के उद्धार को जहां तहां विचरते सर्वे श्वर भगवान को डोला आपके संग एक चढता वल गांव में पहुंचे देवी जी के मन्दिर के पास एक वगीचा हरा देखके मन भर गया जीमें आई कि आज यहां ही राधा सर्वेश्वर भगवान की सेवा होय यहां ही विराजमान होके रसोई पाक होय भोग लगे संतों की कमर खुल गई चौका चूल्हा की शुद्धताई से रसोई होवे लगी ताही समय कोई सकामी कुमार्ग गामी देवी के आगें बलिदा- नी बकरा को माथो काटो लोहू को वहनो और हिंसक कर्म देखके अधर्म निर्दयी जीवों की चर्या से हृदय मर्म दुखित भयो तत्काल शिष्यों को आज्ञा दी कि ततकाल यहां से डोला उठावो कूंच का नगाडा वजावो तैयार सामिग्री कुत्तों को खवावो यह स्थान साधुवों के कमठान योग्य नहीं

श्री महाराज के समाज का यह काज देखके देवी जी ने उदास हो विचार किया कि मेरे स्थान से आज संत और भगवान भूखे विना भोग लगाये जावैं हैं वडो ही अकाज भयो साक्षात मूर्त्तिमान देवी सखिन सहित सामने आई और महाराज से रसोई की प्रार्थना करी आप बोले कि हिंसाद्वेष से वर्जित साधुवो का धर्म है ऐसे स्थल में जल पीने में भी महान दोष है तव देवीजी ने वैष्णवी दीक्षा महाराज से लीनी पंच संस्कार पूर्वक वैष्णव धर्म अंगीकार किये और फिर रात को जायके मुख्य जो गांव को अध्यक्षता की खाट सोवते उलट दीनी और आज्ञा करी कि मैं तो हरि व्यास दास भई जो तुम शिष्य न होउगे तो जान माल से निरास होजावो नाश कर दूंगी तव सब गांव के शिष्य भये हिंसक कर्म छोडके हिंसाद्वेष वर्जित वैष्णव धर्म अंगीकार करते भये स्वयं देवीजी भी सोई धर्म अंगीकार करती भयी श्रवण कीर्त्तन स्मृण पादसेवन अर्चन वन्दन दास्य भक्ति लक्षण आत्म निवेदन फल रूप एक रस भगवत स्मृति जासें हरि नित्य संनिहित रहैं सो शिक्षा सब गांव के पावते भये देवी जी भी सब साधन साध्य वस्तु

जान के मन्दिर को गई सब को आज्ञा दीनी कि कोई कवहूं मांस मधुरादिक मोकों न देय श्रीहरि व्यास प्रसाद से अन्न प्रसाद की मैं अधिकारी भयी श्री आचार्य देवने भी उनदेवी के भक्त और पुजारियों की रुद्राक्ष माला रक्त चन्दन के गोलादिक योग वल से भस्म कर दिये गांव वारे श्री हरि व्यास देवकी शरणागति अभय पायके धर्म अर्थ काम हिंसा आदिक कर्म छोडके भगवत चिन्ह शंख चक्र कंठी माला तिलक धारण कर नवेला रूप पायके विष्णु पार्षद ताको प्राप्त भये घोर संसार भय से छूटगये नवधा श्रवण कीर्तनादिक जानके दशधा प्रेम लक्षणा भक्ति की आशा में लगे एक कोई श्वपच वादिनं दूसरे गांव गयो दो चार दिन में आयो झाड़ू बुहारी देवे को गांव में गयौ घर घर में भक्तों को भजन सेवा के कुतूहल में भरे देखके शंख चक्र, माला तिलक से मण्डित देखके आश्चर्य की बात सबके मुख से सुनी बडो दुखित भयो मैं ही पापी अकेलो वादिन दूसरे गांव चलो गयो मोको आचार्य दर्शन कैसे होय मैं श्वपच दुराचारी सब धर्म से मेरी व्यक्ति न्यारी मोको आचार्य दर्शन कैसे होय मो पापु

कर्मी को गांव वारेन ने भी त्याग दियो ऐसे विचार कर बगीचा के पास ऊंचे आर्त स्वर से चिल्लाके रोवतो भयो सुनके आचार्य भगवानने पूछी कि यह कौन है अति दुखारी रोवे है अति दुखी जानके कृपा कटाक्ष से ताको देखके आप बोले कि याको मेरो प्रसाद देउ ऐसे कहि अपने शिष्य के हाथ पहिले सर्वेश्वरउच्छिष्ट फिर आचार्यउच्छिष्ठ अन्न प्रसाद ताके पास भेज्यो सो प्रसाद पायके अति शुद्ध होगयो सब विश्व ब्रह्मात्मक देखके और अपनी आत्मा में ब्रह्म निष्कल देखके तत्व को प्राप्त भयो आचार्य देव कुछ वर्ष तहां बसके भक्ति भाव से ता देशको पूर्ण करते भये श्री निम्बार्क भगवानकी दश श्लोकी पर परम रसमय रत्नाञ्जलि भाष्य महाराज ने करी और राधाकृष्णकी अष्टयाम सेवाको अद्भुत ग्रन्थ बनायो आप विद्या उपासना में बडे धुरन्धर होते भये जैसे भरतजीके प्रताप से यह अजनाभखंड भरतखन्ड विख्यात भयो तैसे ही निम्बार्की प्राय हरिव्यासी विख्यात भये आपकी छप्पय श्री नाभा गोस्वामी ने भक्तमाल में वर्णन करी—

श्री हरिव्यास तेज हरि भजन बलदेवी को दीक्षा दई। खेचर नरकी शिष्य निपट अचरिज इय आवे ॥ विदत वात संसार संत मुख कीरत गावै। वैरागिन के बृन्द रहत नित श्याम सनेही ॥ नव योगेश्वर मध्य मानौं शोभित वैदेही। श्री भट्ट चरण रज परस के सकल सृष्टि तिनको नई॥ आपके शिष्य असंख्यात पर ये बारह विद्या में धुरंधर प्रसिद्ध होते भये श्री मत्स्वयं भूदेवजी, वोहित देवजी, श्री हृषी केशजी, श्री माधवदेव, जी श्री चन्डीदेवी जी, श्री लपरा गोपालदेवजी, श्री परसराम देवजी श्री केशवदेवजी, श्री बाहु बलदेवजी, श्रीगोपालदेवजी, श्रीमदनगोपालदेव जी, श्री उद्धवदेव जी, एक दिन आचार्य सब शिष्यों को बुलाके प्रसन्न मन से पूछते भये कि मेरे पास जो सर्वेश्वर भगवान की सेवा सनकादिक भगवान से लेके परम्परा से चली आवै है या सेवा को कौन धारण करैगो अर्थात् पूर्वके निज दैशिक नारदादिक जैसे धारण करके सेवा करते आये ता रीतिसे कौन सेवा करैगो यह सुनके सब चुप विचार करवे लगे और बोले कि यह परसराम देवजी अधिकारी और कृपा पात्र हैं यह सुनके श्री हरि व्यासदेव ने श्री

राधा सर्वेश्वर की सेवा तिनको समर्पण करी परम्परा से सेवा उनके पास आई तासे पहिले उन को चरित्र वर्णन करैं हैं ॥

श्री रूप रसिक को चरित्र ।

एक महा अनन्य श्री हरि व्यासदेवजी के शिष्य श्री रूप रसिक उनको अनोखा वृतान्त सो भी या प्रकरण में अवश्य कहनो पडो यह श्री रूप रसिक जी दिन रात हरि व्यास हरि व्यास ही रटो करते मथुरा में श्री महाराज के शिष्य होवे को आये तव तक श्री हरिव्यास देवजी अन्तर लीला में पधार गये बडो विरह भयो जीव न दुर्लभ विश्रान्त घाट पर तीन रात दिन विना अन्न जल व्याकुल पडे रहे जब हरिव्यासदेव के दर्शन होंय तब चैंन होय मन सन्तोश पावै वेद पुराण में प्रसिद्ध है कि हरिजन सदा सर्व काल एक रस विराजे है इनकी विरह व्याकुली ओर चित्तकी दृढता देखके श्री आचार्य राय प्रगट भये मंत्र देके शिष्य किये पंच संस्कार तापपुंड्र माला कंठी नामादिक से मन्डित कर दिये उन रूप रसिकजी को बनायो हरि व्यास यशामृत बडो

सुन्दर ग्रन्थ है उनके लिये श्रीहरिव्यासदेवने महा वाणी प्रगट करी जामें पांच सुख हैं केवल वृन्दावन नित्य विहारी की श्रृंगार रसकी लीला और राधा प्यारी की कुंजक्रीडा से भरी है नित्य नैमित्तक लीला करके जटित हैं सिद्धान्त सुख में रास विहारी सर्वोपर परम तत्व वताये सेवा सुखमें अष्ट पहर की सेवा को क्रम गायो और होरी दीपावली आदि नैमित्त उत्सव के सुख हैं पद दोहा प्रेम प्रबन्ध के भरे सब शास्त्र के सम्मत रसिकों के आनन्द मूल हैं सखी भावके सेवाके अधिकारियों को जीवन आधार सब तत्व उपासना को सार है सोई कह्यौ—कौने में करवौ करैं घुचपुच घुचपुच चोर। रूप रसिक हरिव्यासकी चौराहे में ठौर॥ श्रीहरि व्यासदेवजी के निकुंज महल को नाम श्रीहरिप्रिया है श्रीभट्टजी को नाम हितु है, ऐसे सनकादिक भगवान से लेके सब आचार्योंके महल निकुंज के नामों की परम्परा न्यारी है पर रहस्य वात गुप्तही भली महा वाणी में राधा रहस्य प्रकाशिका में सनकादिक संहिता में सम्मोहनी तंत्र में सुधर्माध्व वोधमें कुछ कुछ प्रकाश भी किये हैं महावाणी के पद वडे ललित रसमय है।

परशरामदेव को चरित्र।

अब श्रीपरशरामदेवजीको चरित्र वर्णन करें हैं यह महाराज भादों महीना कृष्न पंचमी को प्रगट भये पश्चिम देश मारवाड में एक सलेमशाह यवन फकीर रहतो वाके वशमें जो कोई हिन्दू साधू पड जातो तो ताते चिमटा से दाग कर कर भारी दुर्दशा करतो बहुत साधू ताके ताडे मारे मथुरामें श्रीहरिब्यासदेवजी पर पुकारे, महाराज शिष्योंकी ओरी देखके बोले कि कौन जावै वाको दन्ड देके साधुन को सुख बढ़ावै और वाकी ढिठाई को मिटावै सब बोले कि तहां केवल विद्याही को काम नहीं विद्या भी होय सिद्धाई भी होय तासे परसरामदेव जावैं तब आप पश्चिम मारवाड देश गये सब मनुष्य पातकी देखे देश म्लेच्छ प्राय करके व्याप्त देखो म्लेच्छ तहां को राजा तहाँ एक स्थान ताको मालिक सलेमशाह फकीर सो हिन्दू साधून को महा दुखदाई यवन राजा को बडो माननीय रह्यो श्रीपरशरामदेवजी ताके आश्रम में जायके वाके पात्र तोड आये अग्नि बुझाय मलमूत्र से भ्रष्ट कर दियो आश्रम भ्रष्ट देखके वाको बडो क्रोध आयो।

बडो शोर मचायो कौन ने यह उपद्रव फैलायो मेरे से विद्या में विशेष कौन आयो दूसरे दिन फिर आप गये मूत्र करवे लगे सो क्रोध करके आयो अबही भस्म करदूं यह दुर्वाद सुनायो पीछे से पीठ पर एक थाप मारी आप ने उठे दूसरी थाप मारी जितनो बुद्धिवल तासे आसुरी माया फैलाई जब तीसरी थाप मारी तब पीठ पर चपक गयो बहुतेरो अपने इष्ट को स्मृण कियो पर कुछ बल न चल्यो दो सिद्धि ताको रहीं सो दो थाप में बीत गयीं अपनो बल वृथा देखके शर्म वाध राजा को छोड के महाराज के शरण गयो और दन्डवत कर पश्चिम दिशा को चलो गयो और यह कह गयो कि—

जो आप सच्चे फकीर हो और यहां वास करो और गांव वसावो तो मेरे नाम से बसावो फिर आपने तहां गांव वसायो सलेम आवादना मधरैं सर्वेश्वर भगवान को मन्दिर बन्यो भगवत सेवा भागवत सेवा बडी धूम से होवे लगी भूखे मात्र को अन्न जल मिलै सलेमशाह भी तहां आय के शरीर छोडतो भयो ताकी कवर बनी राधा सर्वे श्वर की प्रसादी बीडी माला चादर ताकी वकर

पर जाय है कोई ब्राह्मण जिज्ञासू तत्व की जानबे की इच्छा से कोई गुरू के शरण गयो गुरू ने शिक्षा सूत्र कटवाके भक्ति रहित सुस्क ज्ञान उपदेश कियो पर वाको मन प्रसन्न नं भयो फिर श्री परशराम देवजी के पास आयो आपने शुद्ध भक्ति उपदेश कर पंच संस्कार कर दिये परम तत्व श्री राधा कृष्ण की उपासना श्रवण कीर्तना दिनवधा भक्ति बताई और वरदान दियो कि तुम तत्व वेत्ता होजावगे भक्ति मार्ग मेरी आज्ञा से माडवार देशमें प्रवृत करो उनको तत्व वेत्ता नाम भयो वे गुरू की आज्ञा से सब काम करते भये इन के दोहा पद वड़े मनोहर है सोई कह्यो ।

दो०-तत्व वेत्ता तिहुलोक में, भोजन किये अपार।
कैसे वरीके विदुर घर; रुच मानी दो वार ॥

एक दिन पहिले गुरू के पास चले गये उनने दूसरो रंग देखके एक घडा जल से भरा उनके माथे पर धरा कि अपने नये गुरू के पास ले जावो उनको अभिप्राय कि इनके हृदय कुंभको हमने पहिले भरदिया तुमने का नयो काम कियो आप परशरामदेवजी चौकी पर विराजै भगवत प्रसादी बतासे वा घडा के जल में छोडते गये जब जल

मीठो होगयो तब घडा उन्हीं के साथे धर पहिले गुरू के पास भेज दियो और यह जतायो कि तुमने फीको जल भरो हमने मीठो कर दियो ऐसे सब देशको श्रवण कीर्तन पाद सेवन विष्णु स्मरण भक्ति धर्म सिखाये शंख चक्र माला तिलक से मण्डित कर पार्षद कर दिये सोई नाभाजी ने भक्त माल में कह्यो ॥ जंगली देशके लोग सब परशराम किये पार्षद । ज्यों चन्दन की पवन नीम पुन चन्दन करई ॥ बहुत काल तम निवड उदय दीपक जिम हरई । श्रीभट्ट श्री हरि व्यास संत मार्ग अनुसरई, कथा कीर्तन नेम रसना हरि गुण उच्चरई ॥ गोविन्द भक्ति गदरोग गत तिलक दाम सद वैद्य हद । आपने एक बडो ग्रन्थ परसराम सागर बनायो जाके वेदान्त वाक्य बडे गुह्य अर्थ वारे वैराग के भरे अर्थात प्रेमास्पद ममतास्पद अहंतास्पद सबको छोडके सब जगत ब्रह्मात्मक देखे ताको कहूं भय नहीं जो जो या जीव को धन स्त्री पुत्रादिक अति प्यारो है सो अनादि अविद्या को कियो जीव को बन्धन रूप है तासे सबको त्याग के राधा कृष्ण के चरण कमल में अचल मन धारण करै सोई आपने साखी में कह्यो ॥ माया लगी न मन

सगो सगो न यह संसार। परशराम या जीवको सगो एक सरजन हार॥ यह वचन सुनके कोई महंत परीक्षा करवे वारो बोल्यो कि तुह्मारो यह कथन है तो ये हाथी घोडा आदि माया को वैभव क्यों रखो हो आचार्य बोले कि यह माया ही हमारे पीछे डोले है हम संग्रह नहीं करै तव वादी वोल्यो कि मेरे साथ आवो एक कोपीन कमंडल से ताके साथ हो लिये नागेश्वर पर्वत की गुहा में दोनों भगवत ध्यान में लग गये तीसरे दिन महन्त परीक्षक बोले कि हम भिक्षा को जावेंगे आप यहीं विराजे रहे जब तक वे भिक्षा करके आवें कोई धनिक वनजारो बडो वनज वारो आपको शिष्य वा पर्वत पर आयो ताको नियम कि विना वैष्णव भोजन करांये भोजन न करै नौकर चाकर साधू ढूंढवे को गये तहां स्वामी जी के दर्शन होगये पर मानन्द भयो वही राजसी वैभव हाथी घोडा चमर छत्रादि सब ठाठ जम गयो जब परीक्षक ने दर्शन किये दुरत्यय महिमा देखके आचार्य चरण में दण्डवत करतो भयो ऐसे अनेक चरित्र आपके लोक प्रसिद्ध हैं वही सलेमाबाद में श्री परशरामदेवजी की गद्दी तहां श्री राधा सर्वेश्वर भगवान ठाकुर

सनकादिक भगवान से लेके परम्परा के पूज्य विराजे हैं सब निम्बार्क सम्प्रदाय वारिन को पूज्य गद्दी है यद्यपि पुरानी गद्दी तैलंग देश वैदूर्यपत्तनमें श्रीनिम्बार्क भगवान के प्रगटे स्थान में है पर श्रीसर्वेश्वर भगवान के विराजवेसे और निकट करके हरिव्यासियोंको यहभी माननीयहै परशुराम-देवजी से पीछे या गद्दी पर बडे बडे महानुभाव प्रतापी सिद्ध विद्यानिधि आचार्य होते आये उन सब की श्रीजी यह संज्ञा चली आवै है उनके नाममात्र लिखे हैं—श्रीपरशरामदेवजी के शिष्य श्रीहरिवंश देवजी, तिनके शिष्य श्रीनारायणदेवजी; तिनके वृन्दावनदेवजी, तिनके श्रीगोविन्ददेवजी, इन्हीं की छाप रसिक गोविन्द है, इनके पद बडे प्रेम भरे हैं।

ये कन्हैया बेवफा तुम नेक दर जानी नहीं।
कारी घटा किस कामकी जहां प्रेमका पानी नहीं॥
उन श्यामकी शोभा नहीं जहां राधिका रानी नहीं।
करना न उसकी चाकरी जिसको दया आनी नहीं॥
श्रीरसिक गोविन्द बिन रस रीत कुछ जानी नहीं।
इत्यादि तिनके शिष्य श्रीगोविन्द शरणदेवजी, तिनके श्रीसर्वेश्वर शरणदेवजी तिनके श्रीनिम्बार्क

शरणदेवजी, ये महाराज वृन्दावनमें श्रीराधासर्वेश्वर भगवान को यमुनाजी के सर्वेश्वर घाट पर स्नान करायवे को लेगये आपको आकार चनाकी दाल बराबर है काहे से कि भगवान (महतो महीयान लघुतोलघीयान) अर्थात् बडों से बडे छोटों से छोटे इच्छारूप विग्रह आचार्य के विरह प्रेमकी परीक्षा से जगतकी शिक्षा के लिये कि अपने इष्टमें ऐसो प्रेम करनो चाहिये, यमुनाजी में गोता लगाय गये तबतो आचार्य बडे शोक में पडे कुछ न सुहाय अन्न जल त्याग दियो तीन दिन पर्यंत विरह की व्याकुलीसे रोतेरहे तब दयामय भगवानने स्वप्न दियो कि मैं मथुरा के एक वृक्ष जो यमुना के जल में है ताकी जडमें गुलाब के फूल पर बैठो हूं फिर आचार्यराय वडी धूमधाम गाजे बाजे से चमर छत्र सहित ले वे गये जब आये तिनके ब्रजराज शरणदेवजी, तिनके श्रीगोपेश्वर शरणदेवजी जयपुर के राजसे लाख रुपया सालाना की जीविका श्रीराधासर्वेश्वर के से बाकी रही पर जब रामसिंह राजाने सब वैष्णवों को रुद्राक्ष और भस्म और शैवी तिलक देवे को आग्रह कियो तब ये श्रीगोपीश्वर शरणदेवजी परम अनन्य महान पण्डित

११ दिन शास्त्रार्थ कर जीतके औ नगाड़ा वजा के चले आये श्रीगोपीशरणदेवजीके श्रीघनश्याम शरणदेवजी; तिनके श्रीबालकृष्णशरणदेवजी, जो अब विद्यमान हैं एक समय राजा जयपुर ने सब स्थान वारे संत महंतों के व्याह करादेनो विचारो और बहुतों के करादिये जब इन आचार्यों से कही तब आचार्य ने उत्तर दियो कि राजा पुरुषों के विवाह होंय हैं हम सखी हैं हमारे का विवाह होंयगे और परचय देके प्रतीति करादीनों तासे इन सबकी श्रीजी संज्ञा चली आवै और या सम्प्रदायको मुख्य दास मिश्रित सखी भाव है तासे भी श्रीजी संज्ञा पड़ी या गद्दी पर जो आचार्य परम्परा से विराजे उनके गृहस्थ विरक्त असंख्याति शिष्य हैं कौन गणना कर सके देश देश चारों दिशा में फैलरहे हैं जिनके प्रसिद्ध चरित्र कुछ जाने गये तिनको लिखे हैं—

श्रीश्यामदासजी को चरित्र।

श्री निम्बार्क शरण के शिष्य श्रीश्यामदासजी पहिले तहां अधिकारी रहे, फिर ब्रजमें आके मधुकरी वृत्तिसे भजन करते भये बारह वर्ष नन्द-

गांवके दोमन बनमें २४ वर्ष बरोली के श्यामढांकमें बारह वर्ष बरसाने के गह्वरवनमें रहे शेष आयु कुसुमसरोवरकी श्यामकुटी में व्यतीत करी बडे रसिक तेजस्वी स्वरूपवान वैराग्य परिपूर्ण दोमनवन में तीन दिन भूखेरहे अनुरागमें भरे भिक्षाको न गये भक्तकी पीर जानके श्रीजीने दर्शन दिये और जल अंगा कर्डा देगईं एक दिन वरसाने में धूपके कारण से भिक्षा को न गये चिकसौली से एक गोपी रोटी माथे पर धरे आवते देखी विचारचौ कि याही से कुछ मधूकरी मांग लैंयगे सो तनक खेत में बैठगई आपने जानो कि रोटी लिये शौचको बैठी है मन बिगड गयो सो पास में आई बोली कि मोसे मधूकरी मांगवे को मनमें संकल्प करके क्यों न मांगी मैं तुम्हारे भावके परीक्षा को बैठगई तब रोये वाके चरण परे वैराग ऐसो कि एक महात्मा के पास नित्य सतसंगको जाते सो पूछते कि प्रशाद पाये तब आप हां कहि देते एक दिन कुछ नहीं पायो आपने जानी कि वे पूछैंगे तो झूठ बोलनो पडेगो उनके द्वारे खरबूजा के बीज परे उनको ही खायके गये उनने पूछी बोले हां प्रशाद पाय आये कोई दूसरे देखन वारे महात्मा ने यह व्यवस्था कही

तब वे महात्मा बडे रोये और इनको छाती लगाये श्याम ढाक में रहे अकाल पडो भिक्षा न मिलै आपके पास बहुत द्रव्य आयबे लगी ब्रजवासियों से कुन्ड खुदाये और नित्य मालपुवा खवाये ऐसे तेजस्वी और प्रतापी कि यवन अंग्रेज भी उपदेश मानलें उनके कई शिष्य एक चूडी वाले राधाकृष्ण दास महा विरक्त निष्किंचन एक बायें हाथ में चूडी बांये नेत्र में कज्जलरा सादिक में श्री किशोरीजी के ओरी सिंघासन के पास ठाढे होय सदा बरसा ने बृन्दावन वास मधुकरी भिक्षा से चित्तको हुलास श्री राधा प्यारी के अनन्य चरण की आस अपने गुरू श्याम दास को नाम भी श्यामादास बोलैं ॥ दूसरी यमुना बाई श्री यमुना कनारे कुटी बांस की बनाके रहै और यमुनाजी काट करे तब दूसरी बनावै ऐसे पांच कुटी बनाई कोई स्त्री पुरुष से परशन करैं स्वयं पाकी संसारी कलुष उनको नहीं लगो बडी बडी रानी भक्त उनके पांव पूजैं सत संग करै सब जीव मात्र पर दया सबको आश्वासन सबसे मधुर बोलन ॥ तीसरे दामोदर दासजी पर महंस घरको वैभव छोड वैराग्य कियो परम काष्ठा बृन्दावन में एक कोपीन मात्र वस्त्र

मौन अयाचक जाडे गरमी वर्षा में उग्र रे विचरैं था वृत्ति से वरसों विचरे ऐसीही वृत्ति से चारों धाम गये मुरलीधर की सेवा हाथ में श्रीरंगजी के वाग में वहुत काल निवास कियो वडे प्रतिष्ठित तेजस्वी बडे बडे राजा बाबू चरण पलौटे विष्णु सहस्रनाम की भाषा भाष्य आपने जीवों के उपकार अर्थ सरल बना मुद्रित कराके बरताय दीनी भक्तों ने वडे सुख पाये इनकी कृपा पात्र पूर्णा वाई चेली कथा कीर्तन भगवत भागवत सेवा परायण अवभी बृन्दावन में विद्यमान हैं और श्री श्री श्यामदास जी के चेला नरोत्तमदासादिक महात्मा भये।

श्री पन्डि नृसिंहदास को चरित्र।

श्री गोपी शरणदेवजी के अधिकारी लालदास जी तिनके शिष्य श्री माधवदास जी उनके शिष्य पन्डित नृसिंहदास जी ये एक अनुपम महात्मा इनके विद्यार्थी बडे वडे कथकड पन्डित भये वडे विद्वान भी वालक वतनिर भिमान ब्रज वृन्दावन को एक पल वास छूटै सो बडी हान ऐसे जानके कबहूं एक पैंड ब्रज बाहिर न गये ब्रज बासिन की मधुकरी भिक्षा अमृत वत भोगैं यही चित्तको

शिक्षा करी यद्यपि गौड ब्राह्मण कुलमें जन्म पर जाति अभिमान तिनका समान तोड कर एकादश के श्लोक की चर्या करी-न्यस्यजन्मकर्मभ्यां वर्णआश्रम जातिभिः सज्जतेस्मिन्नहं भावोदेहवै सहरेर्प्रियः ॥ अर्थ—जाके अच्छे जन्म कर्म वर्ण-आश्रम जाति करके या शरीर में आसक्ति न होय सो भगवान को प्यारो एक दिन वृन्दावन से बरसाने होरी दर्शन को जाते एक पंडित संग पियाससे चित्त भंग भयो खेत काटै ब्रजवासी उनकी कोरी घडिया जल भरी देखके मन ललचायो जल लेवे को पंडित पठायो उसने जाके जाति पूंछी चमार सुनके मन पछतायो खाली लौटके महाराज को वृतान्त सुनायो आप बोले कि तुमको पानी को भेजें कि जाति निर्णयको रासलीला के परम उपासिक पंखा नूपुर बांधने, सब सेवा स्वरूपों की अपने हाथ से बडे प्रेमके साथ करैं ब्रजवासिन के अन्न से बडे राजी कोई बाहिर को रजोगुणी दर्शन सेवाको जो आजाय तो वाके सामने बावर पने व कंगाली की ऐसी बात बनावै कि सो अति अश्रद्धा करके चलो जाय और महाराज को पीछो छुटजाय कोई बालक भी कथा बांचतो होय या

भगवत चारित्र के कोई कवित, चौवोला, दोहा; चौपाई; कुछ गातो होय अवश्य सुनके मनको मोद बढावैं शरीर त्याग समय अपने परम प्यारे शिष्य पन्डित केशवदेव से नाम, धाम; लीला; रूप परिकर इन पांचकी कथा सुनते सुनते तन त्याग कियो सव शिष्यों में उत्तम एक उनके विद्या व मंत्र दोनों के शिष्य भागवत भूषण पण्डित केशवदेवजी शर्मा अवभी श्रीवृन्दावन में विद्यमान हैं श्रीमद्भागवत कथा के वक्ता एकही हैं निम्वार्क सम्प्रदाय गौड सम्प्रदाय के रहस्य शास्त्र और प्राचीन रीति के ज्ञाता इनकी सदृश अव कम हैं भजनानन्द साधून में प्रीति भक्ति के सव अंग पूर्ण पहिले जन्म के साधू अवभी प्राय साधू ही हैं इन की माता के संतान नहीं एक वडे महात्मा इनके घर भिक्षा को आते उनसे दुख रोयो उनने दशवें महीना बेटा होवे को वरदान देके उनको संशय खोयो अपनी कुटिया पर जाके तीन दिन एक आसन बैठे चिंता भरे तन त्याग कियो भिक्षाको तीन दिन न आये जानके माता ने साधुवों से समाचार लियो वेई महात्मा इनके माताको वरदान पूर्ण करवे को केशवदेव रूप से प्रगट भये वेणुगीत रास

पंचाध्यायी उनको पाठन मनन में बहुत प्यारे सोई इनने भी हृदय में अति प्रीति से धारे यह पहिचान है इनके रचे संस्कृत ग्रंथ भी आनन्द वन माला आचार्य चारित्र अर्चन पद्धित आदिक है भगवत मूर्ति की सेवा की विधि भाषा में एसी सुगम्य कर दी है कि जो महा अबोध पुजारी ताको देखके पंच कालकी सेवा में सुबोध होजाय और अपनो काम शोध लेय ।

श्री हरि प्रिया दास को चरित्र ।

यही श्री परशराम गद्दी के शिष्य पन्डित श्री हरि प्रिया दासजी पडोना वाली कुंज में विराज मान श्री बृन्दावन में अबभी विद्यमान हैं बडे सदा चारी स्वयं पाकी भगवत सेवा में प्रेम भर पूर स्त्री आदि प्रपंच से दूर शास्त्र अवलोकन विद्या को दान याही ज्ञान में आयु को सन्मान कियो

समुदाय के चरित्र ।

नृसिंहदास महंत अखाडे के यद्यपि अखाडे वाले पर ये महाराज बडे सुशील रास विलास के प्रेमी भजन की सद्गति राखे है वैष्णवों में सद भाव है जयपुर में झूमरलाल वैश्य परम भागवत संत

सेवी भये अबभी उनके [illegible] शुदि [illegible] निम्बार्क भग वान को उत्सव होय है ॥

चिम्मनसिंह करोली के रईस अब वृन्दावन वास करै है कथा कीर्तन यथा शक्ति वैष्णव सेवा भी करै हैं।

श्री हरि व्यास देवजी के शिष्य लपरा गोपाल ये अपने गुरु देवके आगे भगवत वार्ता जल्दी जल्दी झूठी सच्ची बोलबे लगे गुरु जी के मुखसे निकर गई कि तू बडो लपरा है तासे लपरा गोपाल नाम पडगयो इनकी शिष्यादि परम्परा में अनेक महात्मा भये पर वर्तमान काल सम्वत १८०० से १९७८ के बीच में श्री गिरधारी दास ब्रह्मचारी बडे प्रसिद्ध भये।

श्री गिरिधारीदास को चरित्र।

परमेश्वर ने भजन को प्रताप स्वतंत्र दिखायबे को वृन्दावनमें इनकी व्यक्ति रची प्रगट में विद्या को एक अक्षर नहीं जानै पर सब विद्वानों की अग्रणी रहनी श्री भागवत के पाठ करावनो नित्य भावसे रास विलास होनो भगवत सेवा वृन्दावन के सब उत्सवों में सहायता वैष्णव ब्राह्मण के भो-

जन ऐसे परमार्थ के सब काम में निपुण उदारता दया यह विग्रह में भर पूर अपूर्व भागभूर के महात्मा भये रास लीला के ऐसे भाविक कि ऊखल बन्धन और उद्धव आगमन ये आपके चित्त पर सही न जांय आपके आगे रासधारी करे कैसे जाय ऐश्वर्य प्रताप ऐसो कि सत्ताईस राजा आपके चेला और उनसे बिना सारा कहे बात न बोलें पहिले गवालियर वारे जियाजीरावने आपके लिये मंदिर बनवायो रास विलास भगवत भागवत सेवा सप्ताह पाठ यह सब यथा योग्य ठाठ जमायो और सवाई माधवसिंह जयपुर वाले महाराज को जयपुर के राज पायवे को बरदान और गोपालजी की भक्ति को बरदान बालापन में ही देदियो बहुत काल पर्यंत वृन्दावन में विराजमान रहकर वैष्णव धर्म की उन्नति करी जब वर्ष भर अंतर्ध्यान होवे में बाकी रह्यौ तो सब वैभव छोड राजसी माया को चित्त से तोड गरुडगोविन्द और वृन्दावनके बीच जंगल में जा विराजे दिन भर एक पांव से ठाढे रहे वृन्दावन के पंडित लोग दर्शनको गये उनसे आप बोलते भये कि सूर्य उदयाचल से अस्ताचल में फिरगयो पर गोपाल को दास नहीं

फिरौ वहांही शरीर त्याग कियौ वहां श्री गोपाल-
जी का मन्दिर बनके गोपालगढ नाम पडो उनके
कृपापात्र सवाई माधवसिंहजी अवभी जयपुर में
विद्यमान हैं श्री भागवत व गंगाजी और श्री-
राधिकाजी इनमें बडी प्रीति गोपालजी जो गुरूजी
ने इनके गले से बांधे उनको सरवस्व करके राखे
वैष्णव सेवा भी बहुत करी एक समय की बात
कि चक्रवर्ती राजाके बुलाये भये विलायत को चले
अढाई सौ आदमी संग जहाज पर वैठ समुद्र के
जलमें चले बीचमें जहाज भँवर में परो मल्लाह
चिल्लाये कपतान डेरो राजा से बोले कि छोटी
किश्ती पर अपने प्यारे दश पांच आदमी लेकर
उतर जावो जहाज डूबैगो अपनी जान बचावो
और लोगभी बोले कि हां अन्नदाता जो आप
बच जावोगे तो हमारे बाल बच्चों के अन्न वस्त्रा-
दिकनसे रक्षक तो बन जावोगे राजा बोले कि सभी
हमारे प्यारे कौनको लेजांय कौनको करैं न्यारे
ऐसे कहि गोपालजी की सेवा वारी कोठरी में
भीतर से किवाड लगा सोय रहे बहुतेरे लोग रोये
चिल्लाये पर आप मनमें कचाई न लाये थोडी देर
में गोपालजीने कृपा करी जहाज भँवर से बाहिर

आयो खेवटिया कप्तानादि घबराये भयों ने चैन पायो सब के हृदय में सुख छायो राजा को सबने भलो मनायो एसो दृढ विश्वास गोपालजी पर जगत नेगुण गायो ब्रह्मचारी जी को गद्दी पर वृन्दावन में श्री कृष्ण शरणदेव अब भी विहारीदासजी के शिष्य विद्यमान हैं।

कृष्णादास ब्रह्मचारी को चरित्र।

और भी लपरा गोपाल की गद्दी के शिष्य गंगा किनारे काले कांकर में श्री कृष्णदासजी ब्रह्मचारी भये बडे प्रतापी दर्शन परम मनोहर और पुनीत गंभीर बुद्धि देशके देश भागवत सुधापान करायके पावन कर दिये पूर्वके जीव बडे कठोर तिनको भक्ति के भाविक कर दिये आप बडे सुशील उदार कथा बांचे जो भेंट आवे ताको भन्डारो कर देंय साधू ब्राह्मण को भोजन करादेंय अखन्डित ब्रह्मचर्य बहुत ठौर दुष्टों को परचय भी दिये बहुत काल वपुधार के जीवों के उद्धार के उपाय में रहे उनके शिष्य राधिका दास अबभी वही परिपाटी पर चलैं हैं श्री बृन्दावन में भी उनके कई शिष्य मधुसूदनदास घनश्यामदास आदिक विरक्त महात्मा निशादिन भजन परायण विराजै हैं।

श्री घमन्डदेव जी को चरित्र

श्री हरि व्यास देवजी के शिष्य श्री वोहित देव जो इनके शिष्य घमन्डदेवजी भये ये कुछल कि-शोर के घमन्ड में भरे रहते पहिले जो रास लीला श्री राधाकृष्ण ने करी सो फिर अब इनने प्रगट करी एक दिन रास विहारी और राधा प्यारी को रास ध्यान में देखते भये श्री कृष्ण व वृषभान दुलारी वनान्तर में निवास करैं कवहूं श्री राधा कवहूं श्री कृष्ण परस्पर मान करैं कवहूं नृत्य करते श्री राधा श्रान्त होजाय कवहूं श्री कृष्ण थकजांय परस्पर मीठी २ बातें करैं परस्पर गोद भरैं अनेक गोपनारी सहित वनमें विचरैं नृत्य करैं गावैं कर स्पर्श कर गीत संगीत में तत्पर होजांय रास वि-लास में रमण करते ऐसे हरि प्यारी को देखके संभ्रम चित्त होके बडे प्रसन्न भये प्रेमानंदकी नदी में लहरैं लेवे लगे रास मन्डल में पुलकित देह होके अपनपो भी भूल गये तिनके ऊपर श्री राधा की कृपा भयी मंगल दाता श्री कृष्ण हाथ पकड कृपा से बोले कि पहिले जो मैंने रासलीला करी सो अब फिर प्रगट करो जितनी पृथ्वी पर मेरी रास संबधी लीला हैं वेरास क्रीडा अब फिर फैल

जावै ऐसे गाढ ध्यान में श्रीकृष्णकी बातें सुन के चौंक पडे परमभक्ति परायण रास उत्सवको मन करते भये बारह वर्ष की अवस्था के ब्रज बालकों को आदर पूर्वक श्रीराधाकृष्नको स्वरूप बनावैं और बालकोंको ललिता विशाखा आदिक सखियों का शृंगार करैं सब सखी अपनी अपनी सेवा में तत्पर रहैं ऐसे श्रीराधाकृष्न सखिन सहित रास-लीला करते भये या लीला अनुकरण के दर्शन से सब रसिकों को साक्षात लीला जानी पडी अद्भुत सुख पायके बडे प्रसन्न भये और आप भी मोद भरे अपनपे को कृतार्थ मानते भये भगवत कृपा से अकस्मात आपको भागवानही के दिये मुकट-चन्द्रिका प्राप्त भये आपने करहला के ब्राह्मणों को दिये वा मुकट के प्रताप से ब्रजबासी रासधारी अनेक मन्डली बनायके रासलीला प्रकाश करते भये सो मुकट करहलाके एक मन्दिर में विराज-मान हैं नित्य आरती उतैरें सब दर्शन करैं गांव में श्री घमन्डदेवजी के समाधिमें रास मन्डल है अब भी जो रासधारी परदेशमें मण्डली लेके रामतको जावै पहिले उनके मंडल पर रास करैं हैं उनकी प्रणाली के बहुत विरक्त महात्मा और गृहस्थ शिष्य

हैं, गिरराज में किलोल कुन्ड पर श्रीनारायण-दासजी जितेन्द्रिय विराजते रहे उनके शिष्य राधिकादासादिक अबभी विद्यमान हैं वृन्दावन में धर्मदासजी महा सुशील भगवत भागवत सेवा परायण विद्यमान हैं गोकुलदास गवैया वृन्दावन श्रीजी कुंज में सेवा करते गान विद्या में निपुण प्रभू आचार्य उत्सव में गीति बालब्रह्मचारी थोडी छोटी वयस में लीला अन्तर में प्राप्त भये पिसाये की कदमखन्डी में राधिकादास परम भागवत विरक्त मधुकरी वृत्ति में देह निर्वाह करै और श्री वृन्दावन में किशोरीदासादिक अनेक विरक्त गृहस्थ शिष्य हैं को पार पावै, भुलवाने की भाडी में श्री भगवानदास महात्मा दर्शनी मूरत बहुतकाल दूधही आहार कियो परम सुशील शांत बहुतकाल भजन करते भये उनके शिष्य मानदासादिक विद्यमान हैं ऐसे हरियाने देशमात्र में सब श्री घमन्ड देवजी का परिवार है और भाडिया विख्यात है।

वृन्दावन की श्यामकुटी पर माधवदास परम सुशील हरिवैष्णव सेवा परायण विद्यमान हैं।

श्री माधवदास को चरित्र नाभाजीकी छप्पय से प्रगट है।

सोदर सोभू राम के सुनो संत तिनकी कथा। संतदास सद्व्रत्त जगत छोई कर डारयो॥ महिमा महा प्रवीण भक्ति चित्त धर्म विचारो। वहुरो माधव दास भजन वल परचो दियो॥ कर योगिन सो वाद वसन पावक प्रति लीयो। परम धर्म विस्तार हितं प्रगट भये नाहिन तथा॥

श्री स्वयं भूदेवको चरित्र और उनकी प्रणाली

वूडिया सहारनपुर नगर परम पवित्र श्री यमुना किनारे विराजे तहां श्री कृष्णदत्त पन्डित और राधा नाम की उनकी पत्नी भगुवंश में होते भये उनके संतान नहीं श्री राधा और उनके पति वहुत दान तप व्रतादिक करते भये पर कोई पुत्र नहीं भयो तव खेद चिंता को प्राप्त भये वाही समय आकाश वाणी भयी कि प्रात समय गैयान के खिरक में जो पहिले वालक को दर्शन होय सो तुह्मारो वालक होयगो तव श्री राधा गैयान के खिरक में जायके गोरज माथे पर धरैं चरण छूवैं परिक्रमा करके पूछ सीस पर छुवावैं यही प्रार्थना कि मोकों वालक के दर्शन होंय और वंश चलै तव गोपालक गोपालजी प्रसन्न भये वाल रूप से खिरक में पांव का अंगूठा चूसते दर्शन देते भये और

अपने ही बालक हैं यह अपनी माता को प्रतीति करावते भये अपने बाल चरित्र से माता को अपार सुख दियो जैसे श्री यशोदाजी को बाल भाव में सुख दियो सोई आनन्द इनको प्राप्त भयो बड़े भये तब जगत उद्धार के हेत श्री मथुराजी में श्री हरि व्यासदेवजी के शिष्य भये अपनो धर्म हरि भक्तिता के विस्तार करवे को आपने संत बानो लियो जैसे श्री हरि व्यास देवजी से श्री भट्टजी ने बारह वर्ष गिरराज में तपिस्या कराय कराय के शिष्य किये तैसे ही इनसे श्री हरिव्यास देवने बारह वर्ष गिरराज की परिक्रमा कराय के शिष्य किये दिगविजय में सब दिशा जीती आप माता के पेट से प्राकृत मनुष्यों की तरह नहीं जन्में तासे स्वयं भूदेव नाम परो पंजाब देश में असंख्यात आपके शिष्य है मैया को दो पुत्र संतान चलने को देते भये कर्णी हरदेव और परसराम देवजी पहिले नैष्ठिक को श्री हरि व्यासदेव गुरू की आज्ञा से आप शिष्य करते भये, दूसरे व्याह कर के बैराग लेते भये श्री स्वयं भूदेव जी के श्री कन्हर देवजी प्रगट भये आत्मा राम आगम बात के जानने वारे भक्त मात्र के दर्शन करते ही नम्र

होजांय अपने प्रेमानन्द सुखमें डूबे रहैं समस्त जगतको तृण बराबर तुच्छ जानैं जगतको अपनो धर्म जो हरिभक्ति तासे विमुख जानके सत्यधर्म उपदेश करते भये—

योगिनसे वाद भयो अग्नि कपडा परी लेली कपडा न जरौ ऐसो अपनी महिमा प्रगट करी बूडिया सहारनपुरमें वसके हरि कथामृत से मनुष्यों को शुद्ध कर देते भये सोई नाभाजी ने कह्यौ—

बूडिये विदित कन्हरकृपाल आत्माराम आगदर्शी।
कृपा भक्ति को थंभ ब्रह्म कुल परम उजागर।
क्षमा शील गंभीर सबहि लक्षण को आगर॥
सरवस हरिजन जान हृदय अनुराग प्रकाशै।
अशनव सन सन्मान करत अति उज्जल आशय॥
सोभूराम प्रसाद ते कृपादृष्टि सब पर बसी तिनके मुख्य शिष्य परमानन्ददेवजी नारायणदेवजी तामैं पहिले परमानन्ददेवजी के शिष्य प्रशिष्य परम्परा वर्णन करैं हैं—

नागाजी को चरित्र।

उनके शिष्य श्रीस्वामी चतुरदास नागाजी इन के चरित्र परम अद्भुत हैं सोई नाभाजी ने कह्या—

श्री स्वामी चतुरो नागिन मगन रैन दिन भजन हित । सदा युक्त अनुरक्त भक्त मण्डल को पोपैं । पुर मथुरा ब्रज गांव रमत सवही को तोपैं ॥ परम धर्म दृढ करनदेव श्रीगुरु आराधे॥ मधुर वचनसुठ ठौर ठौर हरिजन सुख साधे ॥ संत महंत अनन्त जन यश विस्तारत जा सुनित ॥

ये महाराज सवेरेही श्रीगोविन्ददेव के दर्शन कर मथुरा में केशवदेवकी शृंगार आरती करैं राजभोग नन्दग्राम करके सायंकाल काम वनमें जा विराजैं ऐसे दिन रात व्यतीत करते ठौर ठौर हरिजनों को सुख देते तोषण करते रहे; एकदिन दोपहर के समय गोवर्धनमें चुटकी कर चूनकी अंगाकरी बनाई जब श्रीनाथजी यतीपुरा गिरराज में विराजमान रहे भोग लगायो तो भक्त वत्सल मनोर्थ पालक भगवान अंगाकरी पायवे आय गये ताही समय मन्दिर में भोग आयो आधी अंगाकरी हाथ में श्रीनाथजी के देखके गोस्वामीजीने पूछी कि अपूर्व वस्तु कहां से उठा लाये तव नागाजी को नाम लियो अबभी श्रीनाथजी के राज भोग में अंगा करी भोग लगैं हैं, एक समय की बात कि तीन दिन पर्यंत आप नन्दगांव में भूखे रहे भिक्षा को

न गये; नन्दलाल परम कृपाल भक्तन के रक्षपाल श्रीगीताजी के वचन प्रतिपाल करबे को कि योग क्षेमको मैं आपही वहूं हूं; दूध आप लाये और आज्ञादी कि भूखो रहनो अच्छो नहीं अन्न न खावो दूध आहारकरो और ब्रजबासियोंके घरसे लियाकरो ब्रज वासिनी जहां भीतर छिपाय के धरैंगी तुम जान जावोगे ब्रज में कौतिकका तमाशा चलैगो फिर आप दूध लेवे लगे जब से वैरागी ब्रज में दूध लूटे हैं आनन्द का उपहास होय है गोपी दूध चुरा घके भीतर धरदेंय हैं उनके परस्यादिक वाबाजी से कहिदेंय हैं कि कैसे वैरागी हो दूध नहीं लियो जाय है बड़े आनन्द को झगड़ा होय है न्याय से आधा दूध लेंय आधो उनके वाल बच्चों को छोड आवैं एक दिन आप कामबन से आते रहे सुनहरा की कदम खन्डी कि जो केवल नागाजी के ही नाम से विख्यात है ताको नाम कुंज छोकभी है हींस के पेड़ें में आपकी जटा उरझगयीं आप अति अनुराग में भरे और ही ढार पर ढरे जोने उरझाई सोई सुरझावे वही भांति खडे रहे अपनी टेक पर अडे रहे प्रसिद्ध है कि जब हरि वहरिभक्तोंमें होड परे तो भक्त की ही जीत होय है उनकी प्रतिज्ञा भगवान रखें

आप मन मोहन सोहन रूप से आयके जटाके वार लताकी डार से निर्वार करवे को विचार करवे लगे तव नागाजी महाराज युगुल रूप के आधारी विना राधा प्यारी अकेले गिरधारी सेकव संतोष पावैं विचार कियो कि जहां इनका मन भौंरा मडरावै वह गौरांग फूल हाथ आवै तव मनको अर्थ वनि आवै इकले से कैसे जीस चुपावै; जटा से हाथ लगाने न दियो काहेते कि उन श्याम की शोभा नहीं जहां राधिका रानी नहीं राधा रूपी विजुली विना श्याम घनकी शोभा नहीं तव युगुल सरकार रसिकों के प्राण आधार दोनों गौर श्याम भुजा से महाराज की जटा खोलवे लगे आहा ता समय की बहार रूप को बाजार नेत्रों के आगे खुल रह्यो चोटी खोलवे में श्याम गौर भुजा में कलह वढ रह्यो महाराज की जटा नहीं सुरझी रोम रोम उर झगयो तासुख अपार के आगे लौकिक अलौकिक सब सुख मुरझ गयो अनेक ऐसे चारित्र हैं श्री नागाजी के शिष्य मोहनदेवजी तिनके माखनदेव जी तिनके जगन्नाथदेवजी तिनके हरीदासजी उनके अमरदासजी उनके हरिदासजी तिनके जमुना

दासजी तिनके गोविन्द्दास जी तिनके घनश्याम दासजी तिनके रणछोरदासजी।

श्री रणछोरदास को चरित्र।

ये महाराज रणछोर दासजी एक वार वालापन में जो द्वारका धाम करके व्रजमें आये फिर वृज से वाहिर पांव न दियो वृन्दावन नन्दग्राम में वहुतरहे वरसाने श्री लाडिलीजी के मन्दिर में बारह वर्ष भन्डार सेवा करी सदाचार अच्छो फैलायो वीडी ऐसी अनोखी भोग लगाई कि लाडिलीजी प्रसन्न प्रसादिया भक्तभी वडाई करें अब तक सेवा चली जाय है फिर शेष आयू गहरवनमें व्यतीत करी, कथा कीर्तन के वडे रसिक श्रीमद्भागवत इष्ट चतुराई के चोज और सब भगवत वार्ता के ऐसे ज्ञाता कि मनुष्य मात्रको प्रसन्न करदेंय, गो सेवा में तो सीमा रहे, उनकी सी गौ कोई प्रतिष्ठित मन्दिर देवाले राजा बाबू के नहीं; व्रजधाम श्रीयमुनाजी रासलीला इनमें वडी नेष्ठा एक बार ज्वर में बहुत वीमार कई लंघन होगये मनमें यमुना जल पान करवेकी इच्छा उपजी ततकाल कहां से आवै यमुनाजी के बम्बाको अघाय के जल पीगये वाही

समय ज्वर विदा होगयो, एक भक्त दिलावरसिंह को फांसी से बचायो, एक स्त्री की प्रेत बाधा दूर करी साधुवों के अपराध भी सहे; इनके शिष्य श्रीलांडेलोदासजी चौवेदी कुल में जन्म बहुत काल पर्यंत एक तूंवा कमरी मात्र संग्रह से विचरे श्यामसुन्दर की वंशी से बडी प्रीति हरदम पास राखैं भूख प्यासकी सहनता में बडो अभ्यास सुनहरा की कदमखंडी के ओर पास सदा विचरे ब्रजके अंत सीमा में निकृष्ट गूजरों को उपदेश कर चोरी की बान छुडाय तिलक कंठी से भूषित कर सत धर्म सिखायो गैयान के जल पीवे को ठौर२ यतन करके सरोवर खुदवाये ब्रजबासिन ने बडे सुख पाये दूसरे रणछोरदासजी के शिष्य वृन्द्रावन दासजी कायस्थ कुलमें जन्म हर समय माला व सहस्रनाम को पाठ भजन शील ब्रजमें विचरे, मधूकरी से देह निर्वाह कियो श्रीवृषभान कुँवार के अभिमानी दीगमें बीमार सवारी पर पडके बरसाने आये; लाडिलीजी के मंदिर में वाही रात तन त्याग परिकरमें जा मिले अबभी श्रीरणछोरदासजी के शिष्य कन्हरदासजी शिष्य सर्वेश्वरदास किशोरी दास आदिक गह्वरमें भजन करैं हैं गृहस्थ चेला

बहुत भाविक भजन शील देश देश में तिनकेहैं राम प्रसाद पन्डित चिराये वाले महा साधु बृति रसिक हर समय भगवत मन नमेतत्पर दीनता के पात्र गंगा वक्श ब्राह्मण डाक्टर परम गुरू भक्त अभिमान रहित साधु सेवा में तत्पर अलवर में मुख्य कृपा पात्र हैं और भी प्रसादीलाल ब्रजवासी लाल खैराती लाल आदिक युगुल किशोर के उपासिक हैं।

बाबा रामदास काटिया को चरित्र।

श्री नागाजी की प्रणाली में श्री रामदास काठिया ब्रज विदेही महंत भये दर्शनीय स्वरूप जितेन्द्रय चारों धाम में प्रसिद्ध इनकी महिमा इन के शिष्य तारा किशोर के चरित्र से जानवे योग्य है इन तारा किशोर ने अपने गुरू को नाम उजागर कियो अब इनको भगवत भेष संतवाने को नाम संतदास हैं बंगला देश वासी सब विद्या संस्कृत अंग्रेजी आदिक में निपुण पाहिले संसारी बातों के वडे बकील रहे अब जीवों की भगवान से विकालत करवे की योग्यता पाई पहिले काठिया बाबा ने इनको स्वप्न में दर्शन दिये उपदेश कियो फिर कलत्र सहित सब कार वार छोड के बृन्दावन में आये गुरू महाराज के शरणागत होके गुरू सेवा

में मन लाये गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु गुरू महेश्वर हैं मंत्रार्थ में लिखो है ॥

श्लोक—गुर्वर्थे यस्यप्राणादि योवनं धनमेवच ।
आत्मात्मीयेषुनिर्विण्णो सशिष्यःनेतरःस्मृत ॥

अर्थ—गुरू के अर्थ जाके प्राणादि योवन धन सब औ आत्मा आत्मीय में वैराग सो चेला सच्चो है इतर नहीं सो इनने कर दिखायो वर्तमान काल में गुरू में नेष्ठा की हद्द कर दीनी मन्दिर वनवाके ठाकुरजी विराजमान किये एकाग्र चित्त से आप शृंगार सेवा प्रभू की करैं अव गुरू भाई से भेष पाय के संतदास नाम भयो व्रज विदेही महंत भगवत साधून की सेवा प्रेम से करैं हैं सव भक्ति अंग परिपूर्ण बृन्दावन में विद्यमान हैं और भी काठिया बाबा की शिष्य वैष्णवदास आदिक हैं ।

पन्डित किशोर दास को चरित्र ।

इनसे पहिले काठिया वावा से पीछे व्रज विदेही महंत पंडित किशोरदास जी रहे बालापन से साधु सेवा में वडी प्रीति कथा भक्त माल श्री भागवत बांचै वैष्णवों की सेवा करैं चारों तीर्थ प्रयाग हरिद्वार उज्जयन गोदावरी के चढाव कुम्भ पर महीना पहिले जावैं और हरीहर वोलके भूखे मात्र को

भोजन देंय बडे परमार्थी अब भी गोकुलदास इनके साधक जमायत चलावें औ रामगुलेला पर इनके शिष्य बिहारीदास राधाचरणदास आदिक और भी भजन करें हैं।

ब्रज के कोकिला बन में नागानन्दी खुशाल-दासादिक बडे बडे महंत परमार्थी भजनानन्द भये दही ठाकुरजीके भोगको या स्थानमें अति उत्तम लगै है नन्दग्रामके मोतीकुण्ड पर बल्देवदास जी नागानंदी सुशील महात्मा रहे आज नोखमें सुखरामदास भये बिहारीदास पंडित बालब्रह्मचारी वृन्दावन में बिराजें सब संतोंको सुख साजें विरक्त जहां तहां से भिक्षा कर देह निर्बाह करें अभिमान रहित भजन करें श्री नागाजी के ही परिकर में है बहुत परिकर श्री नागाजी को कौन पार पावै गोपीदास परम बिरक्त कथाकीर्तन के अधिकारी हैं

अब श्री स्वयंभूदेवजी की दूसरी शाखा वर्णन करे हैं इनके शिष्य कर्णहरदेवजी तिनके नारायण देवजी तिनके श्रीहरिदेवजी तिनके श्याम दामोदरजी तिनके श्रुतदेवजी तिनके सहजरामदेवजी तिनके श्रीवृन्दावनदेवजी तिनके रामदेवजी तिनके धर्मदेवजी तिनके श्रीसेवादासजी तिनके श्रीगो-

पालदासजी ये मेरे स्वामी इनको जीवनचरित्र आनन्द वनमाला ग्रन्थ में पण्डित केशवदेव शर्मा ने ११ श्लोक से वर्णन कियो है मैं भी अपनी बुद्धि अनुसार लिखूं हूं महाराज को गुरू स्थान जूनागढ गोदा वाव में है बालापन में चार धाम कर बृंदावन में बसे कामवन में गोपालजी को मन्दिर तहांके अधिष्ठाता श्रीपण्डित रघुवरदासजी परसराम द्वारके तिनसे श्रीभागवतादि ग्रंथ पढ कुछ दिन सब वस्त्र भी छोडदिये कोपीन मात्र का संग्रह पोथी श्रीमद्भागवतकी बगल में गंगा किनारे पहुंचे तहां एक कोपीन मात्र पहिरे परमहंस आये भागवत पाट सुनवे को मनलागे ये पाट करवे लगे परमहंसजी बोले कि गोपालजी तो माखन मिश्री भोग लगावें हैं इतने में एक बूढी माई माखन मिश्री लाई श्रीमद्भागवत को भोग लगाकर दोनों ने पाई अमल दो दिन तक छायो तासे जान्यों कि साक्षात गंगा जी ने दिव्य वस्तु देकर दरस दिखायो फिर एक समय गंगाजी गये एक साधू ने एक गरीव ब्राह्मण पंडित की सप्ताह कथा बैठारी जब कथा सप्ताह समाप्त भई कथाकी भेट पूजा छीनके साधू ने पंडितसे जोरावरी कर डारी गंगाजी ने अति कोप

कियो ऐसी उमड़ी कि साधूके स्थान को नाम न रहे यह प्रण कियो तब महाराज ने गंगाजी की स्तुति करी भागवत पाट सुनायवे के मानतामानी तब गंगाजी ने स्वप्न दियो ब्राह्मण को साधूसे भेट पूजा दिवा कर मेरी आज्ञारूपी सुधारस पियो तब ब्राह्मण की भेट दिवाई पाठ सात दिन सुनायो गंगाजी प्रसन्न होके अपने ठिकाने आई सब को हियो हुलसायो फिर सब महात्माओं ने सम्मतिदी कि तुम एक जगह बैठके कथा कीर्त्तन किया करो बड़ोंकी रीति पर ढरो फिर हटकर वृन्दावन बसे पहिले जो अकस्मात कोई द्रव्य देदेतो तौ दाऊजी में जाकर हंडा कर सब पंडा जिवाय देते दाऊजी ने स्वप्न दियो कि वृन्दावन में वैष्णव सेवा करो यहां आयवे को परिश्रम उठाय धरो एकदिन श्रीजी के बगीचा में विराजे भगवत प्रेरो एक भक्तआयो दो रुपया भेट लायो आपके हृदय में आई कि यहां कोई वैष्णव आचार्य उत्सव नहीं जानै ॥

मंत्रञ्च गोपयेत् धीमान् आचार्य च प्रकाशयेत् ।

अर्थ—मंत्रको बुद्धिमान छिपावे आचार्य को प्रकाश करे या न्याय ते आचार्य उत्सव प्रगट होय सम्प्रदाय रस सब वैष्णव आस्वादन करें उतनेमात्र

से उत्सव आरंभ कियो असंख्यात द्रव्य साल साल में खर्च होबे लगी श्रीनिम्बार्क भगवानकी जन्म बधाई प्राचीन अर्वाचिन महात्माओंकी गाई संचय करीं उत्सव को क्रम प्रातकाल से सप्ताह भागवत के पाठ मध्यान्ह ब्राह्मण बैष्णव भोजन तीसरे पहर स्वामी बाहिर सिंहासन पर बिराजें कथा बधाई समाज सायंकाल पर्यंत फिर अर्द्धरात तक रास होय पूर्णमासी कार्तिक सुदी को व्रत ढांढी ढांढा सायंकाल प्रागट स्तुति आरती शाक अहार की पंगति पडबाकी दिन बडी धूमधाम गाजे बाजे से सवारी मध्य बृन्दाबन में निकरे द्वौज को रासकी दानलीला ता पाछे असंख्यात बैष्णव ब्राह्मणों का भोजन बहुत उत्सव प्रकाश पायो अब भी उनकी कृपा से वही क्रम से उत्सव होय है रासके स्वरूपों को साक्षात जानके खडे खडे रास देखनो स्तुति करनो उच्छिष्ट लेनो साष्टांग दन्डवत यह नियमसे करते बिशेष करके करहला वारे बिहारीलालजी की मन्डली को रास होतो या रासलीलाकी परपाटी प्रेम पूर्वक जगत में फैलायबेको बिहारीलाल अवतार भये उनके बेटा गोर्धन राधाकृष्ण की समान भी अब रास दुर्लभ है उत्सव अन्त में तूबी

लंगोटी ही मात्र बाकी रहै एक साल आप ज्वर में पडे दोसौ पन्डित पाठ में बैठगये जब स्मृति आई चित्त पर चिन्ता छाई इनको पूजा की द्रव्य कहां से आवै श्रीप्रियाजीने स्वप्न में दरशन देके आश्वासन कियो मनको ढाढस दियो पाठ समाप्तीपर परदेशी एक साहूकार आयो सब पन्डित वैष्णवोंको लाल बनात उढाकर लाल लाल कर मानों होरी के गुलाल को रंग जमायो मुहरोंकी दक्षिणा ऐसी बटी कि मानों हेम विन्दूरूप स्वांति जल बृष्टि से याचक चातिका वली ने सुख पायो कथा कीर्तन से कोई दिन खाली न जाय, वैष्णव सेवा के मञ्जीठ रंग से हृदय रंगो भयो संत चरणामृत के मांट भरे धरे रहैं अकामी सर्व कामी, मोक्ष कामी; सबको वही औषधि दे देवें श्रीहंस सनकादि नारद निम्बार्क इनकी मूर्ति जा मन्दिरमें प्रतिष्ठत हैं सो सब आपकी सम्मति से है इनके शिष्य मंत्रके व साधक अनेक हैं उनके चरित्र ग्रन्थ समाप्ति में लिखे जांयगे "बंगलादेश बरदवान में बडा नामी स्थान है हाथी घोडा सब वैभव भगवत भागवत सेवा खरियां उतार का कम ठान है अद्भुत ठाठ है जब तक साधू की, इच्छा विराजो भोजन वस्त्र से सुख

साजो जवाब नहीं श्रीमधुसूदन शरणदेवजी महन्त बडे सदाचारी प्रवीन वैष्णव रीति उरमें धारी वैभव पायके मद नहीं धनादिक से अनेक जुगुप्सित बातें प्रगट होंय हैं पर वे कोई व्यसन में ग्रस्त नहीं हरि-भजन साधू सेवा से काम पर उपकार; दया धर्म में मनको विशेष विश्राम; अपनी आयु या रीति से व्यतीति करी ।

पण्डित श्रीकिशोरदासको चरित्र ।

वंशीवट वृन्दाबन में पण्डित किशोरदासजी इनके शरीर से बहुत उपकार वैष्णवों को सुख अपार भयो सम्प्रदायी ग्रन्थ लुप्त प्राय कोई को प्राप्त नहीं होंय उनको बहुत यतन से ढूंढके शोध के मुद्रित कराये कोई२ भाषा अनुवाद भी करके सरल कर दिये जिन ग्रन्थों का निम्बार्की वैष्णव नामभी न जानते रहे उन ग्रन्थों का सुख पूर्वक अवलोकन मिलगयो सिद्धांत तत्वको जानके अपने आचार्य के मत में पुष्ट भये ऐसे सम्प्रदाय उन्नति के बहुत काम किये और विद्यमान होकर कररहे हैं

यहां से द्वारा निर्णय नहीं ।

मिर्जापुर में निम्बार्की स्थान तहां बडे रसिक

प्राचीन महात्मा कृष्णदासजी भये माधुर्य लहरी श्रीराधाकृष्णकी नित्य नैमित्त लीला उत्सवों को एक वडो ग्रन्थ पद दोहा से जटित बनायो भावना करवे को परम सुखदाई आनन्द को दाता उनके चित्तकी सरसाई और प्रेम परपाटी में हृदयकी योग्यता वा ग्रन्थ के देखवे से ही प्राय समझी जाय है

श्रीजगन्नाथ क्षेत्र में श्यामदुखी नाम के महात्मा का प्रसिद्ध स्थान है निम्बार्क सम्प्रदाय के उनकी श्रीक्षेत्र में वडी प्रसिद्धता कोई कारण की लीलाभि जगन्नाथजी साल साल में दुखी पडे हैं उनके स्थान से औपधि आवैं और उनकी औषध जगन्नाथजी हैं भगवत भागवतोंके हिये की मर्म वात वेई जानें दूसरे की का सामर्थ है वा स्थान के शिष्य प्रशिष्य गोकुलदास आदिक वृन्दावन में भी भजन करें हैं।

पानीघाट वृन्दावन में कल्यानदासजी पण्डित अपने कर्म धर्म में सावधान साधू सेवाकी मनमें प्रवृति भगवत तत्व अनुसन्धान में चित्तकी लगन अब भी विद्यमान हैं सोभूरामदेव के परिकरमें हैं।

प्रियाशरणजी छोटी वयस मोटी चर्या वैराग्यवान हरिके रस ग्रन्थों का वोध विशेष गिरराज की तरहटी में विचरैं प्रिया प्रीतमकी भावना में दिन

रात विलास पावैं, बल्देवदास परमहंस स्पष्ट वक्ता दुनियांदारी की लगी लिपटी से प्रयोजन नहीं, कबहूं वृन्दावन कबहू देशान्तर में भी विचरैं श्यामाश्याम के अनोखे भक्त हैं।

ब्रजके गिडोय गांवमें श्रीमाधवदासजी महात्मा अष्टादशात्तर मंत्र के महा अनुष्ठानी प्रसिद्ध भये उनके शिष्य प्रियादासजी वही परिपाटी पर चलें दूसरे भागीरथदासजी महान्साधू भजनानन्द वैष्णव सेवी भये उनकी परम्परा में केशवदेव बावरे विद्यमान हैं उनको बावरपनो भी भगवत सम्बंधी हैं भागवत कथा को श्रुत बहुत है अनेक भावों के अर्थ हृदय में विलास करैं हैं।

गिरिराजकी पूछरी पर पूर्णदासजी ने साधू सेवा को भलो रंग जमायो, पथवारी पर पमेश्वरीदासने संत आराधना में वडो नाम पायो स्थान को चार धाममें विख्यात करदियो संकेतमें राधिकादासजीने भी निर्बल होके वैष्णव सेवा करी मेरे या शरीर के पिता रहे गिरिराज के चकलेश्वर पर मौनीजी दूध आहारी बडे विख्यात भये वैष्णव सेवा में भी प्रीति रही, कैमारी बन बृन्दावन के स्थान में श्रीरणछोरदास आदिक वडे बडे महात्म।

नागा संत सेवी भये अब भी हरदेव दास आदिक विद्यमान है।

श्री श्यामचरणदास को चरित्र

श्याम चरणदास जी ये महात्मा रास लीला के परम उपासिक भये दतिया वाले राजा भवानीसिंह पर ऐसी कृपा करी कि वे वैष्णवों को बडी प्रीति से सेवा करैं रामलीला रासलीला की मन्डली सर्व काल दतिया में रहे साधू के औगुण न देखके सदा सत्कार कियो जब तक जिये निम्वार्क भगवान को उत्सव एक महीना रास विहारीलाल रासधारी को अद्भुत दतिया वाली कुंज में प्रति साल भयो कियो देश देश में प्रसिद्ध होगयी राजा रास खडे खडे दर्शन करें स्वरूपों को राजसी अभिमान छोड कन्धे पर चढावैं सख्य भाव राखैं प्रसाद सेवन करती समय गीत गोविन्द की अष्टपदी को कीर्तन सुनैं।

पन्डित नारायणदास जी को चरित्र

पन्डित नारायणदासजी ये महान पन्डित सब शास्त्र के ज्ञाता तेजस्वी होते भये इनके शिष्य सन कादिक दास ब्रह्मचारी विद्यमान हैं।

श्री रामचन्द्रजी को चरित्र।

सुधर्माध्व वोध गृन्थ के कर्ता श्री रामचन्द्रजी स्वयं भूदेव के वंशमें वडे रहस्य के जानवे वारे भये कोई विषय भक्ति सम्बन्धी एसो नहीं जो या ग्रन्थ में न होय पुराण तन्त्र संहिता आदिकों से खोज करके प्रमाण निकाले निम्बार्क सम्प्रदाय के अनेक ग्रन्थों के नाम या ग्रन्थ से जाने जाय हैं या ग्रंथ के देखवे से ही इनकी योग्यता हृदय में आजाय हैं श्री स्वयं भूदेवजी के वंश के श्री छवीलेलाल दिक बृन्दावन में विद्यमान हैं।

गंगादास जी गिरराज मानसी गंगापर रहै तीन काल जाडे गरमी वर्षा में उघारे अंग कटि वस्त्र मात्र संग्रह गंगाजी गिरराज में परम विश्वास शरीर में रोग घाव व्रण आदि जो होय मानसी गंगा के जल से ही अच्छे कर लेंय सवको परमार्थ को उपदेश भूमि शय्या; पीपर वारे में बूढे आत्मा राम कथा कीर्तन के नियमी यथा शक्ति पर उपकार गिरा से गोविन्द की ध्वनि लगी रहे वा गांव में भागवती दास पुजारी सव गुण सम्पन्न अब भी हैं।

रामचन्द्रदास जी हरमनिय वारे भगवत उत्सवों में गायवे वजायवे को वडो उत्साह तासे हर्मनियां सीखो सोभी केवल हर सम्बन्धी काम में बजावै कन्ठ सुरीलो महा वाणी युगलश तक के पद गावैं कोई को अपराध से जो चित्त पर कवहू कठोरता आजाय तो तत्काल दया की गरमी से पिघल जाय जैसे माखन अवभी विद्यमान हैं।

गोपालदास गवैया तथा नन्दलाल दास फल अहारी ये महात्मा वडे रसिक सर्व काल बृन्दावन वास करैं आनन्द कन्द श्री नंद नंदन वृषभान नंद नी के प्रेममें पगे माया की निशासेजगे उत्सव समाज रास विलास के उपासी जगत में जन्म पाये को फल लूट है॥ सरस्वती नाला मथुरा में रामकृष्ण दास वाहिर भीतर दोनों ओरी से शुद्ध भगवत सेवा में प्रीति अवभी विद्यमान हैं।

विहारीदासजी अरुण घटा वारे ये अद्भुत रहनी के महात्मा सबमें रहें और सब से न्यारे भगवत सम्बन्ध विना वातें सुनैं न कहैं वाल पन से कथा कीर्तन को नियम मरण पर्यन्त निर्वह्यो निष्किंचन शरीर से और मन भी निर्वासना वृद्धता में सब कृत्य आपही करलेंय॥ दुर्गादत्तजी पंडित भागवती

बृन्दावन में सम्प्रदायी प्रसिद्ध भये और भी कोला देवा छुईख दाना छतीसगढ आदिक देश देश में निम्बार्की महात्मा बहुत हैं कौन पार पावें श्री वृज बृन्दावन में ही इतने है कि गणना दुर्लभ है भरे समुद्र जल से चिडिया अपनी चोंच भरही तो भरेगी ।

लक्ष्मी बाई युवा अवस्था में एक एक धाम द्वारिका जगन्नाथ रामेश्वर बद्रीनाथ में तीन तीन बार पांव से चल के गईं फिर कुछ काल अवध में रहके शेष आयू श्री वृन्दावन में बास कियो महा विरक्त चुटकी भिक्षा से देह निर्वाह करैं वृद्ध शरीर अबभी विद्यमान हैं ।

अब अपने स्वामी श्री गोपालदास जी के शिष्यों के चरित्र वर्णन करूं हूं ।

प्रथम कारे कृष्णदासजी जब से गुरू महाराज के शरण आये सिवाय व्रज वृंदावन के और तीर्थ और धाम और दर्शन न जाने सब साधन साध्य श्री वृंदाबन समझ के यहां ही रहे रसिक महात्मावों की बाणी बहुत कंठ दिन रात सोई पाठ सोई मनन निष्किंचन भिक्षा अन्न से देह निर्वाह बहुत काल याही रीति से वृंदाबन बास कियो एक साल

कुंवार महीना में नन्दगांव की पाडर खन्डसिं लता के मोती जो पहिले श्रीकृष्ण महाराज ने यशोदा जी के आंगनमें बोये और तत्काल वृक्ष होके मोतिन के गुच्छा लगे और गोपिन ने हार बनाके पहिरे यह सूरसागरमें कथा है अब भी लतामें मोती लगें हैं सो ये और दो साधू मिलके लाये राधा वल्लभ वांकेविहारी के माला हार पहुंची मुकट बनाये श्रीराधावल्लभ में तौ धारण होगये बांकेविहारी में गरीब साधुओं की कोईने सुनी नहीं हरि प्रेमके भूखे सन्तों की तुलसीदल सीतल जल पत्ता फल से ही परम संतुष्ट होंय ऐसी माया फैलाई कि शरद की पूर्णमासी को ऐसो झगडो फैलो कि भण्डार न खुल्यो भूषण न निकले वेई लताके मोतिन के मुकुटादिक भूषण धारण भये देश देश के दर्शनीयों को सच्चे से प्रतीत होंय एक समय मानसरोवरके दर्शन परिक्रमा को गये रस्तामें श्रीयमुनाजी ने ऐसे अंगीकार किये कि फेर पता न चला दर्शन न मिले ।

श्यामदासजी ।

गुरू महाराज से पीछे बहुत दिन उत्सव कथा

यथायोग्य वर्तमान रखो बडे गम्भीर सहिष्णु भगवत सेवा में निपुण अब अंतर्ध्यान भये।

किशोरी दास जी।

श्रवण कीर्तन के बडे रसिक शास्त्र के मर्म जानवे की सामर्थ भजन ही आधार अब अप्रगट लीला में प्राप्त भये।

हरीदास सुदामा।

ये सांचे सुदामा निष्किंचन बैष्णव भोजन मेंबडी प्रीति मरण समय कोई भक्त कफन काठी दाह लकडी को द्रव्य देगयो आप बोले कि या द्रव्य से तो बैष्णव भोजन करावो और आवै सो दाह मेंलगावो कथा श्रवण कीर्तन के बडे नियमी वृन्दा वनही जीवन मूल सब साधन को फल रूपजान के और तीर्थ और धाम से काम नराख्यो थावत शरीरकी सामर्थ नित्यबृन्दावन की परिक्रमा करी भगवतविग्रह सेवा में बडी प्रीति सेवा में प्रभूने अनुग्रह कर के अनेक परिचय भीदिये ब्राह्मण कुल ब्रजमें जन्म संतोषकी मूर्ति॥

पंडित सुदर्शन दासजी।

ये बहुत काल अयोध्या जी में रहे एक बारलीला अनुकरण में इनको श्री जनक बनाय दिये तब

आपने विचार कियो कि अब अयोध्या को जल भी पीनो उचित नहीं वृन्दावन आये फिर व्रजछोड के एक पैडन गये व्रज सीमां से वाहिर प्रयोजन नराखो धाम मे शरीर कोन्यास करदियो बडे रसिक वडे चतुर सब रहस्य शास्त्र के ज्ञाता ग्रन्थभी सम्प्रदाई रीति से वहुत वनाये वृन्दावन की महिमा निकुंजदर्पण आदिक ग्रन्थों से वैष्णवोंने वहुत सुख पाये वृद्ध शरीर अवभी विद्यमान है ये महाराजमें दृढ गुरू भावकरते रहे शिष्यमनोहर दासके रहे

माधवदास जी।

यद्यपि ये शिष्य टोपी वारे कल्याण दास जी के हैं पर महाराज ही से भक्ति के ग्रन्थ पढे भजन भावना श्रवण कीर्तन सीखे उनको ही परम गुरू मानते रहे वडे प्रेमी वैष्णव सेवी रास के रसिक दिन रात भगवत वार्ता भगवत सेवा में वीते वहुत काल से वन में वसवे की इच्छा तासे वृन्दावन की परिक्रमा में वन विहार नाम के स्थान में ऐसे बसे कि फिर वस्ती ओरी न झांके गुरू स्थान की महन्ताई को न ताके अवभी विद्यमान हैं।

श्री तपस्वीजी

तपस्वी जी वडे पंडित पूर्व देश के वासी श्रीवृन्दा

वन में आयके एक रस जीवन पर्यंत बृन्दावन बास कियौ बडे गम्भीर हरि सेवा में प्रीत असंख्यात ब्राह्मणों को श्री भागवत विद्या का दान दिया प्राचीन पुरषों की चालपर चले उनके कृपा पात्र शिष्य पण्डित दुलारे लाल जी अवभी वही परपाटी पर चलैं सरल चित्त शांत छल छिद्र से दूर सेकडों को बिद्यादान देवैं रसिकों की वाणी में वडी प्रीत लाडिली लाल की रस लीला में चित्त को वडो हुलास घरबार से नातो छोड बृन्दावन में वसे गोपाल जी के सेवा में चित्त की लगन अवभी विद्यमान हैं ।

पंडित मयाराम ।

पंडित मयाराम जी महानुभाव छल कपट जाने नहीं भजन शील सदा मधुपुरी वासकर विद्या को दान दियो वहुतन को पंडित कर दिये ।

गोपाली बाई ।

गोपाली बाई गुरू महाराज ने पूछी कि तुमको बस्त्र भूषण पहरनो अच्छो नहीं लगे तव उत्तर दियो कि जब सूकरी कूकरी होयँगी तव कहां से पहिरेंगी. तब गुरू जी ने प्रसन्न होके भेष दियो सदा गिरराज की तरहटी में बास भजन कर बांके

बिहारी की आस राखी तन आछादन मात्र वस्त्र उदर भरण मात्र अन्न जग प्रपंच से न्यारी असद आलाप से दुखारी दीनता के सुख में मगन मान प्रतिष्ठा में मन न दियो मनही मन में प्रेम रस पियो बिहारी जी ने दुखादिके समय में कृपा करके परचय भी दिये अबभी विद्यमान हैं। और भी नारायण दास आदिक शिष्य विद्यमान हैं।

यह अधम शरीर बारो हंसदास भी उन्ही श्री गोपाल दासजी के दासन में कलंक रूप है मेरे गुरु देव की महिमा इतने ही मात्र में सूचन है कि मो समान खल कुटिल चल चित भी संत कहायो रत्नांञ्जलि की भाषा आरंभ में मेरी आजन्म की कुटिलता लिखी है बार बार लिखनो कलम कागज को दुख देनो अपवित्र करनो है अपनी अयोग्यता से बाहिर जो काम करै सो ढिठाई कहावै सो मैंने अयोग्य होके पहिले "रहस्य प्रकाशिका" जामें श्री राम कृष्ण अवतार प्रियोजन अर्चा मूर्ति युक्ति उपपत्ति और प्रमाण भगवत सम्बंधी गंगा तुलसी आदि की महिमा राम कृष्ण चरित्र इत्यादि को एक ग्रंथ मुद्रित करायो दूसरी ढिटाई आचार्य चरण में करी कि दश श्लोकी श्री निम्बार्क भगवान

की तापर श्री हरि व्यासदेव की रत्नांजलि टीका ताकी भाषा कांति प्रकाशिका करी फिर अपनी स्वामिनी श्रीराधा रानीकी महिमा की राधारहस्य प्रकाशिका ग्रंथ मुद्रित करायो तहांभी ढिठाई चलगई सब जगह ढिठाई तौं संतो मे भी होनी चाहिये जो वस्तु जापै होय सोई सबको परोसै कालीने भगवान पर्यन्त को भी बिषही दियो अमृत कहां से लावै पर बडे त्रिकालज्ञ महात्मा जो भगवत चरित्र गाय वे में दिगगज समान वेभी संत चरित्र गायवे में शक्‍मान भये सोई कह्यो गाऊं राम कृष्ण नहीं पाऊं भक्तदावको ॥ बिधहरि हरकवि कोविदवानी॥ कहत साधु महिमा सकुचानी ॥ या वर्तमान काल में मुख्य भक्त माल श्रीनाभा गोस्वामी कृत प्रचलित है उनकी हरि गुरू संत कृपासे दिव्य दृष्टि हृदय की होगयी यद्यपि श्री भागवत महा भारत वाल्मी की पुराणादिक में जहां भगवत चरित्र होय सब भक्तमालही है पर अन्य विषय अनेक प्रसंग के मिलाव से मुख्य नहीं कहे जाय श्रीनाभा गोस्वामी ही की मुख्य भक्तमाल नाम वारी कही जायहै केवल भक्त चरित्र ही विषय है उनके अनुसार श्री प्रिया दासजी तुलसी रामजी पडोना वाले राजा

ज्वाला प्रशाद श्रीराधाचरण गोस्वामी आदिक महात्मा अपनी अपनीरुचि से कवित्त वार्तादि में भक्तों को यश गावेत भये मेरे कोई वल पन्डिताई कविताई चतुराई हृदय के प्रकाश आदिको कुछ नहीं कि चार सम्प्रदाय के वैष्णवों के चरित्रमें अद्भुत पनो दिखाऊं तासे विचार कियो कि गौके चारस्तनमें जो दूध सोई एकमें चारोस्तनमें चारोकोर से आजाय है तासे निंबार्क सम्प्रदाय मात्र भक्त वैष्णवों कोही चरित्र गाऊं तौभी मैं कैसे पार पाऊं सात द्वीप नवखन्ड पर्वत लोका लोक चौदह भुवन वैकुन्ठ गौलोक में कहां वैष्णव निम्बार्क की नहीं है कैसे जाने जाय और गाये जाय तासे निरास होवै ठो कि यहां सो ढिठाई न चलैगी तव श्रीमान पंडित केशवेदवजी और अनेक भक्तों ने सम्मति दीनी कि जो भक्तमालमें लिखें है और जो देखे सुने हैं उतने मात्र ही निम्वार्कियों के सूक्ष्म चरित्र और आद्याचार्यों की नाम गणना होजाय तौ जैसे वृक्षके जड में जल देवेसे सब डारी पत्तापल्लव शुद्धहरेहोजांय तैसे सब संतोष मान लेंयगे उनकी प्रेरणा से कुछ देखे सुने महात्माओंके नाम चरित्र आचार्य परम्परा अपनी बुद्धि अनुसार वर्णन करी कोई महात्मा

संत भक्तनसमुझें किन्यू नजान के या ईर्षाद्वेषसें हमा रे नाम चरित्रन लिखे चार सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त मात्र में जो भेद बुद्धि करै सो महा अपराधी यह मेरे गुरूकी शिक्षा है और साधू के भले बुरे पहि- चानेवे को जो अभिमान करैसो बालकोंके हंसवे योग है सोई कह्यो॥ जो कोई कहै साधु हमचीन्हा तुलसी हाथ कानपर दीना सालिगराम के विग्रह छोटे बडे सब भगवान हैं बृज बृन्दावन मेंही इत्ने गुप्त प्रगट निम्बार्की हैं कि मैं अनेक जन्म में पारन पाऊं अमृत मीठो अच्छो सब तरह से सुखदाई होय है पर अपने पेट परमाण ही तौ सब पावैंगे तासे जो कुछ संत आचार्य नामावली बनगई सब अप राध क्षमाकर के सज्जन बाल विनय से प्रसन्न हो जांय द्वारा को उलट फेर भूलसे होगयो तौ मूल निम्बार्क भगवान हैं ऐसे जान के क्षमा करैं।

इतिश्री हंसदास कृत निम्बार्कप्रभा समाप्त भई

बरसाना बिलासगढ स्थान

कुंवार वदी पडवा सं० १९७८ वि०

श्री निम्बार्क प्रभा

॥ शुद्ध अशुद्ध का पत्र ॥

पांक्ति	संस्कृत अशुद्ध	संस्कृत शुद्ध	भाषा अशुद्ध	भाषा शुद्ध
८			मैंहूं कियो	मैंहूं करी
२			से	में
१४	सराव	सएव		
१२			रंगदेवी	रंगदेवी
१९			शान्तादिक	शान्तादि
२१	ङ्गवतु	ङ्गवत		
९			ससग	संसर्ग
३			होजाके	होजावो
१४			श्रय	श्रम
१७	क्षतियों	क्षत्रियों		
१२	वैष्णवो	वैष्णवं		
१	श्रयश्रय	श्रयाश्रय		
१८	कापयज	कायज		
१८	मयः	भयः		
८	भक्त्येच्छया	भक्तेच्छयो		
२१	गीत	गत		
१	मतुसर	मनुसर		
१८			स्वमी	श्रीस्वामी
१०			भगुवंश	भृगुवंश
१७			निम्बग्राममें स्थानहै जगन्नाथदासजी अब भी सेवा करैं हैं	

१२३ ५ साधु साधु